RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ...सच

माही की गूंज

प्रेरणा स्रोत
स्व. श्री यशवंतजी घोड़ावत

Email-mahikigunj@gmail.com

वर्ष-02, अंक - 29 (साप्ताहिक) खवासा, गुरुवार 23 अप्रैल 2020 पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

दुनिया में सबसे लोकप्रिय पीएम मोदी

कोरोना से जंग में निकले सबसे आगे, ट्रंप छूटे पीछे

नई दिल्ली, एजेंसी। कोरोना वायरस महासंकट में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता आसमान पर पहुंच गई है। दुनिया भर के नेताओं को पछाड़ते हुए मोदी पहले पायदान पर पहुंच गए हैं। एक हालिया सर्वे में पीएम मोदी की लोकप्रियता 68 प्रतिशत बताई गई जबकि ट्रंप की लोकप्रियता 3 प्रतिशत गिर गई है। अमेरिका की ग्लोबल डेटा इंटेलिजेंस कंपनी मॉर्निंग कनसल्ट पॉलिटिकल इंटेलिजेंस के मुताबिक 14 अप्रैल को पीएम मोदी की रेटिंग 68 प्रतिशत बताई गई है जो कि साल की शुरुआत में 62 प्रतिशत थी। पीएम मोदी की रेटिंग में सुधार की वजह कोरोना वायरस से निपटने को लेकर उनकी तैयारी है। उन्होंने 25 मार्च को देश में लॉकडाउन की घोषणा की थी जिसे 14 अप्रैल को 19 दिनों के लिए बढ़ा दिया गया। वहीं, उन्होंने वैश्विक नेताओं को महामारी से निपटने में एकजुट करने की भी कोशिश की। सार्क देशों की वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये बैठक हो या फिर जी20 देशों की बैठक कराने के लिए किया जाने वाला पहल।इन सभी वजहों ने ही मोदी की लोकप्रियता में इजाफा किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने जरूरी दवाइयों के निर्यात से प्रतिबंध हटाते हुए मदद की पहल की है जिसे दुनियाभर के देशों ने स्वीकारा भी है।

शोपियां में सुरक्षाबलों के साथ मुठभेड़ में चार आतंकवादी ढेर

श्रीनगर, एजेंसी। जम्मू-कश्मीर के शोपियां जिले में बुधवार सुबह सुरक्षा बलों के संयुक्त घेराबंदी एवं तलाश अभियान के दौरान हुई मुठभेड़ में चार आतंकवादी मारे गए। एक सैन्य अधिकारी ने बताया कि आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में खुफिया जानकारी मिलने पर जम्मू-कश्मीर पुलिस के विशेष अभियान समूह, सेना और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवानों ने शोपियां के मलहूरा इलाके में मंगलवार रात संयुक्त घेराबंदी एवं तलाश अभियान चलाया। सुरक्षा बल के जवान जब एक विशेष क्षेत्र की ओर बढ़ रहे थे तो वहां छिपे आतंकवादियों ने स्वचालित हथियारों से उन पर गोलीबारी की।

अधिकारी ने बताया कि सुरक्षा बलों ने जवाबी कार्रवाई की जिसके बाद मुठभेड़ शुरू हो गयी। उन्होंने बताया कि मुठभेड़ के दौरान दो आतंकवादी तड़के ही मारे गये जबकि दो अन्य की मौत बाद में हुई। अतिरिक्त सुरक्षा बल मुठभेड़ स्थल पर पहुंच गये हैं। इलाके के इर्द गिर्द और आस पास के गांवों में घेराबंदी कर दी गयी है। अंतिम रिपोर्ट मिलने तक सुरक्षा बलों का अभियान जारी था।

डॉक्टरों, पैरामेडिक कर्मियों की सुरक्षा के लिए सरकार लाएगी सख्त अध्यादेश

नई दिल्ली, एजेंसी । कोविड 19 की वैश्विक महामारी से निपटने के लिए देशव्यापी अभियान में डॉक्टरों एवं पैरामेडिक कर्मचारियों पर हमलों की बढ़ रहीं घटनाओं पर रोक लगाने के लिए सरकार ने एक सख्त अध्यादेश लाने का फैसला किया है जिसके तहत दोषियों को सात साल तक की कैद एवं सात लाख रुपए तक के जुर्माने की सजा का प्रावधान होगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आज यहां केन्द्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में यह निर्णय लिया गया।

बैठक के बाद सूचना एवं प्रसारण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सरकार महामारी रोग अधिनियम 1897 में संशोधन के लिए एक अध्यादेश लायेगी जिसमें डॉक्टरों एवं चिकित्सा कर्मियों पर हिंसक हमले को संज्ञेय एवं गैर जमानती अपराध बनाया जाएगा।

जावडेकर ने कहा कि अध्यादेश में डॉक्टरों एवं चिकित्सा कर्मियों पर होने वाले हमले की दशा में पांच माह से लेकर पांच साल तक के कारावास एवं 50 हजार रुपये से लेकर पांच लाख रुपए के जुर्माने की सजा तथा जघन्य हमले की दशा में सात साल तक के कारावास एवं सात लाख रुपए तक के जुर्माने की सजा का प्रावधान किया जाएगा। डॉक्टरों एवं चिकित्सा कर्मियों के वाहन, क्लीनिक आदि संपत्ति के नुकसान की दशा में उक्त क्षतिग्रस्त संपत्ति के बाजार मूल्य के दोगुने के बराबर राशि दोषियों से वसूली जाएगी और क्षतिपूर्ति की जाएगी।

उन्होंने कहा कि अध्यादेश से डॉक्टरों एवं स्वास्थ्य सेवाओं में लगे लोगों की निजी एवं पेशेवराना सुरक्षा सुनिश्चित हो सकेगी।

कोरोना की जांच में चीनी रैपिड टेस्ट किट फेल

आइसीएमआर ने 2 दिनों के लिए टेस्टिंग पर लगाई रोक

नई दिल्ली, एजेंसी। गुणवत्ता के दावों के साथ चीन से आई रैपिड टेस्ट किट पहली नजर में असफल होती दिख रही है। इस किट के रिजल्ट में 6 फीसदी से 71 फीसदी तक अंतर आ रहा है। किट की गुणवत्ता की जांच के लिए आइसीएमआर ने अपने आठ संस्थानों को फील्ड में भेजने का फैसला किया है। वैसे खून में एंटीबॉडी पर आधारित इस किट का इस्तेमाल कोरोना मरीज का पता लगाने के बजाय सर्विलांस के लिए किया जा रहा है, लेकिन इतने अंतर के बाद सर्विलांस में भी गलत नतीजे निकलने की आशंका बढ़ गई है। पिछले हफ्ते ही चीन से 6.5 लाख रैपिड टेस्टिंग किट मंगाए गए थे।

आइसीएमआर के डॉक्टर रमन गंगाखेड़कर के अनुसार रैपिड टेस्ट में एक राज्य में कोरोना की पहचान कम होने की शिकायत मिलने के बाद तीन अन्य राज्यों से भी रिपोर्ट मांगी गई। सभी राज्यों का कहना था कि आरटी-पीसीआर टेस्ट में पॉजिटिव पाए गए सैंपल्स की जांच के दौरान 6 से 71 प्रतिशत तक अंतर पाया गया। जो चिंताजनक है। वैसे चीन से रैपिड टेस्ट मंगाने के फैसले को सही बताते हुए डाक्टर गंगाखेड़कर ने कहा कि चीन से आने के बाद लैब में किट की जांच की गई थी, जिसमें यह 71 फीसदी सही पाया जा रहा था। इसी कारण इसका सर्विलांस में उपयोग करने का फैसला किया गया। उन्होंने कहा कि कोरोना जैसे नए वायरस की पहचान के लिए यह फर्स्ट जेनरेशन टेस्ट है, इसके रिजल्ट में थोड़ा बहुत अंतर आना स्वाभाविक है। इसकी गुणवत्ता में धीरे-धीरे सुधार आएगा। लेकिन उन्होंने इतना जरूर माना कि रिजल्ट में इतना अंतर आने के कारण सर्विलांस में भी उसकी उपयोगिता संदिग्ध हो गई है। फील्ड परीक्षण के बाद आइसीएमआर इस किट के इस्तेमाल के बारे में नई एडवाइजरी जारी करेगा। डाक्टर गंगाखेड़कर ने कहा कि यदि लगा कि किट के पूरे बैच में समस्या है कि तो हम कंपनी को किट को बदलने के लिए कहेंगे।

स्थिति खराब होने की डब्ल्यूएचओ की आशंका को खारिज

लॉकडाउन और सोशल डिस्टेंसिंग को लेकर डब्ल्यूएचओ की चेतावनी और इसमें ढील देने की स्थिति में 1918 के स्पेनिश फ्लू की तरह करोड़ों लोगों की मौत की आशंका को आइसीएमआर ने सिरे से खारिज कर दिया। डाक्टर गंगाखेड़कर ने कहा कि जितनी हमारे पास ताकत है, उसमें हम हर चीज करने की कोशिश कर रहे हैं। लोगों को विज्ञान पर भरोसा रखने की सलाह देते हुए डाक्टर गंगाखेड़कर ने कहा कि हमको यह समझना होगा कि पिछले साढ़े 3 महीने में जो भी प्रगति हुई है, उसी की वजह से वायरस से ग्रसित लोगों की पहचान हो पा रही है। साढ़े 3 महीने में किसी भी नई बीमारी का पीसीआर टेस्ट पहली बार सामने आया है, जो काफी सटीक है। यही नहीं, साढ़े तीन महीने में 70 वैक्सिन की खोज हो चुकी है और उनमें से 5 वैक्सिन मानव पर ट्रायल के फेज में जा चुका है। ऐसा आज तक कभी किसी बीमारी में नहीं हुआ है। यदि इस रफ्तार से इसकी खोज हो रही है, तो हमें डरने की कोई जरूरत नहीं है।

राज्यसभा चुनाव को लेकर एक माह बाद भी स्थिति स्पष्ट नहीं

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय चुनाव आयोग ने 26 मार्च को होने वाले राज्यसभा के चुनाव का मतदान स्थगित कर दिए थे। एक माह होने को आ रहा है। अभी तक चुनाव आयोग इस संबंध में मौन है। झारखंड, मध्य प्रदेश, गुजरात, राजस्थान इत्यादि राज्यों के मतदान की नई तिथि, अभी तक चुनाव आयोग ने घोषित नहीं की है। 3 मई तक लॉकडाउन आगे बढ़ा दिया गया है। केंद्र सरकार के मंत्री भी अब अपने कार्यालयों में जाकर काम कर रहे हैं।

राज्यसभा के चुनाव में विधायक मतदान करते हैं। राज्यसभा चुनाव के लिए मतदान पूर्ण सुरक्षा के साथ कराए जाने में अब कोई परेशानी भी नहीं है। किंतु चुनाव आयोग द्वारा अभी तक राज्यसभा के मतदान की तिथि घोषित नहीं करने से, राजनीतिक हलकों में तरह-तरह की चर्चाएं शुरू हो गई हैं। उल्लेखनीय है, मध्य प्रदेश से कांग्रेस छोड़कर भाजपा में गए ज्योतिरादित्य सिंधिया और कांग्रेस के दिग्विजय सिंह अटके हुए हैं। सत्ता परिवर्तन के बाद भाजपा यहां से 2 सीटें आराम से जीत रही है। इसी तरह गुजरात का चुनाव भी बड़ा दिलचस्प होगा। गुजरात में कांग्रेस के पांच विधायकों ने इस्तीफे दे दिए हैं। इसके बाद भी भाजपा 3 सीटों को जीतने के लिए आश्वस्त नहीं है।

शिवराज केबिनेट के मंत्रियों में विभागों का हुआ बंटवारा

नरोत्तम मिश्रा को गृह और स्वास्थ्य, तो सिलावट देखेंगे जल संसाधन विभाग

भोपाल, एजेंसी। मुख्यमंत्री मंत्रिमंडल के गठन के अगले दिन मंत्रियों को विभागों का बंटवारा कर दिया है। नरोत्तम मिश्रा को गृह और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग की जिम्मेदारी दी गई है। तुलसी सिलावट जल संसाधन विभाग का काम संभालेंगे। गोविंद सिंह राजपूत सहकारिता और खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग देखेंगे। कमल पटेल कृषि मंत्री बनाए गए हैं। मीना सिंह आदिम जाति कल्याण विभाग देखेंगी। मुख्यमंत्री शिवराज ने मंगलवार को क्षेत्रीय और जातिगत समीकरण को ध्यान में रखते हुए 5 सदस्यीय मंत्रिमंडल का गठन किया था। सीएम ने कहा कि अभी हमने विभागों का बंटवारा कोरोना को ध्यान में रखते हुए किया है। महामारी को नियंत्रित करने के लिए जितने विभाग जरूरी थे, उन्हें ही बनाया गया है।

मंत्रियों को संभागों का प्रभार दिया था

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने बताया कि कोरोना से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए मंत्रियों को प्रदेश के संभागों का प्रभार दिया गया है। नरोत्तम मिश्रा को भोपाल एंव उज्जैन संभाग, तुलसी सिलावट को इंदौर एवं सागर संभाग, कमल पटेल को जबलपुर और नर्मदापुरम संभाग, गोविंद सिंह राजपूत को चंबल एवं ग्वालियर संभाग और मीना सिंह को रीवा एवं शहडोल संभाग का प्रभार सौंपा गया है। सीएम शिवराज ने कहा कि सभी मंत्री दिए गए संभागों में कमिश्नर, आईजी, कलेक्टर, एस.पी., स्वास्थ्य विभाग एवं अन्य अमले से निरंतर समन्वय बनाए रखकर कोरोना के विरूद्ध अच्छी व्यवस्थाएं सुनिश्चित करेंगे।

पालघर के तिहरे हत्याकांड के 101 आरोपितों में एक भी मुस्लिम नहीं: गृहमंत्री देशमुख

मुंबई, एजेंसी। पालघर जिले के गढ़चिंचले इलाके में लॉकडाउन के दौरान पिछले हफ्ते तीन लोगों की पीट-पीटकर हत्या करने के मामले में पुलिस ने करीब सौ से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया है। इस बीच राज्य के गृह मंत्री अनिल देशमुख ने बुधवार को कहा कि लिंचिंग केस के संबंध में गिरफ्तार किए गए 101 लोगों में से कोई भी मुस्लिम नहीं है और उन्होंने विपक्ष पर इस घटना को साम्प्रदायिक रंग देने का आरोप लगाया।

देशमुख ने फेसबुक के जरिए दिए संबोधन में कहा, 'इस घटना के संबंध में गिरफ्तार किये गये आरोपियों में एक भी मुस्लिम नहीं है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि इस घटना के बाद साम्प्रदायिक राजनीति की जा रही है।' किसी का नाम लिए बगैर उन्होंने कहा, कुछ लोग 'मुंगेरीलाल के हसीन सपने' देख रहे हैं।

पालघर में साधुओं की हत्या पराक्रम नहीं, केवल भीड़ का पागलपन

माही की गूंज। धर्मेंद्र पंचाल

हिंदू हृदय सम्राट का तमगा पाने वाले स्व. बाला साहब ठाकरे के पुत्र उद्धव ठाकरे जिस राज्य के मुख्यमंत्री है, उसी महाराष्ट्र के पालघर में अपनी कार से सूरत की ओर जा रहे दो साधुओं और एक ड्रायवर की भीड़ ने पीट-पीटकर हत्या कर दी। यह घटना चौंकाने वाली, अफसोसजनक और निंदनीय है। इसे किसी भी तरह धार्मिक, सांप्रदायिक या राजनीतिक रंग दिया जाना भी चिंताजनक और अस्वीकार्य है। दरअसल, भीड़ के ऐसे कुकृत्य एक ओर जहां लोगों के कानून और व्यवस्था में अविश्वास को दर्शाते हैं, वहीं यह भी कि उनके मनों में कानून का न तो सम्मान है, न भय। एक व्यस्क होते विशालकाय लोकतंत्र के रूप में यह स्थिति हमारे लिए दुर्भाग्यपूर्ण है और अवांछनीय भी। भीड़ हिंसा किसी भी सभ्य समाज को कलंकित ही करती है। हो सकता है कि ऐसी घटनाओं के न थमने का कारण किसी घटना विशेष पर हुई ओछी राजनीति हो, लेकिन हर सरकार की यह जिम्मेदारी है कि वह अपने लोगों को भयमुक्त बनाए और उन्हें यह भरोसा दिलाए कि उनके साथ किसी प्रकार का अन्याय नहीं होने दिया जाएगा। साथ ही यह भी कि उनका कोई भी अपराधी कानून के शिकंजे से बच नहीं पाएगा। जब ऐसा नहीं हो पाता तो लोग असुरक्षा के भाव से घिर जाते हैं।

असुरक्षित व्यक्ति अकेला हो तो डरा हुआ और कमजोर होता है, लेकिन जब उसे भीड़ का सामूहिक मुखौटा मिल जाता है, तो उसकी यही कायरता चरम क्रूरता में बदल जाती है। पालघर की घटना भी इसका अपवाद नहीं है। जिस तरह सैकड़ों की उस भीड़ ने उन तीन निरीह प्राणियों की हत्या की, वह कोई पराक्रम नहीं था। कायराना पागलपन था। हर भीड़-हिंसा में यही होता है।

लोगों का इस तरह कानून को अपने हाथ में लेना। देश-प्रदेश में लोकतंत्र के भविष्य के लिए कोई अच्छा संकेत नहीं है। सरकार और प्रशासन को देखना होगा कि इस भीषण हत्याकांड के दोषी भीड़ के बहाने बच न जाएं, क्योंकि वैसा होने से हिंसा की कुसंस्कृति को बढ़ावा मिलेगा। चिंता की बात यह भी है कि इस जघन्य घटना को अंजाम देने वालों में छोटे-छोटे बच्चे तक शामिल बताए जा रहे हैं। इस संबंध में पुलिस ने जिन सौ से ज्यादा आरोपितों को गिरफ्तार किया है, उनमें 9 नाबालिग भी शामिल है।

उम्मीद की जानी चाहिए कि जांच एजेंसियां और न्याय व्यवस्था अपने कर्तव्य का ईमानदारी से निर्वाह करेंगी, ताकि अराजक भीड़ के स्थान पर कानून का राज्य स्थापित हो सके। फिलहाल तो पालघर से आई तस्वीरों को देखकर पूरा देश स्तब्ध है। यह घटना और भी कारूणिक इसलिए हो गई है कि मारे गए साधु अपने गुरू के अंतिम संस्कार में शामिल होने जा रहे थे। साथ ही, कानून की धज्जियां उड़ते देखना तब और भी पीड़ाजनक हो जाता है, जब पता चलता है कि भीड़ से घिर चुके साधुओं ने पुलिस से जान बचाने की मिन्नतें की। भीड़ से बचने के लिए पुलिस के पीछे दौड़ लगाई, लेकिन पुलिस भी इस अराजक भीड़ के आगे बेबस हो गई और दोनों साधुओं तथा ड्राइवर की हत्या होते देखती रह गई।

यह कहना न होगा कि भीड़-हिंसा की इस वारदात ने फिर एक बार यह साबित कर दिया है कि गलत सूचना, झूठ और अफवाह का अबाध सागर ही ऐसे उन्माद की जड़ होता है। समय रहते अगर इस झूठ का निराकरण नहीं होता, तो वह सामूहिक पागलपन को पैदा करता है। देश भर में पहले चले भीड़-हिंसा के दौर में कई मामलों में बच्चे चुराने की अफवाहें जिम्मेदार पाई गई थीं। क्या यह केवल इत्तिफाक है कि पालघर में भी शायद किसी व्हाट्स एप समूह के जरिए बच्चा चोरी गिरोह के सक्रिय होने की अफवाह फैलाई गई? कहीं यह कोई षडयंत्र तो नहीं? या केवल अफवाह फैलाकर मनोरंजन करने वालों की शरारत का अप्रत्याशित दुष्परिणाम। जानकारी की मानें तो साधुओं की हत्या से पहले की शाम गांव वालों ने डॉक्टर और पुलिस की एक टीम को भी बच्चा चोर समझ कर अपना निशाना बनाया था। वे तो बच गए पर साधु न बच सके। पूछा जा सकता है कि पहली घटना के बाद ही पुलिस ने जरूरी कदम क्यों नहीं उठाए। उसे अफवाहों को रोकना तथा ग्रामीणों की अवैध पहरेदारी को तुरंत हटवाना चाहिए था। लेकिन अब इन बातों को उछालने से क्या फायदा? क्योंकि हम उन महात्माओं का जीवन वापस नहीं ला सकते। पर भविष्य में इस तरह की घटनाओं को रोकने के लिए दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा मिले ताकि भविष्य में कोई पागल भीड़ कानून को कोई अपने हाथ में न ले सकें।

बांग्लादेशी अवैध घुसपैठिया है तथा कथित बंगाली डॉक्टर अजीत राय

दलालों के माध्यम से आया डॉक्टर, फर्जी डॉक्यूमेंट के आधार पर डिग्रियों के साथ ही फर्जी पासपोर्ट भी बनवाया

माही की गूंज, संजय भटेवरा।

जो व्यक्ति एक बार किसी बड़े काम में महारत हासिल कर ले, तो दूसरी बार छोटे-बड़े कार्यों को करना उसके लिए मामूली सी बात रहती है। इसी बात को करके फर्जी एवं बांग्लादेशी घुसपैठिया अजीत राय ने 8 अप्रैल की रात में दिखा दिया। जहां एक ओर पूरा देश ही नहीं विश्व कोरोना संक्रमण से जंग जीतने के लिए मनुष्य की चौन तोड़ने हेतु लॉकडाउन के साथ जी रहा है। इस दौरान जो व्यक्ति जहां हैं, वहीं रहे व जिले एवं राज्य की सीमाएं भी सील करने के फरमान सरकारों और प्रशासन ने सुना दिए थे। इसके बावजूद फर्जी डाक्टर इंदौर से लेकर खवासा तक के आवागमन के कच्चे रास्ते से भली-भांति अवगत है और वह अपने पड़ोसी अंकित जैन को गुमराह कर अपने बेटे विजय को इंदौर लेने परमिशन का हवाला देकर चला गया। इतना ही नहीं अपनी गाड़ी पर अति आवश्यक कार्य माही मेडिकल स्टोर की स्लीप लगाकर इंदौर पहुंच गया और सीमाएं सील होने के कारण जिले की सीमाओं पर पदस्थ अधिकारियों को चकमा देकर कच्चे रास्ते से खवासा आ गया, लेकिन माही की गूंज की नजरों से वह नहीं बच पाया और उसके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही होकर होम क्वारंटाइन किया गया।

बता दे कि फर्जी बांग्लादेशी डॉक्टर अजीत राय के लिए यह सब छोटे कार्य है। माही की गूंज के विश्वसनीय सूत्रों के अनुसार उक्त फर्जी डॉक्टर पश्चिम बंगाल से नहीं आया, बल्कि यह बांग्लादेश के जिला जसूर थाना मोनीरामपुर ग्राम लोखईडंगा का रहने वाला है और उक्त फर्जी बांग्लादेशी, दलाल के माध्यम से भारत की सीमा में घुसकर पहले बाजना और फिर बाजना से खवासा आया। यह घुसपैठिया खवासा में आकर अपने आप को पश्चिम बंगाल का दर्शाने लगा। बता दें कि पश्चिम बंगाल व बांग्लादेश की भाषा में कोई अंतर नहीं है, जिसके कारण इसके जैसे कई बांग्लादेशी भारत में दलाल के माध्यम से घुसपैठ करके आए हैं। गूंज के हमारे विशेष सूत्र ने बताया कि, फर्जी बांग्लादेशी डॉक्टर अजीत राय ने भारत में आकर सारे शिक्षा संबंधी डॉक्यूमेंट फर्जी रूप से ही दलालों के माध्यम से बनाए हैं। सूत्र ने बताया कि अजीत राय की पत्नी जयंती राय भी बांग्लादेश के मोनीरामपुर थाना क्षेत्र जिला जसुर की ही रहने वाली है और वही जयंती से अजीत राय ने शादी की व बड़ा पुत्र विजय का जन्म बांग्लादेश में ही होने के बाद भारत में घुसपैठ कर आ गए। खवासा में वर्ष 2003-04 से निवासरत होकर अजीत राय ने फर्जी रूप से खवासा पंचायत में नाम दर्ज करवा कर राशन कार्ड व बाद में परिचय पत्र व आधार कार्ड बनावा लिए। उक्त फर्जी घुसपैठिए ने खवासा आने के बाद किराए के मकान में रहते, पश्चिम बंगाल में प्लाट लेकर मकान बनवाया, जिसके बाद उसके माता-पिता को भी घुसपैठ कर भारत लाया। इतना ही नहीं घुसपैठिये फर्जी डॉक्टर अजीत राय ने बांग्लादेशी होने के बावजूद खवासा जिला झाबुआ का निवासी डॉक्यूमेंट लगाकर पासपोर्ट बनाकर फर्जी रूप से परिवार सहित सभी को भारतीय मूल का साबित कर, कई बार फर्जी पासपोर्ट के आधार पर बांग्लादेश की यात्रा कर उसके गांव व पत्नी परिवार के साथ उसके ससुराल गया।

घुसपैठिया अजीत राय भारतीय व्यवस्था को तार-तार कर अपने साथ कई बांग्लादेशियों को घुसपैठ कर भारत ले आया।

क्वारंटाइन हुए 9 सदस्य में 2 बांग्लादेशी के कोई डॉक्यूमेन्टस नहीं

इतना ही नहीं 9 अप्रैल को जब इस फर्जी डॉक्टर को परिवार के 9 सदस्य के साथ होम क्वारंटाइन किया। जिसमें प्रशासन को जो 9 नाम दिए हैं। हमारे सूत्र अनुसार उन 9 नामों में से दो व्यक्ति को 3-4 माह पूर्व ही बांग्लादेश से घुसपैठ कर भारत लाए गए है। जिनका अभी भारतीय मूल के डॉक्यूमेंट फर्जी रूप से नहीं बना पाया है, लेकिन दलालों के माध्यम से फर्जी डॉक्यूमेंट बनाने के लिए प्रयासरत है। उक्त घुसपैठिया अजीत राय कई ऐसे बांग्लादेशियों से एक मोटी रकम लेकर दलालों के माध्यम से घुसपैठ करवाता है, वरन उनके भारतीय मूल के फर्जी डॉक्यूमेंटस बनवाकर अपने फर्जी क्लीनिक पर लाकर प्रैक्टिस करवा कर फर्जी डॉक्टर बनाकर कई लोगों को देश के कई गावों में स्थापित करवा चुका है। प्रशासन को चाहिए कि इस फर्जी घुसपैठिए, जिसने बांगलादेशी होकर शासन के निर्देशों का पालन नहीं कर लॉकडाउन का मखौल उड़ाया है। उक्त घुसपैठिए के विरुद्ध पासपोर्ट, अन्य डॉक्यूमेंटस व वर्तमान में रह रहे सभी 9 सदस्यों के तथ्यात्मक रूप से जांच कर कार्यवाही की जाए तो, हो सकता है यह घुसपैठिया परिवार के साथ जेल की सलाखों में होकर, आगे से कोई अन्य को भारत के वीर जवानों की आंखों में धूल झोककर नहीं ला सकेगा।

न्यूज़ ब्रीफ

आंगनवाड़ी कार्यकर्ता बांट रही मास्क और सूखा नाश्ता

माही की गूंज, थांदला। महिला बाल विकास विभाग परियोजना थांदला में सभी आंगनबाड़ी कार्यकर्ता और सहायिका ग्राम-शहर में कार्यकर्ता द्वारा बच्चों के लिए पोषण आहार का सूखा नाश्ता बना कर घर वितरण कर रही है। बच्चों के लिए पोषण आहार, किशोरी बालिकाओं के लिए पोषण आहार, गर्भवति महिलाओं आदि के लिए भी पोषण आहार दिया गया। इसी को लेकर थांदला नगर के वार्ड क्रमांक 11 में पर्यवेक्षक पुष्पा डोडियार के मार्गदर्शन में आंगनवाड़ी कार्यकर्ता प्रीति बाला अरोड़ा एवं सहायिका यशोदा भाटी के द्वारा 6 माह से लेकर 6 वर्ष तक के बच्चों को पोषण आहार वितरण किया गया। साथ ही समूह द्वारा सूखा नाश्ता ,पोष्टिक सत्तू बना कर घर-घर जाकर इनका वितरण किया गया। साथ ही नगर के शहरी क्षेत्र में 15 सौ से अधिक मास्क वितरण कर कोरोना के सुझाव घर घर पहुंच कर दिए गए।

परियोजना अधिकारी जेएस मुवेल ने बताया कि थांदला परियोजना कि सभी आंगनबाड़ी पूरी परियोजना से लगभग 16,800 मास्क गांव में बंटवा दिया गया है। कार्यकर्ता और सेक्टर सुपरवाइजर कार्यकर्ताओं को रोजाना फोन करके सारी जानकारी ले रही है। सभी सेक्टर में सूखा नाश्ता भी अलग-अलग प्रकार का बनाया जाता है, जो कम से कम 15 दिनों तक ख़राब नहीं हो।

लायंस क्लब ने सिविल अस्पताल में दिया प्रोटेक्शन केबिन

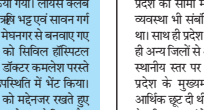

माही की गूंज, थांदला। स्थानीय सिविल अस्पताल थांदला में लायंस क्लब द्वारा प्रोटेक्शन केबिन भेंट किया गया। लायंस क्लब थांदला के सदस्यों दिनकर वाजपेई, ऋषि भट्ट एवं सावन गर्ग द्वारा क्लब का प्रतिनिधित्व करते हुए मेघनगर से बनवाए गए सैंपल कलेक्शन प्रोटेक्शन केबिन को सिविल हॉस्पिटल थांदला के बीएमओ अनिल राठौड़ , डॉक्टर कमलेश परस्ते ,डॉक्टर मनीष दुबे एवं स्टाफकी उपस्थिति में भेंट किया। ऋषि भट्ट ने बताया कि कोविड-19 को मद्देनजर रखते हुए ब्लड सैंपल लेने हेतु बनाया गया यह स्पेशल केबिन, लैब टेक्नीशियन को सैंपल लेने में सुविधाजनक रहेगा व इससे संक्रमण का भय भी कम होगा एवं सुविधाजनक तरीके से सैंपल लिए जा सकेंगे।

गेहूं खरीदी का हुआ शुभारंभ

माही की गूंज, थांदला। स्थानीय गेहूं उपार्जन केंद्र आदिम जाति सेवा सहकारी संस्था थांदला में मंगलवार को गेहूं खरीदी कार्य का शुभारंभ किया गया। जिसमें प्रथम कृषक के रूप में अक्षय नारायण भट्ट ने अपनी गेहूं की उपज का वजनकर विक्रय किया गया। गेहूं खरीदी केंद्र पर खरीदी कार्य का विधिवत शुभारंभ अक्षय भट्ट द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। इस अवसर पर संस्था पर्यवेक्षक गुलाब सिंह निनामा, कृषि विस्तार अधिकारी, सहायक कृषि विस्तार अधिकारी गंगाराम चौहान आदि कर्मचारी गण उपस्थित थे। पर्यवेक्षक निनामा ने बताया कि संस्था द्वारा 15 अप्रैल से ही खरीदी कार्य प्रारंभ कर दिया गया था। जिसके लिए शासन द्वारा चयनित किसानों को एसएमएस से अपनी उपज उपार्जन केंद्र पर लाने हेतु निर्देशित किया गया था, किंतु कृषक अपनी उपज लेकर केंद्र पर नहीं ला पाए थे।

फंदे पर झूले लड़का-लड़की

माही की गूंज, थांदला। तहसील के निकट ग्राम उदयपुरिया में मुख्य सड़क से करीब 100 मीटर अंदर खेत में बबूल के पेड़ से लड़की के दुपट्टे से एक युगल ने फांसी लगा कर खुदकुशी कर ली। प्राप्त जानकारी के अनुसार गांव में रहने वाली कु. परमता मोहन वसुनिया (18 वर्ष) व अनिल भोदरा पारगी (18 वर्ष) ने एक ही दुपट्टे से बबूल के पेड़ पर लटक कर अपनी जान दे दी। उक्त घटना की सूचना मिलते ही पुलिस थाना प्रभारी बीएल मीणा के निर्देश पर प्रधान आरक्षक आरडी बोरसी अपने सहयोगी आरक्षक बलिराम अचले के साथ मौके पर पहुँचे। तब तक दोनों की लाश दुपट्टे के फटजाने से नीचे गिर चुकी थी। थांदला पुलिस ने मर्ग कायम कर लिया है। पुलिस के अनुसार मामला प्रथम दृष्ट्या प्रेम प्रसंग का लग रहा है। बाकी विवेचना के बाद ही पता चलेगा।

शिवराजसिंह सरकार में लॉकडाउन के दौरान भी नौकरशाही निरंकुश

माही की गूंज, खवासा। उमेश मालवीय

प्रदेश में जोड़-तोड़ की राजनीति कर चौथी बार मुख्यमंत्री बने शिवराज सिंह चौहान के तीसरे कार्यकाल में नौकरशाही के निरंकुश होने पर घोषणावीर मुख्यमंत्री होने के जो आरोप लगे थे, वे चौथे कार्यकाल की शुरुआत में ही तथ्यात्मक रूप से वही आरोप लगना शुरू हो गए हैं।

उदाहरण के बतौर दो मामले सामने आए हैं। जिसमें उज्जैन जिले की एक पंचायत ने झाबुआ जिले के मजदूरों को पैदल आने का प्रमाण पत्र दे दिया। वहीं ग्राम पंचायत खवासा में लॉकडाउन के दौरान पंचायत पर कार्यरत सचिव व सहायक सचिव दोनों ही मुख्यालय क्षेत्र में नहीं रहकर एक-एक सप्ताह तक लापता होकर अपने कार्य की इतिश्री कर रहे हैं, जिसे कोई देखने वाला तक नहीं है।

पूरा देश सहित विश्व भी कोविड-19 के संक्रमण की चपेट में है। देश के प्रधानमंत्री ने पूरे देश में पहले चरण में 21 दिन के लॉकडाउन की घोषणा की थी। जिसे दूसरे चरण में 19 दिन और बढ़ा कर देश के नागरिकों से अपील की गई थी कि जो जहां है, वही रहें और इसके लिए प्रदेश की सीमा में रह रहे प्रवासी मजदूरों की व्यवस्था भी संबंधित राज्य सरकार को करना था। साथ ही प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में प्रदेश के ही अन्य जिलों से आए मजदूरों की व्यवस्था भी स्थानीय स्तर पर की जाना थी, जिसके लिए प्रदेश के मुख्यमंत्री ने सभी पंचायतों को आर्थिक छूट दी थी। यही नहीं बिना पात्रता पर्ची के भी जरूरतमंदों को अनाज देने की घोषणा की गई थी। जिले से अन्य राज्य में पलायन पर गए मजदूर जो दूसरे चरण के लॉकडाउन तक भी घर नहीं पहुंचे हैं, उनकी सूची बैंक खाता, मोबाइल नंबर सहित राज्य एवं स्थान सहित विस्तृत जानकारी मांगी जा रही है, ताकि शासन उनके बैंक खातों में आर्थिक सहायता राशि ट्रांसफर कर सके। तो वही प्रदेश के ही अन्य जिलों में पलायन पर गए मजदूर या किसी अन्य राज्य में पलायन पर गए मजदूर जो संक्रमित क्षेत्र से किसी तरह से जिले में आने पर उन्हें संक्रमण की संदिग्ध श्रेणी में लेकर स्थानीय स्तर पर ही क्वारंटाइन कर उनको स्वास्थ्य सुविधा देकर उनकी जांच करना आवश्यक है।

लॉकडाउन का मखौल उड़ाकर उज्जैन जिले की पंचायत ने प्रवासी मजदूरों के लिए जारी किया प्रमाण-पत्र लेकिन तमाम आदेशों के बावजूद लॉकडाउन के नियमों का उल्लंघन करते हुए खाचरोद जनपद पंचायत जिला उज्जैन की ग्राम पंचायत पानखेड़ी के सरपंच व सचिव ने पंचायत का प्रमाण-पत्र 14 अप्रैल को बनाकर थांदला तहसील के देवगढ़ के मजदूरों को अपने गृह ग्राम जाने की अनुमति दे दी। प्रमाण-पत्र में दर्शाया गया कि 11 मजदूर पानखेडी के ग्राम मेलमुण्डला में कृषि कार्य हेतु आए थे। 15 मार्च से 14 अप्रैल तक बालुसिंह गणपत के यहा मजदूरी कार्य किया। कार्य समाप्त होने पर पैदल देवीगढ जिला झाबुआ जाना चाहते है। प्रमाणित कर यह प्रमाण-पत्र इन्हें पैदल जाने में सुविधा की दृष्टि से दिया जाता है। जबकि इसके लिए ग्राम पंचायत अधिकृत ही नहीं थी उन्हें वहीं रोककर उनके खाने-पीने की व्यवस्था का कार्य पानखेड़ी के सरपंच-सचिव का था, लेकिन उन्होंने अपनी जिम्मेदारी से मात्र एक प्रमाण-पत्र के आधार पर पल्ला झाड़ लिया। मजदूर रेल की पटरी के रास्ते 3 दिन में 16 अप्रैल की रात्रि में ग्राम पंचायत देवगढ़ पहुंचे। 11 के स्थान पर 8 पुरुष व एक गर्भवती सहित 6 महिलाएं, साथ ही एक 4 वर्षीय बच्चा भी देवगढ़ की स्कूल पर ही संक्रमण की वस्तु स्थिति एवं प्रशासनिक कार्यवाही के डर से रुक गए। यहां पर ग्राम पंचायत में 17 अप्रैल को सुबह-शाम का भोजन करवाया, उच्च अधिकारियों को सूचना भी दी। परंतु यहां प्रशासन की बड़ी लापरवाही यह भी देखी गई कि, उन्हें बिना क्वारंटाइन किए ही स्कूल के बाहर ही सुला रखा था। 18 अप्रैल को जांच हेतु स्वास्थ्य टीम पहुंची और देखा तो हैरान रह गए कि, स्कूल का ताला बंद और पलायन से आए मजदूर स्कूल के बाहर ही बैठे हैं। स्वास्थ्य विभाग की टीम ने बच्चे को छोड सभी का चेकअप किया परंतु 4 वर्षीय बच्चा जो कि देवगढ़ में उसके घर दादा-दादी व मां के पास चला गया, जिसका चेकअप भी नहीं किया गया। यह सही है कि, हमारे जिले के रहवासी पलायन से आने वाले मजदूरों का संपर्क किसी संक्रमित व्यक्तियों से नहीं हुआ है और अभी तक इतने मजदूरों के आने के बाद भी यह जिला सभी की प्रार्थनाओं के साथ संक्रमण से सुरक्षित है। पर जिस जिले व क्षेत्र में रेड जोन और ओरेन्ज जोन है। उस जिले से आने वाले किसी भी मजदूरों या व्यक्ति के प्रति प्रशासन की एक छोटी सी गलती आमजन के साथ शासन-प्रशासन को भी भारी पड़ सकती है। स्वास्थ्य विभाग की टीम द्वारा वस्तु स्थिति वरिष्ठ अधिकारियों को बताई गई। जिसके बाद प्रशासन हरकत में आया और थांदला सीईओ आरसी हालू अपनी टीम के साथ पहुंचे। मौके पर प्रतिनिधि ने सीईओ से पूछा बच्चे का स्वास्थ्य परीक्षण हुआ या नहीं? नहीं हुआ है, अभी पता चला है। 14 मजदूरों को क्वारंटाइन कर बच्चे के साथ उसकी मां, दादा-दादी का भी होम क्वारंटाइन 14 दिन के लिए किया जाएगा।

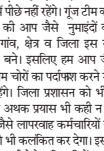

उज्जैन जिले कि पंचायत पानखेडी ने बनाया मजदूरो के प्रवास के लिए प्रमाण-पत्र।

देवगढ पहुचे मजदूर दुसरे दिन भी स्वास्थ्य विभाग की टीम पहुचने पर स्कूल में लगे ताले व बरामदे में बैठे मजदूरो को देखकर टीम हैरान रह गई।

पानखेड़ी पंचायत द्वारा दिया गया प्रमाण-पत्र क्या शासन के निर्देशानुरूप है? नहीं किसी भी स्थिति में प्रदेश कि कोई भी पंचायत इस आशाय का प्रमाण-पत्र बनाकर नही दे सकती। वही उपरोक्त मजदूरो के बाद देवगढ़ में रविवार को 9 और मजदूर नीमच व उन्हेल से आए। इसी तरह क्षेत्र एवं जिले की ग्राम पंचायतों में रेल मार्ग से पैदल-पैदल बड़ी संख्या में मजदूर आ रहे हैं। जिन पर प्रशासन को सुरक्षा का ध्यान रखते हुए उन्हें क्वारंटाइन कर बिना किसी लापरवाही के स्वास्थ्य सुविधा दी जाए।

भीलजी डिंडोर एवं परिवार आखिर कहां है? का जवाब नहीं ग्राम पंचायत के पास

वहीं दूसरे मामले में ग्राम पंचायत खवासा के सचिव इस विकट स्थिति में किस तरह से अपनी जवाबदेही का निर्वहन कर रहा है सामने आया है। जिला प्रशासन की इस तरह की अनदेखी कहीं ना कहीं जिले को संक्रमण के खतरे में डाल सकता है। बता दें कि ग्राम पंचायत में पदस्थ अमित पंवार 8 दिन में एक बार अपने गृह ग्राम पारा से आ रहा है। कुछ दिन से भीलजी डिंडोर निवासी खवासा पत्नी एवं बच्चों के साथ गुजरात से आए हैं कि चर्चा चल रही है। परंतु भीलजी उसके घर पर है ही नहीं। तो तय है यह चर्चाएं अफवाह ही है। लेकिन शासन ने निर्देश दिए हैं कि, जो मजदूर अभी भी अन्य राज्य में है या राज्य के किसी अन्य जिले में हैं उनकी बैंक खातों के साथ विस्तृत जानकारी वरिष्ठ कार्यालय को भेजी जाए, ताकि राज्य शासन द्वारा मजदूरों के बैंक खातों में सहायता राशि डाली जा सके।

लेकिन खवासा में पदस्थ सहायक सचिव रतलाम में निवासरत है, तो सचिव अमित पंवार पारा में। इस विकट स्थिति में निरंकुश तंत्र अपनी मनमानी कर रहा है। जब भीलजी डिंडोर एवं परिवार की जानकारी मांगी की यह पलायन पर है या खवासा में? जिस पर सचिव महोदय कहने लगे कि, खवासा से 6 मजदूर पलायन पर गए थे जो लॉकडाउन के पूर्व ही खवासा आ गए थे। खवासा आ गए तो वह खवासा में कहां है? वे खवासा में नहीं है तो आपने उच्च कार्यालय को क्या जानकारी प्रेषित की?

वही राजू डिंडोर व मांगलिया मचार भी अभी पलायन से घर आए हैं, उनकी क्या जानकारी सबमिट की व उन्हें क्या सुविधाएं दी गई? जिस पर निरंकुश तंत्र के सचिव अमित ऐसे भनक गए कि वह कहने लगे आपको हमसे क्या तकलीफहै, तो आप इस तरह से जानकारी ले रहे हो, मैं तो कोरोना तक खवासा में हूं, मैं तो खवासा में रहना ही नहीं चाहता हूं, कहकर फोन काट दिया। सचिव जी अगर आपको खवासा में नहीं रहना है या नौकरी नहीं करना है तो आप भले से रिजाइन कर दे। परंतु इस संक्रमण की दुखद घड़ी में हम हमारे दायित्वों के साथ कार्य करने में पीछे नहीं रहेंगे। गूंज टीम कतई यह नहीं चाहेंगी की आप जैसे नुमाइंदों की वजह से हमारा गांव, क्षेत्र व जिला इस संक्रमण का शिकार बने। इसलिए हम आप जैसे बेईमानों एवं काम चोरों का पर्दाफाश करने में कतई पीछे नहीं रहेंगे। जिला प्रशासन को भी चाहिए की आपके अथक प्रयास भी कही न कहीं अमित पवार जैसे लापरवाह कर्मचारियों की वजह से आपको भी कलंकित कर देगा। इसलिए अपनी टेढ़ी नजर भी ऐसे अधिकारियों पर बनी रहेगी तो ही ऐसे लापरवाह व कामचोर को इनके घर का रास्ता भी दिखाएं, ताकि इनकी जगह अन्य कर्मचारी आकर खवासा में कार्य करें।

निरंकुश प्रशासन के नुमाईदा सचिव के नही आने से पंचायत पर लटके रहते है ताले।

उपज खरीदी को लेकर एसडीएम ने ली व्यापारियों की बैठक

माही की गूंज, थांदला। कोरोना वायरस (कोविड-19) की महामारी के चलते कृषि उपज मंडी समिति प्रांगण में व्यापारियों की बैठक का आयोजन किया गया। मंडी के भार साधक अधिकारी थांदला एसडीएम जेएस बघेल ने समस्त व्यापारियों को बताया कि कोरोना वायरस संक्रमण के कारण मंडिया बंद होने से शासन के निर्देशानुसार किसानों की कृषि उपज मंडी के लाइसेंस जारी कर व्यापारी उनके घर खेत खलिहान से सौदा पत्रक के माध्यम से विक्रय कर सकते है। इसी उद्देश्य की जानकारी को लेकर बैठक का आयोजन किया गया। बघेल ने कहा कि कृषि उपज विक्रय करने के इच्छुक किसान अपनी कृषि उपज गेहूं, चना, सोयाबीन, कपास, मक्का आदि मंडी के लाइसेंसधारी व्यापारियों को सौदा करके विक्रय कर सकते हैं। अपनी उपज का भुगतान उसी दिन व्यापारी से प्राप्त करें। यदि व्यापारी उसी दिन भुगतान नहीं करता है तो उसकी शिकायत मंडी कार्यालय खवासा, उप मंडी मेघनगर मंडी तथा काकनवानी में कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि किसान भाई अपनी उपज केवल मंडी के लाइसेंस धारी व्यापारी से विक्रय करें। बिना लाइसेंस व्यापारी को अपनी उपज विक्रय न करें। इस संबंध में संपूर्ण मंडी क्षेत्र थांदला मेघनगर के ग्रामीण इलाकों में एलान के माध्यम से ग्रामीणों को भी जानकारी दी जा रही है। बैठक में मंडी समिति के सचिव लक्ष्मी भवर, ललित शर्मा, कृषि विभाग के एसडीओ चौहान, मंडी निरीक्षक अश्विन वसावा, प्रेम हिहोर, मैथूसिंह बारिया सहित सभी व्यापारी उपस्थित थे।

नगर परिषद् का सफाई व्यवस्था और सैनिटाइजर छिड़काव पर विशेष ध्यान

माही की गूंज, थांदला। नगर परिषद द्वारा सफाई व्यवस्था के साथ सभी वार्डों, गली, मोहल्लों में सैनिटाइजर छिड़काव शुरू किया गया है। सभी वार्डों मैं सैनिटाइजर का छिड़काव नगर परिषद अध्यक्ष बंटी डामोर, उपाध्यक्ष मनीष बघेल, वार्ड पार्षद एवं नेता प्रतिपक्ष लक्ष्मण राठौर, रोहित बैरागी, संदीप उपाध्याय, आशुका कमलेश लोढ़ा, संगीता विश्वास सोनी, आनंद बाबू दादा चौहान, अफसाना बी कादर शेख, लीला मीकु भाबर, पीटर बबेरिया, कामिनी अरविंद रुनवाल की उपस्थिति में स्वच्छता निरीक्षक गौरांक सिंह राठौर, सफाई दरोगा टीटीया देवदा, सुपरवाइजर यशदीप अरोड़ा, गौरव सिसोदिया, शब्बीर बोहरा के मार्गदर्शन में फायर चालक मेहबूब छिपा, मनीष माली, गोलू मचार, दीपक चारेल व अमित भाबोर ने किया।

राशन दुकान पर नहीं हो रहा डिस्टेंसिंग का पालन

माही की गूंज, बनी। जहां पूरा देश कोरोना संक्रमण से जंग जीतने के लिए कई प्रकार के प्रयास कर रहा है। वहीं ग्राम बनी की उचित मुल्य की दुकान पर सोशल डिस्टेंसिंग का पालन नहीं किया जा रहा है। यहां पर सरकार द्वारा गरीबों को दिए जा रहे राशन के लिए काफी भीड़ रहती है। परंतु सेल्समैन की सोशल डिस्टेंसिंग की समझाइश के बावजूद लोग इसका पालन नहीं कर रहे हैं। उपभोक्ता न तो मास्क का इस्तेमाल कर रहे हैं और न ही सामाजिक दूरी के नियम का पालन।

बच्चों ने कोलाज बनाकर घर पर रहने का दिया संदेश

माही की गूंज, सारंगी। कोरोना संक्रमण के इस दौर में जब पुलिस और डॉक्टर भगवान बनें बैठें हैं, तो आप क्यों अपने आप को राक्षस बता रहे हैं। घर में रहे और सुरक्षित रहें। लॉक डाउन में सभी को घरों में ही रहना है। इसके बाद भी कई लोग नियम तोड़ रहे हैं। ऐसे में नगर के बच्चों ने अपने अपने घरों में रहकर सुरक्षित रहने का संदेश दिया है। बच्चों ने कहा प्रशासन का सहयोग करें। डॉक्टर भगवान और पुलिस भगवान है। वह आपकी रक्षा कर रहे हैं, इसलिए जरूरी है घर में रहे। बच्चों ने व्हाट्सएप पर एक दूसरे से यह तस्वीर शेयर की और इस कोलाज को तैयार कर स्टे होम स्टे सेफलिखकर सभी ग्रुपों में शेयर किया। साथ ही सभी से निवेदन किया घर में ही रहे। यह कोलाज हिमालय इंटरनेशनल स्कूल रतलाम मैं अध्ययनरत सारंगी की होनहार बालिका निशा बसेर ने बनाया है। जिसे गांव के लोगों ने की सराहा है।

आखिर कौन है जो गरीबों के हिस्से का अनाज खा रहा..?

फादर रॉकी के मोबाईल पर विगत तीन माह से खाद्यान्न आहरण का आ रहा मेसेज

माही की गूंज, झाबुआ।

सोमवार को जिला कलेक्टर कार्यालय में जिला आपदा प्रबंधन समिति की बैठक कलेक्टर प्रबल सिपाह की अध्यक्षता में संपन्न हुई । बैठक में मुख्य अतिथि के तौर पर सांसद गुमान सिंह डामोर उपस्थित थे। अतिथि के तौर पर क्षेत्रीय विधायक कांतिलाल भूरिया ,नगर पालिका अध्यक्ष मनु बेन डोडियार, सकल व्यापारी संघ से अध्यक्ष नीरज राठौर, पद्मश्री महेश शर्मा आदि गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। बैठक का उद्देश्य लॉकडाउन में किन-किन व्यापार और वस्तुओं को छूट दी जाना चाहिए, इन मुद्दों को लेकर चर्चा की गई।

बैठक में अनाज वितरण प्रणाली या पीडीएस के माध्यम से राशन वितरण प्रणाली के बारे में भी जानकारी जिला खाद्य अधिकारी मुकुल त्यागी ने उपस्थित सभा में दी। साथ ही बताया कि लॉकडाउन के दौरान जो राशन निशुल्क दिया जाना था। वह भी संभवतः वितरित हो रहा है। खाद्य अधिकारी ने वितरण प्रणाली को ऑनलाइन प्रणाली के माध्यम से ही वितरण करने की बात कही व अवगत कराया कि राशन उन्हें ही राशन कार्ड धारी को दिया जा रहा है, उसे या उसके परिवार के किसी सदस्य को जो किसी प्रकार की आईडी लेकर आता है और उसका अंगूठा या थंब इंप्रेशन के माध्यम से वेरिफिकेशन होता हैं।

इस बात को लेकर पद्मश्री महेश शर्मा ने सभा को जानकारी देते हुए बताया कि थांदला और आसपास के कई गांव में यह राशन अब तक नहीं पहुंचा है। जब राशन वितरण थंब इंप्रेशन के माध्यम से होना बताया गया तब सभा में उपस्थित कैथोलिक डायसिस से फादर रॉकी ने इस बात का खंडन करते हुए कहा कि सर मुझे विगत 3 माह से राशन की दुकान से राशन लेने के मैसेज आ रहे हैं। जबकि मैंने अभी तक राशन कार्ड भी नहीं बनवाया है और ना ही मैं कभी किसी भी सोसायटी पर राशन लेने गया हूं, तो फिर मेरे नाम से यह राशन कौन ले रहा हैय फादर राकी ने इस बात का सबूत देते हुए मोबाइल पर अपने मैसेज भी बताएं। जिसमें यह साफदिख रहा था कि विगत 3 माह जनवरी, फरवरी ,और मार्च माह में राशन दिया गया है। जिसमें करीब 36 किलो गेहूं ,9 किलो चावल ,2 लीटर तेल, 1 किलो नमक आदि सम्मिलित थे। मोबाइल पर मैसेज में आरसी नंबर, दिनांक और दुकान का कोड भी नजर आ रहा है। प्रश्न यह उठता है कि जब थंब इंप्रेशन के माध्यम से परिवार के किसी सदस्य के आईडी देखकर ही यह राशन वितरण किया जाता है तो फिर फादर रॉकी के नाम से यह राशन कौन आहरित कर रहा है, जो राशन समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचना चाहिए। वह समाज के संपन्न व्यक्ति के नाम पर कौन इस प्रणाली का मजाक बना रहा है।

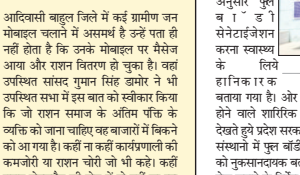

कलेक्टर मे बैठक में फादर रॉकी अपने मोबाईल पर आये मैसेज को बताते हुये। मोबाईल पर आया हुआ मेसेज।

वह कौन है, जो राशन गरीबों तक पहुंचना चाहिए, वह उन तक पहुंच नहीं पा रहा है। जिसके कारण प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह की योजना कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक वह राशन पहुंचे, योजना को असफल बनाने में लगा हुआ है। लेकिन कहीं न कहीं वितरण प्राणी की कमजोरी कहे, या गैर जिम्मेदाराना कार्यप्रणाली या फिर या किसी अन्य के नाम पर राशन चोरीं यह गंभीर जांच का विषय हैं। क्योंकि जिले का साक्षरता प्रतिशत कम है और कहीं ना कहीं आदिवासी बाहुल जिले में कई ग्रामीण जन मोबाइल चलाने में असमर्थ है उन्हें पता ही नहीं होता है कि उनके मोबाइल पर मैसेज आया और राशन वितरण हो चुका है। वहां उपस्थित सांसद गुमान सिंह डामोर ने भी उपस्थित सभा में इस बात को स्वीकार किया कि जो राशन समाज के अंतिम पंक्ति के व्यक्ति को जाना चाहिए वह बाजारों में बिकने को आ गया है। कहीं ना कहीं कार्यप्रणाली की कमजोरी या राशन चोरी जो भी कहे। कहीं राशन सेल्समैन की जेब में तो नहीं जा रहा या ट्रांसपोर्टर की जेब में तो नहीं। यह जांच का विषय है। अब देखना यह है कि जो गरीबों किसानो का अनाज खा रहा है आखिर वह है कौन ?

सभी जगह लगने वाले सेनेटाईज टनल होंगे बंद

प्रदेश सरकार ने कलेक्टर का दिये आदेश

माही की गूंज, झाबुआ।

कोरोना वायरस के दुष्प्रभाव को रोकने के लिए इन दिनों शासकीय अस्पतालों सहित सार्वजनिक स्थलो पर फुल बॉडी सेनेटाइजेशन के लिए टनल मशीनें व चौम्बर बनाने की होड सी लगी हुई है। जबकि विशेषज्ञों के अनुसार फुल बॉडी सेनेटाईजेशन करना स्वास्थ्य के लिये हानिकारक बताया गया है। ओर इन मशीनो से होने वाले शारिरिक दुष्प्रभावो को देखते हुये प्रदेश सरकार ने शासकिय संस्थानो में फुल बॉडी सेनेटाईजेशन को नुकसानदायक बताते हुये इस पर रोक लगाने के निर्देश भी 20 अप्रैल सोमवार को जारी कर दिये है। संचानलालय द्वारा जारी आदेश के अनुसार समस्त मुख्य चिकित्सा एव स्वास्थ्य अधिकारियो एवं नगरिय निकायों को निर्देश जारी किये गये है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन की एडवाईजरी के अनुसार स्वास्थ्य संस्थाओ में डिसइन्फेक्शन टनल अथवा चेम्बर बनाये गये है। जिसमें सोडियम हाइपोक्सोराईड या अल्कोहल का छिडकाव कर सेनेटाईजेशन किया जा रहा हैं जो मानव शरीर के लिये नुकसानदायक है। इससे शरीर के अंगो कपडो का रिसंक्रमण सुचारू रूप से नही हो पाता है तथा हाथ ऑखो मे जलन गले में खराश, चमडी रोग, उल्टी, फेफ्डो में इन्फेक्शन आदि हो सकता है। अतः इन मशीनो का उपयोग नही किया जावे। तथा उचित तो यही है कि इस भ्रम से दुर रहकर हाथो को बार बार धोने तथा सोशल डिस्टेसिंग का पालन ही प्रभावी साबित हो सकता है। अतः ये डिसइंन्फेक्शन टनल का उपयोग किसी भी अस्पताल या नगरिय निकायो मे नही किया जावे।

अब सवाल यह उठता है कि जब इस सेनेटाईज टनल कोरोना वायरस के प्रभाव को कोई कम नही करता है ओर साथ ही शरीर को कई गंभरी नुकसान पहुचाता है ऐसे मे प्रदेश में कई जिलो में इस टनल को लगाया गया था जिस पर जिले के जनप्रतिनिधियो के द्वारा इसका प्रचार प्रसार भी किया गया था ओर साथ ही इसकी जिम्मेदारी भी ली थीं। अब यह प्रश्न उठता है कि जब यह टनल शरीर के लिये इतना नुकसानदायक था तो इसकी जांच एवं पुष्टी पूर्व मे आखिर क्यो नही की गई। जनप्रतिनिधियो ने इसका प्रचार प्रसार कर किस आधार पर लोकार्पण किया ? क्या यह प्रदेश स्तर पर एक बडे घोटाले की ओर ईशारा करता है ? क्या अब जनप्रतिनिधि या वरिष्ठ अधिकारियों के द्वारा इसकी जिम्मेदारी लेगे ? ये जाच का विषय है।

जिला अस्पताल से हटाया गया टनल।

डोडा चूरा के साथ एक आरोपी को गिरफ्तार

माही की गूंज, सारंगी। संजय उपाध्याय

झाबुआ पुलिस अधीक्षक विनीत जैन, पेटलावद एसडीओपी बबीता बामनिया के मार्गदर्शन में सारंगी चौकी प्रभारी ने आरोपी कान्हा चारण निवासी कोटडा को अवैध रूप से 9 किलो 680 ग्राम डोडा चूरा ले जाते हुए पकड़ा। सारंगी चौकी प्रभारी श्याम कुमावत ने बताया कि आरोपी कान्हा चारण जो कि हिम्मतगढ़ माही नदी किनारे से होकर मोटरसाइकिल पर रतलाम की ओर से अवैध रूप से डोडा चूरा ले जा रहा था। तभी पुलिस को इसकी सूचना मिलने पर उसे गिरफ्तार किया गया। वहीं आरोपी से एक मोटरसाइकिल भी जब्त की गई। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। मिली जानकारी के अनुसार उक्त व्यक्ति लम्बे समय से इस क्षेत्र में नशे के कारोबार को अंजाम दे रहा था, लेकिन पुलिस के हत्थे नही चढ़ रहा था। लॉक डाउन की स्थिति में नशे का कारोबारी अगर बेखौफगांजे की इतनी बड़ी खेप ला रहा था, तो आम दिनों में क्या हालत रही होगी। माल कहां से आया और किससे खरीदा गया। इसकी जांच शंका के घेरे में हैं।

जिले में नेगेटिव जांच रिपोर्ट आने का सिलसिला जारी

माही की गूंज, झाबुआ। मंगलवार भी झाबुआ जिले के लिए मंगल रहा है। मंगलवार को 20 सेम्पल की जांच रिपोर्ट आई है। जिसमे से 19 रिपोर्ट नेगेटिव रही है व 1 सेम्पल रिजेक्ट हो गया है। अब 43 सेम्पल की जांच रिपोर्ट आना शेष है। जिसमे से 36 की जांच भोपाल और 7 सेम्पल की जांच इंदौर में होना है। अभी तक की स्थिति के अनुसार झाबुआ जिले से कुल 299 सेम्पल भेजे गए। जिसमें से 7 रिजक्ट हो गए। वही 249 सेम्पलों की जांच की गई। और सभी 249 सेम्पलों की जांच नेगेटिव आई है तथा शेष 43 सेम्पलों की जांच होना बाकी है। इस तरह आज की स्थिति में झाबुआ जिला पूरी तरह कोरोना मुक्त है तथा अभी तक इसे ग्रीन झोन में माना जा रहा है।

तेज हवा से पतरे उड़े, वृद्ध महिला घायल

माही की गूंज, खच्चरटोडी। ग्राम पंचायत खच्चरटोडी के ग्राम खालसा में करीब 3 बजे तेज आंधी चली। जिससे जुलियान पिता मडिया डामोर के कच्चे मकान की चद्दरें उठ गई। जिससे जुलियान की पत्नी कब्बु डामोर बुरी तरह से घायल हो गई। जिसे सरपंच प्रदीप गणावा जीवन ज्योति अस्पताल ले गये। मकान की चद्दरे गिरने से घर में खाने पीने सहित अन्य सामान भी क्षतिग्रस्त हो गया है। परिवार अत्यन्त गरीब है। शासन से मुआवजे की मांग की गई है। जुलियान पिता मडिया डामोर ने बताया कि करीब 3 बजे आंधी चलने से चद्दरें उठ गई। इसकी चपेट मे मेरी पत्नी आ गई। जिसे गम्भीर चोट आई है। पटवारी भावना नायक ने बताया है कि जानकारी मिली है कि ग्राम खालसा में मकान की चद्दरें उड़ गई है। मौके पर जाकर पंचनामा बना कर भेज देंगे।

कोयला खाली करते समय करंट लगने से मजदूर की मौत

माही की गूंज, थांदला। पेटलावद मार्ग पर शनि मंदिर के पास व्यापारी निलेश प्रजापति के यहां कोयला खाली करते समय मजदूर की करंट लगने से मौत हो गई है। थांदला थाना दीवान प्रधान आरक्षक जगदीश नायक ने बताया कि व्यापारी द्वारा ट्रक आरजे 09 6सी 6712 द्वारा ईंट पकाई में उपयोग होने वाला कोयला लाकर खाली कराया जा रहा था। इसमें चार मजदूरों में से एक 42 वर्षीय रालू पिता नरसिंग चरपोटा निवासी छोटा जुलवानिया ट्रक के ऊपर चढ़ा हुआ था। इस दौरान ऊपर जा रही विद्युत केबल से करंट लग गया और वह वहीं गिर गया। मौके पर मौजूद अन्य मजदूर व अन्य लोग उसे थांदला सिविल अस्पताल ले गए, जहां मृत घोषित कर दिया गया। थांदला थाना प्रभारी बीएल मीणा के निर्देश पर प्रधान आरक्षक अमित बघेल ने मौके पर पहुंचकर मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

लॉकडाउन के नियमों की धज्जियां उड़ाई गई

माही की गूंज, खवासा।

पूरे देश में कोविड-19 के संक्रमण की रोकथाम हेतु बनाए गए व्यापक नियमों का पालन किया जा रहा है। देश सदी की सबसे बड़ी त्रासदी से दो-दो हाथ कर रहा है। कई जगहों पर धर्म, जाति, संप्रदाय से ऊपर उठकर देशहित और मानवता को तरहीज दी जा रही है। संकट की इस घड़ी में गरीबों, जरूरतमंदों और असहाय की सहायता हेतु हजारों हाथ आगे आए हैं, लेकिन कुछ चिंताजनक तस्वीर भी देश के सामने आई है, जहां शासन के दिशा निर्देशों का मखौल उड़ाया गया है और लोगों ने स्वहित को प्राथमिकता दी है।

कुछ ऐसा ही मामला थांदला जनपद के मादलदा के बाद अब बेड़ावा की आदिम जाति सहकारी संस्था की दुकान में देखने को मिला। जहां न केवल शासन के सामाजिक दूरी (सोशल डिस्टेंसिंग) के नियमों का माखौल उड़ाया गया, वरन गरीबों का हक छीनने का प्रयास भी किया गया। एक तरफ राज्य शासन ने निर्णय लिया कि, पात्रता रखने वाले हितग्राही को लॉकडाउन के चलते खाद्यान्न की कोई परेशानी ना हो इसके लिए उन्हें 3 माह का राशन एक मुश्त दे दिया जाए। वहीं जिसके पास पात्रता-पर्ची न हो उसे भी खाने के लिए खाद्यान्न गेहूं, चावल आदि निःशुल्क दिया जाए। राशन वितरण के समय सोशल डिस्टेंसिंग का अनिवार्यतः पालन किया जाए, लेकिन बेड़ावा सोसाइटी में भी सेल्समैन ने ऐसे किसी भी नियम का पालन नहीं किया। संस्था के जवाबदार ऐसे समय में भी भ्रष्टाचार की डुबकी लगाकर सिर्फ शराब पार्टियों का जश्न मना रहे है और अपने हाल में मदमस्त है। जिसके कारण संस्थाओ कि दुकानों पर अनियमिताएं देखने को सरेआम मिल रही है, जो किसी बड़े खतरे का आभास भी करवा रही है।

सेल्समेन गुड्डु नायक खाद्यान में हेरा-फेरी कर लोगो को खाद्यान नही दिया तो ग्रामवासि हुए आक्रोशित तो सेल्समेन कहता रहा तुमसे जो हो वो कर लो।

मादलदा के बाद ग्राम पंचायत बैडावा कि संस्था में सोशल डिस्टेंसिंग की इस तरह से धज्जिया उडती देखी गई।

बेडावा में संस्था की दुकान पर भीड़ एकत्रित कर ली, यही नहीं पात्रता-पर्ची वालों के हस्ताक्षर करवा लिए और खाद्यान्न नहीं दिया। तथा बिना पात्रता-पर्ची वालों को खाद्यान्न नहीं आया यह कह कर गरीब एवं पीड़ित परिवार को रवाना करने का प्रयास किया। तो खाद्यान्न लेने आए परिवार ने खाद्यान्न नहीं मिलने पर खाद्यान्न की मांग की, तो गांव के कुछ युवक भी पीड़ित परिवार के पक्ष में बात कर उन्हें खाद्यान्न देने की मांग करते रहे। मामले को तूल पकड़ता देख सेल्समैन गुड्डु नायक ताला लगाकर रफ्फू चक्कर भी हो गया। मामले का पूरा वीडियो भी युवकों ने बनाकर उसे वायरल भी किया पर अधिकारी ने कोई कार्रवाई नहीं की।

गूंज असर पर अधिकारियो की कार्यवाही का जवाब नहीं

बता दे कि गूंज ने पिछले अंक में 'मादलदा में दो माह का खाद्यान्न हुआ विलुप्त' 'संस्थाओं में खाद्यान्न वितरण करते समय नहीं हो रहा है सोशल डिस्टेंसिंग का पालन' शीर्षक के साथ समाचार प्रकाशित किया था। जिसके बाद खाद्य आपूर्ति अधिकारी एवं प्रभारी तहसीलदार ललिता गडारिया जांच हेतु मादलदा पहुंचे। जांच में माही की गूंज के समाचार पर मोहर लगी और जांच में पाया कि, पूर्व में 4 माह तक खाद्यान्न वितरीत सेल्समैन ने नहीं किया। गूंज को ललीता गडारिया ने बताया की मौके पर ग्रामीणों द्वारा शिकायत सही पाई गई। पिछले 3-4 माह तक खाद्यान्न वितरित नहीं किया गया। जांच में खाद्य अधिकारी भी थे, जिन्होंने नोटीस जारी किया है कि, खाद्यान्न वितरित नहीं किया तो यह खाद्यान्न कहां गया? अगर खाद्यान्न में हेरा-फेरी पाई जाती है तो संबंधित सेल्समैन के विरूद्ध एफआईआर दर्ज होगी।

कनिष्ठ खाद्य आपूर्ति अधिकारी एसके तोमर ने जानकारी दी कि, संबंधित अधिकारी मौके पर जांच हेतु गए थे। जांच में पाया कि लोगों को पूर्व में राशन नहीं मिला है। सेल्समैन को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है।

सबसे बड़ी बात देखने में यह आई है कि, जिस संस्था कि दुकान का समाचार गूंज ने प्रकाशित किया। वहा जांच हेतु टीम पहुंची परन्तु मादलदा कि तर्ज पर ही बड़े रूप में ग्राम पंचायत बेडावा में भी कुछ ऐसा ही विवादित, खाद्यान्न की हेरा-फेरी एवं सोशल डिस्टेंसिंग की धज्जियां उड़ाने का मामला सामने आया। लेकिन अधिकारी बेडावा में जांच करने नहीं पहुंचे। क्षेत्र में अधिकारियों की सांठगांठ एवं खाद्यान्न की हेरा-फेरी करने वाले इन भ्रष्टों की इतनी मोटी चमडी है कि जांचकर्ता अधिकारी मात्र जांच के नाम पर खानापूर्ति ही करते है। बेडावा में खाद्यान्न नहीं मिलने के कारण आक्रोशित परिवारों ने संयम रखा। जिसके कारण कोई बड़ी घटना घटित नही हुई। अगर खाद्यान्न वितरण में अभी भी संस्था के अधिकारी भ्रष्टाचार को बढावा देकर खाद्यान्न वितरण नहीं करेंगे तो ग्रामीणों का आक्रोश फूटना तय है।

लेकिन हम अभी भी यही कहेंगे कि, संकट की इस घड़ी में शासन के दिशा निर्देशों के साथ ही इंसानियत की भी आवश्यकता है। अगर हमें कोरोना संक्रमण जैसी महामारी को हराना है तो निश्चित रूप से एकजुट होने के साथ ही मानवीय मूल्यों का भी पालन करना होगा। तभी हमारी विजय संभव है।

भगवान राम का चित्र बना कोरोना के विनाश का दिया संदेश

माही की गूंज, झाबुआ।

जिले के रानापुर निवासी युवा चित्रकार, जो उल्टे चित्र बनाने के लिए देशभर में प्रसिद्ध है। उन्होंने देश में लगे संपूर्ण लॉकडाउन के बीच अपने घर पर ही रहकर एक उम्दा चित्रकारी की है। जिसमें उन्होंने मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्री राम का चित्र बनाकर यह संदेश दिया है कि कलयुग में भगवान श्री राम ही कोरोना वायरस जैसी महामारी का पूरी तरह से अंत करेंगे। चित्रांक ने चर्चा में बताया कि देश में वर्तमान में कोरोना संक्रमित मरीजों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। कई संक्रमित मरीजों भी मृत्यु भी हो रहीं है। वर्तमान कलयुग में भगवान श्री राम ही कोरोना वायरस जैसी महामारी के तीर का अपना बाण चलाकर पूरी तरह से अंत करेंगे। देश में फिर से राम-राज्य आएगा और देश में फिर से खुशहाली और सुख-शांति का वातावरण निर्मित होगा। चित्रांक बैरागी ने यह चित्र करीब 15 मिनिट में तैयार किया, जिसका वीडियों उन्होंने सोशल मीडिया पर भी वायरल किया।

युवा चित्रकार चित्रांक बैरागी ने मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्री राम का सुंदर चित्र बनाया।

देवीय प्रकोप से रक्षा के लिए व्रत

माही की गूंज, खवासा।

विश्वव्यापी महामारी कोविड-19 के चलते दुनियाभर के वैज्ञानिक इसके इलाज हेतु टीका, वैक्सीन आदि की खोज में जुटे हैं और तमाम तरह की सावधानियों के साथ ही सामाजिक दूरी ही इसके बचाव का एकमात्र उपाय बतला रहे हैं। इसीलिए देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लॉकडाउन की घोषणा में तनिक भी देरी नहीं की। यही नहीं 21 दिन के बाद भी इसे 3 मई तक आगे बढ़ा दिया।

लेकिन भारत एक धार्मिक विविधताओं का देश है। यहां पर अलग-अलग मान्यताओं के लोग है। पूरा विश्व इस वायरस को महामारी मान रहा है। वही खवासा के आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में इसे देवीय प्रकोप माना जा रहा है। उनका मानना है कि कुलदेवी मां, शीतल माता कुछ कारणों से हमसे रूठ गई है और उनके प्रकोप का सामना देशवासी कर रहे हैं। देवीय प्रकोप का सामना उनके गांव के लोगों को न करना पड़े और यह बीमारी उनके गांव तक ना पहुंचे, इसके लिए गांव की महिलाएं व्रत कर 5 दिन के उपवास कर रही है। शीतला माता को जल चढ़ा रही है और 5 दिन के उपवास के पश्चात कुलदेवी माताजी की पूजा अर्चना कर माताजी के पुरे श्रृंगार का सामान, नारियल, अगरबत्ती के साथ अनाज व दलहन को बाफजिसे आदिवासी भाषा में बाकला कहा जाता है चढ़ाकर अपने व अपने परिवार के साथ गांव व क्षेत्र की रक्षा की कामना कर रही है।

यही नहीं लॉकडाउन के चलते व्रत करने वाली महिलाए बाजारों में पैदल चलकर पहुंच रही है और यहां उन्हें महंगे दामों पर पूजन सामग्री व नारियल मिल रहे हैं। बावजूद इसके आस्था अटूट है, वे महंगी पूजा सामग्री भी खरीद कर माताजी को प्रसन्न करने का प्रयास कर रही है और शायद यही आस्था ही हमें मजबूत बनाती है और कोरोना जैसी महामारी से लड़ने के लिए शासन के दिशा निर्देशों के अतिरिक्त मजबूत इच्छाशक्ति की भी आवश्यकता है और हमारी यही आस्था हमें मजबूती के साथ दृढ इच्छाशक्ति भी प्रदान करती है।

विधायक भूरिया ने मुख्यमंत्री को पत्र लिख की मांग, लॉकडाउन में फंसे जिले के मजदूरों को अपने घर पहुंचाए

माही की गूंज, झाबुआ।

करोना संक्रमण के कारण देश व्यापी लॉक डाउन के चलते राज्य के बाहर झाबुआ जिले के मजदूरों को उनके निवास पर पहुंचाने की व्यवस्था के लिए क्षेत्रीय विधायक कांतिलाल भूरिया ने मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को पत्र लिखा है। भूरिया ने अपने पत्र में मुख्यमंत्री को अवगत कराया कि वर्तमान में करोना संक्रमण महामारी के कारण लॉकडाउन आगामी 3 मई तक बढ़ाया गया है। झाबुआ, अलीराजपुर, रतलाम जिले के कई मजदूर लॉकडाउन के कारण विगत 1 माह से गुजरात राज्य एवं अन्य राज्यों के विभिन्न जिलों में फंस गए हैं। यह मजदूर वहां पर दिहाड़ी मजदूरी करते थे। वर्तमान में बेरोजगार हैं। सामान खरीदने के लिए उनके पास पैसा भी खत्म हो गया है। उनकी हालत खस्ता हो गई है। मजबूर हो कर इन मजदूरों के परिवार एवं उनके साथियों द्वारा फोन कर एवं वीडियो बनाकर मुझे अवगत कराया गया कि उन्हें वहां पर खाना व राशन प्राप्त नहीं हो रहा है। बच्चों से लेकर बड़े भी परेशानी में अपना जीवन यापन कर रहे है। उन्हें वहां न तो राशन मिल रहा है, न ही वहां कोई मूलभूत सुविधा प्राप्त हो रही है। ऐसे में उन्हें अपने निवास स्थान पर पहुंचाना अत्यंत आवश्यक हो गया है भूरिया ने पत्र में आगे कहा कि अन्य राज्यों की सरकारों द्वारा अपने-अपने क्षेत्र के निवासियों को उनके मूल स्थान पर पहुंचाने हेतु सार्थक पहल की गई है एवं उन्हें सकुशल घर पहुंचाया गया है।

भूरिया ने मुख्यमंत्री को जिला प्रशासन से संपर्क स्थापित कर जिले की जनपद पंचायत के माध्यम से पलायन कर गए मजदूरों की जानकारी प्राप्त कर उन्हें अपने अपने गृह निवास तक पहुंचाने की मांग की है। भूरिया ने मुख्यमंत्री से अनुरोध किया कि अन्य राज्यों की तर्ज पर हमारे जिले के मजदूरों को भी आवश्यक जांच उपरांत अपने घर में पहुंचाने संबंधी आवश्यक कार्य सुनिश्चित कर अपने-अपने परिवारों से मिलाने का कार्य करें। उक्त जानकारी जिला कांग्रेस प्रवक्ता हर्ष भट्ट ने दी।

लॉकडाउन के चलते सामूहिक रूप से नहीं मनेगी भगवान परशुराम जयंती

माही की गूंज, झाबुआ।

ब्राह्मण समाज के आराध्य देव भगवान परशुराम की जयंती हर वर्ष अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर समाजजनों पारंपरिक रूप से मनाई जाती है। नगर ब्राह्मण समाज के हर्ष भट्ट, सुनील शर्मा एवं अश्विन शर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि समाज के समाज के संरक्षक पंडित विद्याराम शर्मा ,डॉ. केके त्रिवेदी, पंडित राजेंद्र जोशी, पंडित भागवत शुक्ला, श्रीमती सुशीला भट्ट, महिला पदाधिकारियों एवं सर्व ब्राह्मण समाज के वरिष्ठ सदस्य गणों एवं युवा संगठन द्वारा सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि पूरे देश में कोरोना संक्रमण का प्रकोप चल रहा है। पूरे देश में लॉक डॉउन 3 मई तक के लिए लागू कर दिया गया है । झाबुआ में धारा 144 लागू भी लागू है । कोरोना संक्रमण से बचने के लिए सोशल डिस्टेंसिंग का पालन भी करना जरूरी हो गया है। इस कारण इस वर्ष भगवान परशुराम जयंती समारोह आयोजित नहीं किया जा सकेगा। सर्व ब्राह्मण समाज के वरिष्ठ जनों एवं युवा संगठन के पदाधिकारियों ने इस आयोजन को निरस्त करने का निर्णय लिया है। साथ ही उन्होंने सभी समस्त समाजजनों से अपील की है कि अक्षय तृतीया के रोज भगवान परशुराम की घर में ही विधि विधान से पूजा अर्चना करें एवं दिनांक 25 एवं 26 अप्रैल की शाम को अपने अपने घरों के बाहर रंगोली बनाकर दीपक जलाकर भगवान परशुराम जयंती को मनाए तथा लॉक डाउन का शत-प्रतिशत पालन करें। अपने व अपने परिवार के स्वास्थ्य का ध्यान रखें एवं घर पर रहे घर पर रहकर करोना संक्रमण से मुक्ति के लिए भगवान परशुराम से प्रार्थना करे ।

विधायक के नेतृत्व में कार्यकर्ता ग्रामीण अंचल में बांट रहे मास्क

माही की गूंज, पेटलावद/बनी। विधायक वालसिंह मेडा द्वारा विधायक निधि से एक लाख मास्क पूरे विधानसभा क्षेत्र में वितरित किए जा रहे हैं। कांग्रेसी कार्यकर्ता प्रत्येक पंचायतों में जाकर ग्रामीण लोगों को मास्क का वितरण कर रहे हैं। पेटलावद विधायक वालसिंह मेडा के नेतृत्व में विधायक प्रतिनिधि जीवन ठाकुर, मन्नालाल हामड, बबलू राठौड़, नाना गोयल, विक्रम चावड़ा, चंदू राठौड़ आदि कांग्रेसी कार्यकर्ताओं द्वारा ग्रामीणों के बीच पहुचकर उन्हें मास्क वितरण के साथ ही शोसल डिस्टेसिंग के बारे में समझाया जा रहा है तथा ग्रामीणों से अपील की जा रही है कि वह घर में रखकर लॉक डाउन का पालन करें, भीड़-भाड़ वाले इलाके में जाने से बचें, लगातार साबुन से हाथ धोएं तथा सर्दी, खांसी, बुखार आने पर चिकित्सक को दिखाय। इसी के साथ पूरे विधानसभा क्षेत्र में सेनिटाइजर का छिड़काव भी किया जा रहा है। कोरोना को हराने के लिए घर पर रहकर सरकार की मदद करने की अपील भी की है।

कोरोना संक्रमित क्षेत्रों को छोड़ शेष ग्राम पंचायतों में प्रारंभ हुए मनरेगा के काम

माही की गूंज, झाबुआ। विकास साबलिया

प्रदेश के ग्रामीण इलाकों में कोविड-19 के संक्रमण की संभावना वाले क्षेत्रों को छोड़कर शेष ग्राम पंचायतों में मनरेगा के काम 20 अप्रैल से प्रारंभ कर दिए है। भारत सरकार की गाइडलाइन के अनुसार सामाजिक दूरी का पालन करते हुए स्थानीय परिस्थितियों का आंकलन कर जल संरक्षण, जल संवर्धन, कृषि, सिंचाई गतिविधियों, व्यक्तिमूलक कार्य प्रारंभ हो गए है। कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए कार्य-स्थल पर आवश्यक सुरक्षा इंतजाम करने और श्रमिकों को जागरुक करने के लिए पेम्पलेट बांटने के साथ जिलों द्वारा भारत सरकार की गाइडलाइन के अनुसार कार्य कराने एवं प्रतिदिन मेट द्वारा कार्य-स्थल पर आवश्यक इंतजाम की चेकलिस्ट जारी करने के भी निर्देश है।

ग्रीन जोन में है इसलिए मनरेगा के काम शुरू

झाबुआ जिले में कभी तक एक भी कोरोना वायरस संक्रमित व्यक्ति नहीं है, इसलिए सेफहै। इसके कारण झाबुआ जिले की ग्राम पंचायतों में मनरेगा के काम 20 अप्रैल से शुरू करने के निर्देश दे दिये गये है। हालांकि जिले में मनरेगा की धीमे रफ्तार को देखते हुई वरिष्ठ अधिकारियों ने अधिक संख्या में मनरेगा मजदूरों को रोजगार देने के निर्देश दिए है। ताकि लॉकडाउन मे बेरोजगार मजदूरो को काम मिल सके।

जिला स्तर से करना होगा अनुपालन

जिले के किसी भी क्षेत्र को कन्टेनमेन्ट घोषित होने पर किसी भी स्थिति में उस क्षेत्र में मनरेगा के कार्य नहीं कराए जाएंगे। जिले में कोरोना संक्रमण की परिस्थिति के अनुरूप ही कार्य कराने होंगे। मनरेगा के कार्यों को प्रारंभ करते समय व्यक्तिमूलक कार्य, स्वच्छता संबंधी कार्य, सिंचाई, कृषिमूलक कार्य, जल संरक्षण कार्यों को प्राथमिकता दी गई है । स्वच्छाग्राहीध् स्व-सहायता समूह के सदस्य को मेट बनाए जाने में प्राथमिकता दी गई है। मनरेगा कार्यों पर नियोजित होने वाले श्रमिकों के स्वास्थ्य परीक्षण के लिए कलेक्टर द्वारा स्वास्थ्य विभाग को निर्देश दिए गए हैं।

कार्यस्थल पर कोरोना संक्रमण से बचाव के करने होगे इंतजाम

कार्य-स्थल पर श्रमिकों को कोरोना संक्रगमण से बचाने के लिए जागरुक करने के साथ श्रमिकों को कार्य-स्थल पर मुंह एवं चेहरे को ढकने के लिए मास्क या गमछा लगाना अनिवार्य है । श्रमिकों को कार्य आवंटन इस प्रकार करना होगा, जिसमें श्रमिकों के बीच 6 फिट से अधिक दूरी हो। साथ ही, कार्य-स्थल पर श्रमिकों को धूम्रपान, गुटका, तम्बाकु सेवन और थूकना पूर्णतरू प्रतिबंधित है । इसके अलावा, कार्य-स्थल पर पानी और साबुन का इंतजाम तथा श्रमिकों को नियमित अंतराल पश्चात हाथ धोना होगा। श्रमिक द्वारा कार्य के बाद वापस घर जाने पर उसके कपड़ों को साबुन या डिटर्जेंट से धोकर स्नान करना होगा, जिससे कोरोना संक्रमण से बचा जा सके।

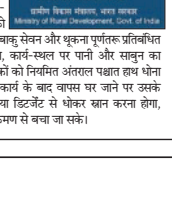

जिला सीईओ ने निःशुल्क मास्क बनाकर वितरण करने वाली महिला को दिया धन्यवाद

माही की गूंज, पेटलावद।

गूंज द्वारा ग्राम बरवेट की महिला प्रेमलता पाटीदार द्वारा मशीन पर मास्क बना कर फ्री में वितरित करने का समाचार प्रमुखता से प्रकाशित किया था। लॉक डाउन की स्थिति में ग्राम पंचायतों के दौरे पर रहे पंचायत सीईओ संदीप शर्मा बरवेट क्षेत्र के दौरे पर पहुंचे थे। बरवेट पहुंचने के बाद निशुल्क मास्क बनाकर वितरण करने वाली प्रेमलता पाटीदार और भगवती पाटीदार के घर पहुंचे। घर पहुंचने के बाद इन दोनों को धन्यवाद दिया और कहा कि कोरोना जैसी महामारी के कारण आज देश संकट से गुजर रहा है। ऐसे समय आपने मास्क बनाकर ग्रामीणों को निशुल्क वितरित करने का जो कार्य कर रही है, वह सहरानीय है। इस जानलेवा बीमारी के बारे में ग्रामीणों को जगरूक भी कर रही है। इसके लिए आप दोनों धन्यवाद और साधुवाद के पात्र है। जब अपर कलेक्टर इनके घर पहुंचे तब ये दोनों मास्क बनाने का कार्य कर रही थी। उन्होंने मास्क को देखा और बताया कि रेडीमेड मास्क से बढ़िया हाथों से सिलाई किया हुआ है। इस पर प्रेमलता पाटीदार ने कहा कि इस मास्क को दिन भर इस्तेमाल कर रात में धोकर सूखा सकते है, और दूसरे दिन फिर इस्तेमाल कर सकते है। प्रेमलाता पाटीदार ने आठ से दस मास्क अपर कलेक्टर को अपने हाथ से बनाकर मास्क भी दिए। प्रेमलता पाटीदार ने बताया कि हमारे पास इलास्टिक उपलब्ध नहीं हो पा रहा है। रतलाम में इलास्टिक मिल सकता है। अगर आप इसकी व्यवस्था करवा दे तो हम दिन रात करके हजारो की तादात में मास्क बनाकर प्रशासन को दे सकते है। इस पर जिला पंचायत सीईओ संदीप शर्मा ने कहा कि हम इलास्टिक ओर कपड़ा उपलब्ध करवाएंगे। या रतलाम से इलास्टिक लाने के लिए का पास बनवा देंगे।

लॉक डाउन लगने के बाद तक कम से कम तीन हजार से अधिक मास्क बनाकर निशुल्क वितरित कर दिए। यह खबर अखबारों की सुर्खियां बनी। जिला पंचायत सीईओ संदीप शर्मा बरवेट आए तो इन दोनों बहनों के घर धन्यवाद देने पहुच गए। कोरोना महामारी के समय मे कई लोग अपने अपने स्तर पर आम जन का सहयोग कर रहे हैं यही इस प्रकार से अधिकारी वर्ग यदि कोरोना कर्मवीरों का सम्मान करेगे तो जरूर इनका उत्साह वर्धन होगा।

संपादकीय

लॉकडाउन की निरंतरता न तो व्यावहारिक, न ही स्थायी समाधान

अब लॉकडाउन के बावजूद हमारे सामने दो स्थितियां हैं। एक में कर्फ्यू की तरह तालाबंदी के आदेश हैं, तो दूसरी स्थिति में कुछ राज्यों ने ढील देने की शुरुआत की है। जरूरी सेवाओं और खाद्यान्न की आपूर्ति यथावत रहेगी। सरकारें और सामाजिक संस्थाएं भी भोजन और राशन मुहैया करा रही हैं। कुछ अपवाद भी हो सकते हैं। लॉकडाउन को तो अंततः खोलना ही पड़ेगा, क्योंकि करीब तीन ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था में लॉकडाउन की निरंतरता न तो व्यावहारिक है और न ही स्थायी समाधान है। हम पहली बार ही 40 लंबे दिनों का लॉकडाउन देख और झेल रहे हैं। यहां तक कि भारत ने जितने भी युद्ध लड़े, उनके दौरान भी लॉकडाउन घोषित नहीं किए गए। लॉकडाउन के बावजूद और कोई भी लक्षण न होने के बावजूद देश की राजधानी दिल्ली में 186 लोग कोरोना संक्रमित पाए गए। उनमें संक्रमण का एक भी लक्षण नहीं था। यह एक खतरनाक संकेत है। लॉकडाउन के बावजूद दिल्ली के ही तुगलकाबाद एक्सटेंशन इलाके में एक संक्रमित व्यक्ति ने 39 अन्य लोगों को संक्रमित कर दिया। लॉकडाउन के बावजूद कुछ संक्रमित लोग सामाजिक और सार्वजनिक रूप से भोजन बांटते रहे हैं। उन्होंने न जाने कितनों को संक्रमित कर दिया होगा? लॉकडाउन के बावजूद देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में हजारों मजदूर सड़क पर उतर आए, वे पैदल ही राष्ट्रीय राजमार्गों पर अपने गांव, घर लौटते देखे जा सकते हैं, महाराष्ट्र के पालघर इलाके में एक भीड़ दो साधुओं और उनके ड्राइवर को पीट-पीट कर मार देती है। देश भर में कोरोना योद्धाओं पर हमलों की तो अनेक घटनाएं हो चुकी हैं। क्या यही लॉकडाउन का औचित्य है? अकेले मुंबई महानगर में ही कोरोना संक्रमितों की संख्या 2700 को पार कर चुकी है, जबकि दिल्ली में यह संख्या 2000 को लांघ चुकी है। आंकड़े हर पल, हर दिन बढ़ते जा रहे हैं। इस दलील को एक हद तक ही स्वीकार किया जा सकता है कि चार लाख से ज्यादा टेस्ट किए जा चुके हैं। हर रोज औसतन 28-30 हजार टेस्ट किए जा रहे हैं। अमरीका, साउथ कोरिया, सिंगापुर, ताइवान, स्पेन और जर्मनी आदि देशों की तुलना में हमारे टेस्ट बेहद कम हैं। हम अब 10 लाख की आबादी पर औसतन 291 टेस्ट कर रहे हैं, जबकि अन्य देशों का औसत तो हजारों में है। कल्पना करें कि लॉकडाउन के बीच ही संक्रमितों की संख्या 17,000 को पार कर चुकी है, लेकिन जब हमारे टेस्ट एक करोड़ तक पहुंचेंगे, तो कोरोना से कितनी आबादी बीमार होगी और कितनी मौतें हो चुकी होंगी। दरअसल लॉकडाउन के मायने शहरों की कुछ संपन्न, पढ़ी-लिखी और मजबूरन अनुशासित आबादी तक ही सीमित हैं। चूंकि 20 अप्रैल से केंद्र सरकार, संसद सचिवालय और कुछ राज्यों ने लॉकडाउन में ढील की घोषणा करते हुए आर्थिक गतिविधियों को जारी रखने के फैसले किए हैं। सरकारी दफ्तर भी खोले जा रहे हैं। खेतों में किसान, मजदूर भी काम कर रहे हैं। ईंट-भट्ठों और चुनिंदा निर्माण-स्थलों पर मजदूरों की भीड़ काम करना शुरू करेगी, तो यह सब सरकारों की आर्थिक मजबूरियां ही हैं। यदि इन हालात में लॉकडाउन खोलने के जोखिम उठाए जा सकते हैं, तो कुछ बेहद कड़ी शर्तों के साथ सार्वजनिक परिवहन की भी आंशिक शुरुआत की जा सकती है। देश की राजधानी दिल्ली में सभी 11 जिले बंद हैं और वहां 79 हॉट स्पॉट तय किए गए हैं। इसी तरह आर्थिक राजधानी मुंबई में भी बहुत कम ढील दी गई है। इन दोनों महानगरों में सबसे ज्यादा संक्रमण फैल रहा है। दिल्ली में तो केंद्र सरकार, सभी दूतावास, सर्वोच्च न्यायालय और पंद्र सब कुछ उपलब्ध है, लेकिन लॉकडाउन के बावजूद संक्रमण गतिमय होकर फैल रहा है, तो खतरा मौजूद है कि देश कोरोना विस्तार के तीसरे चरण में प्रवेश कर सकता है। वह स्थिति अमरीका, इटली, स्पेन सरीखे देशों वाली होगी, जब सड़कों पर लाशें ही नजर आएंगी। बेशक लॉकडाउन के जरिए उस स्थिति पर हमने नियंत्रण पाया है, ऐसा विश्व स्वास्थ्य संगठन का भी आकंलन है, लेकिन लॉकडाउन की संपूर्ण सार्थकता सामने क्यों नहीं आ पा रही है? हम आर्थिक रूप से भी मजबूर हो जाएं और लॉकडाउन के मायने भी अधूरे ही रहें, तो फिर इस तालाबंदी को समाप्त करने और चरणबद्ध तरीके से नई शुरुआत करने के फैसले क्यों न लिए जाएं।

वुहान के बाजार में हम सब

गोपालकृष्ण गांधी
पूर्व राज्यपाल

गांधीजी शायद ही 'पैंडेमिक' यानी वैश्विक महामारी शब्द से परिचित होंगे। उन्होंने तो कभी 'इकोलॉजी' यानी पारिस्थितिकी शब्द का इस्तेमाल भी नहीं किया। फिर भी, बहुत कम लोग ऐसे हैं, जो इन शब्दों के मूल अर्थों को गांधीजी से बेहतर जानते होंगे।

गांधी को महामारी का अनुभव दक्षिण अफ्रीका के दिनों में हुआ था, जब जोहानिसबर्ग के नजदीक उस इलाके में प्लेग फैला, जहां खदान-मजदूर रहा करते थे। वह 1904 का फरवरी माह था। अपनी आत्मकथा में गांधी लिखते हैं, एक रात 23 खदान-मजदूर 'प्लेग से गंभीर बीमार होकर' अपने क्वार्टर में वापस लौटे। गांधी के सहयोगी मदनजीत व्यावहारिक ने 'एक खाली पड़े घर का ताला तोड़ा और वहां सभी 23 मजूदरों को रखा'। सूचना मिलने पर गांधी साइकिल से उस जगह पर पहुंचे और टाउन क्लर्क (निगम आयुक्त के बराबर के अधिकारी) को इसके बारे में लिखा। उन्होंने उसे बताया कि किन परिस्थितियों में इस निजी संपत्ति को कब्जे में लिया गया और इस गैर-कानूनी कदम को उठाने की जरूरत आखिर क्यों आन पड़ी? इसके बाद, उन दोनों ने एक तमिल चिकित्सक डॉ विलियम गॉडफ्रे को बुलाया, जो जोहानिसबर्ग में ही प्रैक्टिस किया करते थे।

गॉडफ्रे ने काफी संजीदगी दिखाई। नर्स और डॉक्टर, दोनों के रूप में वह भरसक अपनी पेशेवर जिम्मेदारी का निर्वहन करने लगे। मगर और अधिक मदद की दरकार थी। लिहाजा गांधी ने अपने लॉ ऑफिस के चार भारतीय नौजवानों को आने को कहा। वे चारों युवक ना-नुकुर किए बिना तुरंत आ गए। गांधी लिखते हैं, 'वह एक भयानक रात थी। सावधानी बरतने और देखभाल करने की रात थी।' देखभाल या नर्सिंग वह जिम्मेदारी थी, जिसमें गांधी दक्ष थे, लेकिन ब्लैक प्लेग उनके अनुभव से परे था। मगर डॉक्टर गॉडफ्रेके साथ उन्हें और उनके तमाम सहयोगियों को मरीजों को 'उनकी मरजी के मुताबिक, दवा की खुराक देने और उनके बिस्तर को साफ-सुथरा रखने, और उनके हौसले को बनाए रखने के लिए' जुट जाना था। गांधी लिखते हैं, 'नौजवानों के प्रतिबद्ध उत्साह और निडरता का सुखद फल मिला' और वह इसे देखकर अभिभूत हुए।

यदि गांधी ने प्लेग की इस घटना में असाधारण देखभाल का उदाहरण पेश किया, तो एक अन्य घटना में उन्होंने अत्यधिक कठोरता भी दिखाई। यह 1926 की बात है, जब अहमदाबाद रेबीजग्रस्त आवारा कुत्तों से बुरी तरह हलकान था। यंग इंडिया में महात्मा गांधी लिखते हैं, 'रोगाणुनाशक द्वारा रोगाणुओं को मारने का कर्तव्य हम बखूबी समझते हैं। यह बेशर्क हंसा है, फिर भी यह हमारा कर्तव्य है... पागल कुत्ते को मारना तुलनात्मक रूप से कम हिंसा है... शहरवासी अपने जीवन की सुरक्षा के अधिकारी हैं... अगर वे कुत्ते को मारते हैं, तो वे पाप जरूर करेंगे, लेकिन अगर नहीं मारेंगे, तो महापाप करेंगे।' और फिर, उन्होंने पागल कुत्तों को मारने के लिए अपना स्पष्ट और मजबूत समर्थन दिया। इन दोनों ही घटनाओं से उस सवाल का साफजवाब मिल जाता है, जो इन दिनों ज्यादातर लोग पूछ रहे हैं कि अगर आज गांधी होते, तो वह क्या करते?

महात्मा गांधी की तरह हम भी उल्लसित हो सकते हैं, क्योंकि हम देख रहे हैं कि सन 1904 में जोहानिसबर्ग में लोगों ने जिस मूल हथियार से प्लेग रोग को परास्त किया था, आज उसी हथियार से दुनिया भर में कोरोना वायरस के खिलाफलड़ाई लड़ी जा रही है। डॉक्टर प्रकाश गट्टा का अद्भुत उदाहरण तो हमारे सामने है। गट्टा वाशिंगटन के टैकोमा में भारतीय मूल के सर्जन हैं। वह भी कोरोना वायरस की चपेट में आ गए थे, लेकिन उन्होंने पूरी मजबूती से इससे लोहा लिया, अस्पताल से वापस घर लौटे और फिर अपने कर्तव्य में जुट गए। वह मरीजों को बताते हैं कि एक रोगी के रूप में उन्होंने किस तरह से कोरोना वायरस पर जीत हासिल की।

प्रकाश गट्टा की तरह पूरे महाद्वीप में कई लोग काम कर रहे हैं। भारत में हमारे पास राजनेता, नौकरशाह, चिकित्सा पेशेवर, स्वास्थ्यकर्मी, लैब असिस्टेंट, नर्स, पुलिसकर्मी (महिला पुलिसकर्मी भी), सफाईकर्मी के रूप में तमाम ऐसे असाधारण उदाहरण मौजूद हैं, जिन्हें हीरो के अलावा कुछ और नहीं कहा जा सकता है। हम नागरिकों को तिजारत के प्रतीकों, बाजार के विधाताओं, हमारी राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सोच को नकारात्मक रूप से प्रभावित करने वाले लोगों, और फर्जी प्रभुओं को नकारकर उनकी जगह वास्तविक जीवन के इन बहादुरों को नायक मानना चाहिए, जो अपनी जान जोखिम में डालकर आज कोरोना वायरस के संक्रमण को थामने में जुटे हैं।

हमें आज इसलिए भी खुश होना चाहिए, क्योंकि बतौर नागरिक हमने अपने ऊपर आयद प्रतिबंधों को उदारतापूर्वक स्वीकार किया है। लोगों की मुश्किलों को कुछ हद तक दूर करने में मददगार संवेदनशील संशोधन किए गए हैं, लेकिन लॉकडाउन अभी बना रहेगा, और हम उसका निश्चय ही पालन करेंगे, क्योंकि हमें सरकार की नैसर्गिक कर्तव्यनिष्ठा में विश्वास है। इस अनुभव से यकीनन व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वच्छता की एक नई संस्कृति भी पैदा होगी, जिसे हमें खुद पर और अपने आस-पास संजीदगी से लागू करना होगा।

महात्मा गांधी की पारिस्थितिकी समझदारी ने हमें भौतिकतावादी सोच के प्रति आगाह किया था, आज यह सोच हमारे सामने मुंह बाए खड़ी है। हमने जिसका उपभोग किया है, वह हमारा भी उपभोग करता है। आज बाजार-निर्मित, बाजार द्वारा संचालित और बाजार से प्रभावित लालच को साफ-सफाई की ज्यादा परवाह नहीं है, जो कि इस महामारी के जन्म लेने की वजह है। ऐसी किसी बीमारी के भयानक रूप से उभरने के प्रति श्रीनाथ रेड्डी जैसे विशेषज्ञ वर्षों से चेतावनी देते आ रहे हैं। अब यह लोभ हमारे गले पड़ गया है।

वुहान का बाजार वह जगह है, जहां यह लालच पसरा हुआ है। मगर उस पर दोष डालकर उसे अलग-थलग कर देना बेतुका है, क्योंकि दुनिया के हर शहर, हर कस्बे और हर इलाके में ऐसा बाजार है। देखा जाए, तो वुहान का बाजार हम सबके अंदर है।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

कोरोनाः भारत की छवि ऊँची उठी

डॉ. वेद प्रताप वैदिक

कई लोगों ने मुझसे पूछा है कि कोरोना-संकट का भारत की विदेश नीति पर क्या असर पड़ा है, आप बताइए। असलियत तो यह है कि कोरोना का युद्ध इतना गंभीर है कि यह पूरा पिछला एक महिना हम सब लोग अंदरुनी सवालों से ही जूझते रहे। फिर भी यह तो मानना पड़ेगा कि इस कोरोना-संकट के दौरान भारत की विश्व-छवि बेहतर ही हुई है। पहली बात तो यह हुई कि इस संकट के दौरान सारा भारत एक होकर लड़ रहा है। भारत के पक्ष और विपक्ष का रवैया वैसा नहीं है, जैसा अमेरिका, ब्रिटेन, पाकिस्तान और ब्राजील जैसे देशों में देखने में आ रहा है। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का सभी दलों के मुख्यमंत्री पूरी तरह साथ दे रहे हैं। दूसरा, भारत की जनता तालाबंदी का पालन जिस निष्ठा के साथ कर रही है, वह दूसरे देशों के लिए एक मिसाल बन गई है।

विश्व स्वास्थ्य-संगठन ने स्पष्ट शब्दों में भारत की तारीफकी है। तीसरा, भारत ने कोरोना के जांच-यंत्र और करोड़ों मुखपट्टियां तैयार कर ली हैं। भारत से कुनैन की करोड़ों गोलियां अमेरिका समेत 55 देशों ने आग्रहपूर्वक मंगवाई हैं। एक अर्थ में भारत को पहली बार विश्व-त्राता का विहंगम रुप मिला है। चौथा, भारत सरकार ने हजारों प्रवासियों को विदेशों से भारत लौटाने में जो मुस्तैदी दिखाई है, उसकी भी सराहना हो रही है। पांचवा, दुनिया को आश्चर्य है कि 140 करोड़ लोगों के इस विकासमान राष्ट्र में कोरोना का प्रकोप इतना कम क्यों हो रहा है ? सारी दुनिया में यह चर्चा का विषय है। छठा, भारतीय भोजन में पड़नेवाले मसालें घरेलू औषधियों का काम कर रहे हैं। विदेशों में बसे प्रवासी भारतीय भी इसीलिए कोरोना के शिकार कम हो रहे हैं। आयुर्वेद का डंका सारे विश्व में बज रहा है।

सातवां, भारत ने दक्षेस राष्ट्रों को कोरोना के खिलाफसावधान करने की पहल की और दक्षेस-कोष में बड़ी राशि दान की। प्रधानमंत्री दक्षेस-राष्ट्रों के नेताओं से निरंतर संपर्क में है। पड़ौसी देशों पर इसका अच्छा प्रभाव पड़ रहा है। आठवां, जमाते-तबलीगी के कारण कोरोना को जबरन हिंदू-मुस्लिम रुप दिया जा रहा है लेकिन सरकार ने उसे जरा भी प्रोत्साहित नहीं किया है। तबलीग के सरगना मौलाना साद को अभी तक गिरफ्तार नहीं किया गया है। लेकिन साधारण मुसलमान मजदूरों, दुकानदारों और साग-सब्जीवालों के साथ जो दूरियां बनाई जा रही हैं, उसकी आलोचना पाकिस्तान और अंतरराष्ट्रीय इस्लामी संगठन कर रहे हैं लेकिन वे यह क्यों नहीं देख रहे हैं कि मुसलमानों को इतना गुमराह कर दिया गया है कि वे उनका इलाज करनेवाले डॉक्टरों और नर्सों को मार रहे हैं।

नौवां, दुनिया का कोई भी देश कोरोना को लेकर भारत पर वैसे आरोप नहीं लगा रहा है, जैसे चीन और अमेरिका पर लग रहे हैं। दसवां, भारत सरकार ने चीन जैसे देशों के विनियोग पर कई प्रतिबंध लगा दिए हैं ताकि वे भारतीय कंपनियों पर कब्जा न कर सके। ग्यारहवां, विश्व-व्यापार में चीन को जो धक्का लगनेवाला है, उसका फायदा भारत को जरुर मिलेगा। कुल मिलाकर कोरोना के संकट के दौरान विश्व में भारत की छवि ऊंची उठी है।

काम की बात

अवसर और सूर्योदय में एक ही समानता है। देर करने वाले इन्हे अवसर खो देते है।

एक सलाह

गिरगिट माहौल देखकर रंग बदलता है और इंसान मौका देखकर।

चाणक्य नीति

केवल जन्म देने के कारण ही पिता अपनी संतान का हितैषी नहीं बन जाता। अपनी मृत्युपरांत अगर वह कर्ज का भार छोड़ कर जाए तो संतान का शत्रु ही कहा जाएगा। माता होने से ही स्त्री सती-साध्वी नहीं बन जाती। यौन सुख को अन्यत्र खोजने वाली स्त्री भी संतान की शत्रु होती है। पत्नी रूपवती हो तो कामांध लोगों का आकर्षण बढ़ जाता है। काम तृप्ति के लिए वह भी परिवार की शत्रु बन जाएगी।

प्रवासी मजदूरों का संकट बेहद चिंताजनक

तालाबंदी से प्रभावित प्रवासी मजदूर किस संकट से गुजर रहे हैं, इसका असल में ठीक से अंदाजा किसी को नहीं है। इस बीच स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं के एक समूह ने कुछ प्रवासी मजदूरों से जानकारी जमा कर कर उनका अध्ययन किया और अपनी रिपोर्ट जारी की है। ये रिपोर्ट दिखाती है कि स्थिति आखिर कितनी चिंताजनक है। स्ट्रैंडेड वर्कर्स एक्शन नेटवर्क का कहना है कि तालाबंदी शुरू होने के दो दिनों में उनके नेटवर्क के 73 स्वयंसेवियों को महाराष्ट्र, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पंजाब और हरियाणा में फंसे हुए प्रवासी श्रमिकों के फोन आने लगे। श्रमिकों ने उन्हें बताया कि वे संकट में हैं और उन्हें मदद चाहिए। नेटवर्क के लोग 11 हजार से भी ज्यादा श्रमिकों से संपर्क कर पाए। इनमें से ज्यादातर श्रमिक वे थे, जो या तो अपने अपने गृह-राज्य लौट नहीं पाए या उन्होंने जाने की कोशिश भी नहीं की। नेटवर्क ने पाया कि ये लोग जितने संकट में हैं, उससे उन्हें निकालने के लिए पर्याप्त राहत नहीं मिल पा रही है। सबसे बुरी स्थिति उत्तर प्रदेश में थी, जहां से कम से कम 1,611 श्रमिकों ने बताया कि उन्हें जरा भी सरकारी राशन नहीं मिला है। पका हुआ खाना कई जगह जरूर मिल रहा है, लेकिन उसमें भी हर राज्य में स्थिति अलग है।

रिपोर्ट के मुताबिक देश में कोविड-19 की वजह से 333 लोगों की जान गई थी, जबकि तालाबंदी के दौरान आत्महत्या, भूख, हाईवे पर हादसे, पुलिस की मार इत्यादि की वजह से कम से कम 199 लोगों की जान चली गई थी। समूह ने इस संकट में बेहतर प्रबंधन के लिए कुछ उपाय सुझाए हैं। इनके अनुसार सबसे पहले तो पीडीएस के तहत मिलने वाले राशन को तीन महीनों के लिए दोगुना कर देना चाहिए। दालें, तेल, नमक, मसाले, साबुन और सेनेटरी पैड के साथ लोगों के घर तक पहुंचाना चाहिए। यह सभी गरीबों को मिलना चाहिए- यानी उन्हें भी जिनके पास राशन कार्ड नहीं है। इसके अलावा हर एक लाख की आबादी के लिए कम से कम 70 भोजन के केंद्र होने चाहिए जहां 12 घंटों तक खाना बंटता रहे। इसके अलावा हर गरीब को दो महीनों के लिए हर महीने 7,000 रुपये नकद दिए जाने का सुझाव भी दिया गया है। कहा गया है कि सभी जन धन खातों में तालाबंदी के दौरान और उसके उठने के दो महीने बाद तक हर महीने 25 दिनों का न्यूनतम वेतन दिया जाए। और साथ ही सभी राज्य सरकारें सुनिश्चित करें कि नियोक्ता ठेकेदार और श्रमिकों को पूरा वेतन दें।

पुलिस के लिए जनसेवा का सुअवसर

राजेन्द्र मोहन शर्मा
रिटायर्ड डीआईजी

जनता को पुलिस से बहुत अपेक्षाएं रहती हैं तथा कोरोना से उत्पन्न हुई विकट परिस्थितियों में इन अपेक्षाओं का बढ़ जाना स्वाभाविक है। पुलिस और जनता का संबंध आपसी व्यवहार और सहयोग पर आधारित है। यकीनन पुलिस कितना भी अच्छा कार्य कर ले फिर भी उसे संदेह की दृष्टि से ही देखा जाता है। इसके अनेकों कारण हो सकते हैं, परंतु पुलिस को अपनी स्वच्छ छवि को प्रस्तुत करने के लिए विभिन्न कठिन परिस्थितियों से गुजर कर जनता को एहसास करवाना होगा कि पुलिस जनता की हर सेवा के लिए हमेशा तत्पर है। जनता चाहती है कि पुलिसमैन सिकंदर की तरह प्रशिक्षित हो, लिंकन की तरह कूटनीतिज्ञ हो, सोलोमन की तरह बुद्धिमान हो, सिंह की तरह सतर्क हो, उफनती नदी में छलांग लगाने वाला हो तथा अपराध होने पर फरिश्ते की तरह मौके पर पहुंचने वाला हो चाहे, भले ही उसका वेतन एक चपड़ासी से भी कम तथा आठ वर्षों तक अस्थायी तौर पर ही नौकरी पर क्यों न रखा गया हो। जिस तरह एक सैनिक युद्धक्षेत्र में जाकर अपना कौशल, धैर्य व बलिष्ठता का परिचय देने के लिए तत्पर रहता है, वैसे ही 'कोरोना' जैसी आपदा की घड़ी में पुलिस मैन को अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा, निर्भयता व सत्यनिष्ठा दिखाने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। इस आपदा की घड़ी में सभी विभागों के कर्मचारियों को छुट्टी पर जाकर अपने घर सुरक्षित रहने का अवसर दिया गया है, जबकि पुलिस कर्मचारियों को दिन- रात अपनी ड्यूटी का निर्वहन करना पड़ रहा है। पुलिसमैन जब घर से ड्यूटी के लिए निकलता है तो उनके छोटे बच्चे अपने पापा व मम्मा (महिला कर्मचारियों) को बिलखती आवाज में कहते हैंः पापा-मम्मा बाहर मत जाओ- कोरोना है, मगर पुलिसमैन अपने कर्त्तव्य को निभाने के लिए अपनों की परवाह किए बिना दूसरों की परवाह के लिए घर से निकल रहा है। यहां एक तरफ वह हर व्यक्ति को सुरक्षित रखने के लिए, हर मोड़ पर छाती ताने खड़ा है, वहीं कुछ बिगड़ैल युवाओं को नियंत्रण में रखने के लिए वह अपने डंडे का प्रयोग भी कर रहा है। यही नहीं वह प्रवासी मजदूरों को उनकी झुग्गी -झोंपड़ियों में जा -जा कर खाने की सामग्री वितरित करता भी दिखाई दे रहा है।

अपनी शपथ में ली गई सेवा, समर्पण, निष्ठा की कसौटी पर खरा उतरने के लिए आज पुलिसमैन इस संकट की घड़ी में अपनी जान की परवाह किए बिना तन मन धन से 24 घंटे अपने कार्य के प्रति दृढ़ता के साथ अपना उत्तरदायित्व निभा रहा है। वह अंतरमन से अपने संयम व सामर्थ्य के साथ काम कर रहा है, क्योंकि उस पर न तो कोई राजनीतिक दबाव है और न बिना वजह के अन्य वीआईपी ड्यूटी संबंघी किसी प्रकार के झंझट। पुलिसमैन भी एक इनसान है तथा जिन परिस्थितियों में उसे काम करना होता है उसकी एक झलक आम जनता के सामने लाना भी आवश्यक है। वह चौराहे पर खड़ा होकर केवल ट्रैफिक को ही नियंत्रित नहीं करता बल्कि यह भी देखता कि कोई किसी महिला को छेड़ न दे। चौराहों से कोई जुलूस निकलता है, तो उसे यह भी देखना है कि कोई दंगा न भड़का दे तथा उसे यह भी देखना है कि किसी मंत्री महोदय की गाड़ी बिना किसी रुकावट के गुजर जाए। उसके कंधों पर चार किलो की बंदूक है तथा जिसे यदि अपराधियों पर चला दी तो नौकरी से डिसमिस भी होना पड़ सकता है। उसका मन भी करता है कि वह थोड़ी देर के लिए विश्राम कर ले मगर ऐसी स्थिति में लोग उसके ढीलेपन का राग अलापना शुरू कर देते हैं। उसका मन भी चाय पीने को करता है तथा यदि वह ऐसा करता है तो लोगों को वह भी गंवारा नहीं होता। पुलिसजनों ने अपनी कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रमाण हर क्षेत्र में दिया है। इस कोरोना महामारी की घड़ी में अपने कर्त्तव्य निर्वहन में राजस्थान पुलिस के कई कर्मचारी इस वायरस से ग्रस्त हुए हैं, फिर भी पुलिसमैन का मनोबल किसी भी रूप से गिरा नहीं है, अपितु वह दुगने मनोबल से कोरोना रूपी समर में जान हथेली पर लिए सबल, सक्षम होकर अपने धैर्य का परिचय देते हुए कोरोना के लॉकडाउन का अनावश्यक उल्लंघन कर रहे लोगों को कहीं हल्का दंड देकर उनके सुधार और सुरक्षा की मानवीय सीख देता दिखाई पड़ता है। हाल ही में दिल्ली व अन्य शहरों में भारतीय नागरिकता संशोधन से जुड़े मुद्दों पर दंगे हुए जिसमें रतलाल व अमित शर्मा जैसे अधिकारियों को अपनी जान भी गंवानी पड़ी। वैसे तो पुलिसमैन के लिए हर दिन एक चुनौती का दिन होता है, मगर ऐसी विकट आपदा, चुनौती ही नहीं बल्कि लोगों की सेवा व सहायता के लिए समर्पित रहने व अपनी छवि में सुधार लाने के लिए ऐसे अवसर प्रदान कर रही है। पुलिस को श्री कृष्ण के वंशज माना जाता है तथा ऐसी घड़ी में पुलिस को श्री कृष्ण की तरह ही प्रगाढ़, प्रगल्भ, बलिष्ठ, पुरुषार्थी, प्रज्ञावान, हमराज व हमदर्द बनकर सुबकते व क्रंदन करते हुए पीड़ित व्यक्तियों के लिए सुकून पहुंचाने का कार्य करना होगा ताकि उनकी धूमिल हुई छवि में सकारात्मक सुधार हो सके।

अमिताभ बच्चन की कही हुई यह पंक्तियां पुलिस के लिए चरितार्थ सिद्ध होती हैंः

तू खुद की खोज में निकल, तू किस लिए हताश है।
तू चल तेरे वजूद की, समय को भी तलाश है।

इंसान की सोच का संबंध समस्याओं के समाधान की खोज से है

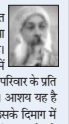

इस धरती पर मानव ही ईश्वर की एक ऐसी खूबसूरत कृति है, जो चिंतन करने में सक्षम है। यह बौद्धिक विधा इस कायनात के किसी अन्य जीव को हासिल नहीं है। इंसान कभी जीवन के बीते दिनों और भविष्य के बार में सोचकर हल्का महसूस करता है, तो कभी उसके जेहन में परिवार के प्रति आसक्ति और मोह-माया की तेज आंधी चलती रहती है। आशय यह है कि इंसान ताउम्र कुछ न कुछ सोचता रहता है। हर पल उसके दिमाग में विचारों का तेज बवंडर चलता रहता है। काफी शिद्धत से विचार करें, तो इस सत्य को किसी आईने की तरह साफहोने में देर नहीं लगती है कि इंसान की सोच का गहरा संबंध जीवन में विविध प्रकार की समस्याओं के समाधान की खोज से होता है। यहां पर एक अहम प्रश्न यह उठता है कि आखिर एक इंसान अपने जीवन की समस्याओं के समाधान के लिए कितना सोचे? आखिर किसी समस्या के हल के लिए सोच का दायरा क्या होना चाहिए? जीवन में सोचना अनिवार्य है, क्योंकि इसके गर्भ में समस्याओं के समाधान और आत्मज्ञान का भ्रुण छिपा होता है। लेकिन इस सत्य से हम इंकार भी नहीं कर सकते हैं कि किसी विषय पर निरंतर सोचते रहने से समस्या और भी गंभीर हो जाती है। मानसिक शक्ति का क्षरण होता जाता है और इसकी परिणिति मानसिक तनाव और अवसाद में होती है। इसलिए जीवन की समस्याओं पर बहुत सोचने की प्रवृत्ति से खुद को महफूज रखना जरूरी है। जीवन के बारे में कहा जाता है कि यह कभी ठहरता नहीं है। जीवन ठहर जाए, तो फिर वह जीवन नहीं है। जीवन चलने का नाम है। नदी के तेज बहाव के मध्य यदि कोई शिलाखंड हो, तो उससे टकराने के बाद मधुर संगीत का सृजन होता है। मानव जीवन का फलसफा भी इससे परे नहीं है। जीवन में समस्याएं ज्ञान-चक्षु खोलती है। लिहाजा समस्याओं पर अवश्य सोचिये, लेकिन इसकी लगाम पर आपकी पकड़ भी मजबूत होनी चाहिए।

घरः सुंदरतम सुरक्षा कवच

हृदयनारायण दीक्षित

घर आनंद है। घर में होना अपनत्व में रहना है। बच्चे बाहर खेलने जाते हैं, खेलने के बाद घर लौट आते हैं। हमसब पूरे दिन बाहर काम करते हैं, काम के बाद घर लौट जाते हैं। हमारे प्राणों में घर का अदम्य आकर्षण है। घर का आकर्षण जन्म से भी पुराना है। हमसब जन्म के पहले मां के गर्भ में होते हैं। मां का गर्भ हमारा पहला घर है। इस घर का ताप मां का ताप होता है। मां द्वारा लिया गया भोजन, रस बनकर हम सबका पोषण करता है। इस घर में रोजी-रोजगार की चिंता नहीं होती। मां का गर्भ श्रेष्ठतम स्वयंपूर्ण घर है। जन्म के बाद माता-पिता या संरक्षक का घर हमारा घर हो जाता है, फिर हमारी अभिलाषा में अपने घर की तड़प जन्म लेती है। हम घर बनाते हैं या किराए के घर में रहते हैं। हम कहीं भी रहें, घर पहुंचने की तीव्र इच्छा बनी रहती है। घर उत्तम आश्रय है।

कोराना महामारी में घर में ही रहने की अपेक्षा है लेकिन कुछ लोग अपने ही घर में रहने का अल्पकालिक अनुशासन भी तोड़ रहे हैं। आखिरकार हम अपने ही घर परिवार में क्यों नहीं रह सकते? घर से बाहर अकारण घूमने का रस क्या है? घर में ऊबने या अवसादग्रस्त होने का कारण क्या है? हम वर्षा, गर्मी या शीत से बचने के लिए घर की ओर ही भागते हैं लेकिन वैश्विक आपदा में मृत्यु से बचने की गारंटी देने वाले घर में ही रहने में हमारा मन विचलित होने लगता है। संस्कृति और सभ्यता के इतिहास में सुंदर घरों के विवरण मिलते हैं। दुनिया की बहुमत जनसंख्या में देवों के प्रति आस्तिकता है। देव होते हैं कि नहीं होते यह बहस बेमतलब है। हम मनुष्यों ने देवों के भी घर बनाए हैं। अथर्ववेद ऋग्वेद में वरूण आदि देवों के भी घरों की चर्चा है। घर रात्रि विश्राम के ही स्थल नहीं हैं। यहां आंतरिक ऊर्जा प्राप्त करने के पावर हाउस हैं। घर के प्रत्येक भाग का महत्व है। घर का भरापूरा व्यक्तित्व है। जैसे हम सब व्यक्तिगत रूप में हर्ष-विषाद या शोक-उल्लास में होते हैं, वैसे ही घर भी उदास होते हैं। परिवार के एक सदस्य के दुख में पूरा घर शोकग्रस्त होता है। घर के छोटे बच्चे की परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर पूरा घर आनंद में होता है। घर ईंट-सीमेन्ट निर्मित काया और परिवार के सभी सदस्यों का बेमेल गठजोड़ नहीं होते। यहां एक का दुख सबपर बंटकर न्यून हो जाता है। इसी तरह एक का आनंद सबका आनंद बनता है। आनंद बंटने पर बढ़ता है। दुख बंटने पर घटता है। घर में दोनों क्रियाएं प्रतिदिन, प्रतिपल घटित होती रहती हैं। घर के बाहर श्रम है, कर्तव्यपालन का तनाव है। ऊर्जा का क्षय है। शारीरिक मानसिक थकान है। घर विश्रामपूर्ण आश्रय है, जीवन ऊर्जा का पुनर्नवा संचय है घर। आश्चर्य है कि हम घर में होने की आवश्यकता के बावजूद जीवन को दांव पर लगाकर घर से बाहर घूमने का आत्मघात अपना रहे हैं।

ऋग्वेद अथर्ववेद में राष्ट्र एक बड़ा घर है। उचित भी है राष्ट्र एक परिवार है। संपूर्ण राष्ट्र की एक जीवनशैली है। इस वृहद परिवार के करोड़ों सदस्यों के साझा समवेत स्वप्न हैं। दुख और सुख भी साझा हैं। राष्ट्रीय महत्वाकांक्षाओं में राष्ट्र के सभी नागरिकों की महत्वाकांक्षाएं भी अन्तर्सम्बन्धित हैं। जैसे सामान्य परिवार के लिए घर जरूरी है वैसे ही राष्ट्र परिवार के लिए भी घर जरूरी है। राष्ट्र की भौगोलिक सीमा इस वृहद परिवार वाले घर की सीमा है। राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का सुख, आरोग्य पूर्ण जीवन सबकी अभिलाषा है। कोरोना महामारी का सम्बंध एक व्यक्ति से नहीं है। यह एक से अनेक हो जाने की शक्ति से लैस है। इसकी गति आश्चर्यजनक है। यह राष्ट्र राज्य की सीमा नहीं मानती। सारी दुनिया में इसका प्रकोप है। मृत्यु का ताण्डव है, शवों के ढेर हैं।

भारतीय पुराणों में वैराग्य के दो प्रमुख केन्द्र बताए गए हैं। इनमें ज्ञान पहला है। ज्ञानी संसार की आंतरिक गतिविधि का अध्ययन करते हैं। सृष्टि के प्रपंचों में कार्य कारण खोजते हैं। उन्हें संसार की व्यर्थता की अनुभूति है। माया मोह समाप्त हो जाता है। पूर्वजों ने इसे ज्ञान वैराग्य कहा है। दूसरे वैराग्य को श्मसान वैराग्य कहा गया है। हम परिजनों की मृत्यु पर श्मसान जाते हैं। परिजन की मृत काया को आग में जलता देखते हैं। श्मसान क्षेत्र में अन्य तमाम शव भी दिखाई पड़ते हैं। परिजनों को बिलखता देखते हैं। सबका जाना सुनिश्चित दिखाई पड़ता है। ऐसे सोच विचार में जीवन की क्षणभंगुरता की प्रत्यक्ष अनुभूति होती है। पूर्वजों मनीषियों ने इसे श्मसान वैराग्य कहा है। भारत में काल और मृत्यु पर्यायवाची भी है। कहते हैं कि इनका काल आ गया। सो परमधाम चले गए।

परमधाम भी घर है। भारतीय चिंतन में घर की महत्ता है। श्रेष्ठ कर्मों वाले मृत्यु के बाद परमधाम जाते हैं। धरती पर इसकी तुलना मंत्री, अफसरों या धन संपन्न लोगों के सुविधा संपन्न सुरक्षित आवासीय क्षेत्रों से की जा सकती है। लेकिन मृत्यु वैज्ञानिकों के लिए बड़ी चुनौती है। वैदिककाल के ऋषियों से लेकर आधुनिक वैज्ञानिक युग तक दीर्घजीवन के प्रयास हैं। 100 वर्ष या इससे ज्यादा का जीवन तमाम प्रार्थनाओं में है। 60-70 वर्ष के पहले स्वस्थ जीवन की मृत्यु अकाल मृत्यु कही जाती है। कोरोना की गिरफ्त में अकाल मृत्यु का तांडव है। इसकी दवा नहीं है। संक्रमण रोकने के लिए परस्पर दूरी बनाए रखना ही एकमात्र विकल्प है।

कोरोना आश्चर्यजनक आक्रमण है। यह बीमारी स्वयं के शरीर का विकार नहीं है। यह दूसरे के माध्यम से ही आती है। दूसरे को भी दूसरे से ही मिलती है। इसके संक्रमण में दूसरे की ही भूमिका है। दूसरे से दूर रहने की सावधानी से ही बचाव की गारंटी है। दूसरा बहुत महत्वपूर्ण है। दूसरे से दूरी की सावधानी हटी, महामारी की संभावना बढ़ी। दूसरा और दूरी इस महामारी से सुरक्षा के दो बीज शब्द हैं। उपासना की भाषा में इन्हें बीज मंत्र कह सकते हैं। दूसरे से दूर रहने की उपासना का मंदिर घर है। घर के सभी लोग दूसरों से दूर रहने का व्रत निभाएं। धर्म पंथ के व्रत पालन में भोजन न करने आदि की कठोर निष्ठा का निर्वहन करना होता है। लेकिन घर में मजे से रहकर दूसरों से दूरी बनाए रखने का व्रत अतिसरल है।

घर सुंदरतम सुरक्षा कवच है। सभी प्रकार की सुरक्षा चिंता को दूर करने के लिए घर का आविष्कार हुआ था। अथर्ववेद (3.12.5) में इसके स्पष्ट संकेत हैं। कहते हैं, ÷हे घर ! सृष्टि के प्रारम्भ में प्राणियों को हर्ष देने के लिए देवों ने आपका सृजन किया था। आप उत्तम मनवाले हैं। हमें ऐश्वर्य दें।÷ अथर्ववेद के रचनाकाल में घर निर्माण की सामग्री में बांस की भूमिका मुख्य थी। अथर्ववेद में कहते हैं, ÷हे वंस ! आप घर के बीच खड़े रहें। घर के भीतर रहने वाले कभी हिंसित न हों। हम सपरिवार 100 वर्ष से ज्यादा की आयु प्राप्त करें।÷ (वही 3.12.6) यहां 100 वर्ष की आयु पर जोर है। ऋषि का ध्यान रोगों पर भी है। जल पवित्र करते हैं, अग्नि संरक्षण देते हैं। ऋषि कहते हैं, ÷हम रोग विनाशक, रोगरहित जल को अग्नि देव के साथ घर में रखते हैं।÷ (वही 9) आधुनिक संदर्भ में कह सकते हैं कि हम स्वच्छता के लिए जीवाणुनाशक सैनीटाइजर व साबुन घर में रखते हैं। शरीर की रोग निरोधक क्षमता बढ़ाने वाले अन्न, फल व औषधि भी घर में रखते हैं। समय संदर्भ बदला करते हैं। शाश्वत अपरिवर्तित रहता है। उपकरण नए हो जाते हैं।

घर असाधारण आश्वस्ति है। ऋग्वेद अथर्ववेद और महाकाव्य काल में रचे गए ग्रंथो में सुंदर गृहों के वर्णन हैं। घरों के प्रति प्रगाढ़ आत्मीयता व भावुकता है। अथर्ववेद (9.3.19) में 'घर कवियों द्वारा प्रशंसित व सुयोग्य जानकारों द्वारा निर्मित बताया गया है। इन्द्र से स्तुति है कि वे इस शाला-गृह का संरक्षण करें।÷ घर की महिमा होती है। इसके भीतर और बाहर घर की प्रतिष्ठा का प्रवाह होती है। एक ऋषि घर की महिमा का अनुभव सभी दिशाओं में करते हैं। वे कहते हैं, ÷शाला (गृह) की पूर्व दिशा की महिमा को नमस्कार है 'प्राच्या दिशः शालाया नमो महिम्ने। दक्षिण दिशा की महिमा को नमस्कार -दक्षिणाया दिशः नमो महिम्ने। (वही 9.3.25-26) इस शब्दावली में पश्चिम और उत्तर दिशा की शाला-गृह महिमा को नमस्कार करने के बाद ऊर्ध्व दिशा व प्रत्येक को भी नमस्कार करते हैं।÷ (वही 27, 28-31) आधुनिक चुनौती में अपने घर परिवार में ही रहना ही कर्तव्य है।

(लेखक उत्तर प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष हैं।)

डॉ. नीलम महेंद्र
लेखक

जीवन भर लॉकडाउन में तो नहीं रहा जा सकता

आज पूरा विश्व संकट के दौर से गुजर रहा है। कोरोना नामक महामारी से दुनिया भर के विकसित कहे जाने वाले देशों तक में होने वाले त्राहिमाम को देखकर आशंका होती है कि कहीं ये एक युग के अंत की शुरुआत तो नहीं। क्योंकि जैसी वर्तमान स्थिति है, इसमें इस महामारी का अगर कोई एकमात्र इलाज है तो वो है स्वयं को इससे बचाना। तो जब तक लॉक डाउन है तबतक हम घरों में सुरक्षित हैं लेकिन जीवन भर न तो आप लॉक डाउन में रह सकते हैं और ना हो कोई देश। इसलिए आवश्यक हो जाता है कि हम पूरे विश्व पर आई इस विपत्ति से कुछ सबक सीखें।

अगर मानव सभ्यता के इतिहास पर नजर डालें तो मानव ने शुरुआत से ही अनेक चुनौतियों का सामना करके अपने बाहुबल और बौद्धिक क्षमता के सहारे ही वर्तमान मुकाम को हासिल किया है। इस पूरे सफर में अगर उसका कोई सबसे बड़ा मित्र था, तो वो था उसका आत्म विश्लेषणात्मक स्वभाव जो उसे अपनी गलतियों से सीखने के लिए प्रोत्साहित करता था। भारत की सनातन संस्कृति के स्वाभानुसार यह विश्लेषणात्मक विवेचन आत्मकेंद्रित ना होकर इसमें सम्पूर्ण प्रकृति एवं मानवता का भी कुशलक्षेम शामिल होता था। और यह संभव होता था उन नैतिक मूल्यों से जो उसे सही और गलत का भेद कराते थे। किंतु समय के प्रवाह के साथ परिभाषाएं बदलीं तो नैतिक मूल्य कहीं पीछे छूटते गए।

यह सही है कि आज मानव सभ्यता ने जो मुकाम हासिल किया है वो उसकी अथक मेहनत का फल है, उसके निरंतर प्रयासों का परिणाम है तथा उसकी अनगिनत प्रयोगों की परिणीति है। अवश्य ही उसने कितनी बार हार का सामना किया होगा कितनी ही बार वो मायूस भी हुआ होगा लेकिन आगे बढ़ने की चाह ने उसे अपनी गलतियों से सीखकर एकबार फिर उठने के लिए प्रेरित किया होगा। हाँ ऐसा ही हुआ होगा तभी तो हम स्वयं को कल तक इतिहास में विज्ञान के सर्वोत्तम विकास के दौर में होने का श्रेय देते थे जो आज हमारे लिए अभिशाप बन गया है। कारण कि जो सबसे बड़ी भूल मानव से इस यात्रा में हुई वो ये कि उसका विश्लेषण केवल आत्मकेंद्रित रहा, निज लाभ हानि तक सीमित रहा सर्व हिताए सर्व सुखाये का भाव इससे लुप्त रहा।

नैतिक मूल्यों के पतन के साथ ही मानवता और प्रकृति सरंक्षण जैसे भाव इस विवेचना से लुप्त होते गए। परिणामस्वरूप तरक्की की कभी ना खत्म होने वाली मानव की लालसा और विकास की अंधी दौड़ उसे इस वैज्ञानिक युग के उस मोड़ पर ले आई जहाँ वो सुपर कंप्यूटर, रोबोट, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, क्लोनिंग जैसे वैज्ञानिक चमत्कारों से उत्साहित हो प्रकृति तक को ललकारने लगा।

परिणाम, आज अमरीका और चीन एक दूसरे को इस वैश्विक महामारी के लिए जिम्मेदार बताने वाले ऐसे बयान दे रहे हैं जिन्हें शायद ही कभी पुष्ट किया जा सके।लेकिन ये बयान इतना इशारा तो कर ही देते हैं कि कोरोना वायरस मानव निर्मित एक जैविक हथियार है। अतः यह समय सम्पूर्ण मानव सभ्यता के लिए आत्मावलोकन के ऐसे अवसर में बदल जाता है जिसमें अनेक प्रश्नों के उत्तर खोजना हम सभी का दायित्व बन जाता है।

दरअसल मौजूदा परिस्थितियों में प्रश्न तो अनेक और अनेकों पर खड़े हो गए हैं। उन संगठनों पर भी खड़े हो गए हैं जो विश्व के देशों ने एक दूसरे के सहयोग से आपसी सामंजस्य स्थापित करते हुए अपने अपने आर्थिक पक्षों को ध्यान में रखकर बनाए थे लेकिन संकट की इस घड़ी में इन संगठनों का हर देश अकेला और बेबस खड़ा है। इन संगठनों के औचित्यहीन होने का इससे बड़ा सबूत क्या होगा कि जब इटली जैसा देश जो यूरोपीय संघ जैसे शक्तिशाली संगठन का सदस्य है,अपने देश में कोरोना से संक्रमित लोगों के जीवन की रक्षा तो छोड़िए मृत्यु उपरांत उनके शवों को सम्मान जनक अंतिम संस्कार का एक सामान्य अधिकार भी नहीं दे पा रहा था, मदद के लिए यूरोपीय संघ के सदस्य देशों की तरफ आशाभरी नजरों से देख रहा था लेकिन उसके हाथ निराशा लगी क्योंकि इन संगठनों ने आर्थिक लाभ हानि से ऊपर उठकर कभी सोचा ही नहीं। इस घटना ने जितना इटली को झकझोर के रख दिया उससे ज्यादा उसने यूरोपीय संघ को बेनकाब कर दिया। ब्रिटेन पहले ही इस संघ से बाहर आ चुका है अब इटली के भीतर भी यूरोपीय संघ के विरोध में स्वर उठने लगे हैं।

इसी प्रकार पुनर्विचार का संकट तो विभिन्न देशों की उस वैश्विक अर्थव्यवस्था की सोच पर भी मंडराने लगा हैं जिसमें चीन के एक शहर से शुरू होने वाली एक बीमारी समूचे विश्व की ही अर्थव्यवस्था को ले डूबती है। निश्चित ही कोरोना का यह संकट देशों को अर्थव्यवस्था और आवश्यक वस्तुओं के मामले में एक दूसरे पर अत्यधिक निर्भरता की अपनी अपनी नीति का पुनर्निर्माण कर हर देश को आत्मनिर्भरता के लिए कदम उठाने के लिए प्रेरित करेगा।

लेकिन वो संगठन जो सम्पूर्ण विश्व में मानव के स्वास्थ्य के स्तर को बढ़ाने के लिए उपयुक्त दिशा निर्देश जारी करता है, कोविड 19 वैश्विक महामारी के दौरान उस विश्व स्वास्थ्य संगठन की भूमिका ने तो उसकी विश्वसनीयता पर ही प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। एकतरफ अमेरिका खुलकर इसकी आलोचना ही नहीं कर रहा बल्कि विश्व भर में इस महामारी को फैलने से रोकने की दिशा में लापरवाही के चलते उसने तो विश्व स्वास्थ्य संगठन को अमेरिका द्वारा दी जाने वाली फंडिंग ही रोक दी है। लेकिन दूसरी तरफ अमेरिका ने कोरोना के संक्रमण फैलने के खतरनाक तरीके और उसकी तीव्र गति से फैलने के बावजूद लॉक डाउन के कारण अर्थव्यवस्था को पहुंचने वाले नुकसान के चलते इसका फैसला लेने में देर कर दी।

परिणाम आज कोरोना से होने वाले संक्रमण और मौतें दोनों में अमेरिका विश्व में पहले क्रम में है। जाहिर है ऐसे फैसले लेते समय आर्थिक पहलू महत्त्वपूर्ण होता है और मानवीय संवेदनाओं के लिए कोई स्थान नहीं होता।

यही समझने वाली बात है कि उपर्युक्त सभी संदर्भ भले ही अलग अलग हैं और भिन्न भिन्न वैश्विक संगठनों के हैं जो सामान्य व्यापारिक गतिविधियों में एक दूसरे के पूरक थे परंतु ऐसे समय जब इनके सदस्य देशों को इनकी सहायता की सबसे ज्यादा आवश्यकता थी, ये कर्ण की विद्या के समान निष्प्रभावी हो गए, आखिर क्यों? उत्तर हम सभी जानते है। दरअसल इन सभी संगठनों की उत्पत्ति का एकमात्र उद्देश्य समस्त सदस्य देशों के व्यापारिक हित,उनकी अर्थव्यवस्था और नए अवसरों की तलाशतक सीमित था। उपभोग्तावादी और अवसरवादी संस्कृति की यही विडंबना है। उपयोगिता और अवसर समाप्त होते ही व्यक्ति हो संगठन हो या देश निरुपयोगी हो जाता है। इसमें भावनाओं और मानवता की कोई जगह नहीं होती। शायद इसलिए सक्षम से सक्षम सरकारें और बड़े से बड़े साम्राज्य आज इस आपदा के समय बौने हो गए हैं लेकिन भारत जैसा अपार जनसंख्या और सीमित संसाधनों वाला देश इस संकट से सफलता पूर्वक लड़ ही नहीं रहा बल्कि हाइड्रोक्लोरोक्विन और पेरासिटामोल जैसी आवश्यक दवाइयों की आपूर्ति विश्व के विभिन्न देशों को कर रहा है। क्योंकि यहाँ संवेदनाएँ भी हैं और मानवता भी है। यहाँ की सनातन संस्कृति में निःस्वार्थ सेवा, दया भाव, दान की महिमा, परोपकार का भाव और सभी के हित की मंगलकामना के संस्कार पूरे देश को एक ऐसे सूत्र में बांधकर रखते हैं जो विपत्ति के समय टूटने के बजाए और मजबूत हो जाते हैं। कल जब विश्व के मानचित्र पर विशाल जनसंख्या के साथ इस विकासशील देश की कोरोना पर विजय का विश्लेषण किया जाएगा तो शायद विश्व के बुद्धिजीवी भारत के विजय के उस गूढ़ मूलमंत्र को समझ पाएं जो इसकी सनातन संस्कृति में छिपे हैं। जिस प्रकार आज योग कोरोना से लड़ने वाला सर्वश्रेष्ठ शारीरिक व्यायाम और प्राणायाम हृदय एवं श्वसन तंत्र के लिए सर्वोत्तम व्यायाम स्वीकार किया जा चुका है, भारतीय संस्कृति के मूल्य और संस्कार भी विश्व कल्याण की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ अनुकरणीय आचरण के रूप में स्वीकार किए जाएंगे और यह आवश्यक भी है। क्योंकि अगर विकास की इस चाह में लोककल्याण के भाव रहे होते तो कोरोना महामारी से जूझ रहे देशों को चीन द्वारा मदद के नाम पर घटिया सामान की आपुर्ति की खबरें नहीं आतीं। इसी प्रकार विज्ञान के सहारे विकास की यात्रा में यदि सर्वहित की मंगलकामना भी शामिल रही होती तो कोई भी देश इतना विनाशकारी जैविक हथियार बनाना तो दूर उसकी कल्पना भी नहीं कर सकता था।

6 साल के अंतराल में मोदी और मनमोहन राज की तुलना?

पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह एवं वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में ज्यादा अंतराल नहीं हुआ। किंतु वर्तमान स्थिति में दोनों के कार्यकाल का तुलनात्मक अध्ययन शुरू हो गया है। पहली बार किसी राष्ट्राध्यक्ष के इतनी कम अवधि के कार्यकाल मैं पूर्व राष्ट्राध्यक्ष के कार्यकाल से तुलना होना आश्चर्यजनक है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 70 वर्ष पुराने प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के कार्यकाल के तुलना वर्तमान से कर रहे थे। अब मात्र 6 साल के बाद देश में मनमोहन सिंह के कार्यकाल की तुलना मोदी के कार्यकाल से की जा रही है।

2004 में जब मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री बने थे। उसके बाद से देश ने बड़ी तेजी के साथ आर्थिक प्रगति की ओर कदम बढ़ाना शुरू कर दिया था। 2008 की अमेरिका की आर्थिक मंदी के बाद सारे विश्व में जब हाय तौबा मची थी। उस समय मनमोहन सिंह ने भारत में इसका असर ज्यादा नहीं पड़ने दिया। बड़ी कुशलता के साथ उन्होंने अर्थव्यवस्था को संभाला। जिसके कारण अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति बराक ओबामा ने मनमोहन सिंह की तारीफ करते हुए, उन्हें दुनिया का बेहतर अर्थशास्त्री और अपना गुरु बताया था।

2009 में ही जब अमेरिका की आर्थिक मंदी के बाद सारी दुनिया में आधा पापी मची हुई थी। उस समय भारत में एच1 और एन1 वायरस ने हमला किया था। इस बीमारी से अट्ठारह सौ लोगों की जान गई थी। 20000 से अधिक लोग संक्रमित हुए थे। कोरोनावायरस के संक्रमण के बाद मनमोहन सरकार में 2009 में फैले एच1 वायरस को कंट्रोल किया था। उसकी कोई चर्चा उस समय नहीं हुई। कोई भय का वातावरण नहीं बना। कब संकट आया और निकल गया। इसको लेकर दोनों प्रधानमंत्रियों के कार्यकाल की चर्चा की जा रही हैं। मनमोहन के समय गुलाम नबी आजाद स्वास्थ्य मंत्री थे। वह लगातार मुख्यमंत्रियों एवं विभिन्न राज्यों के स्वास्थ्य मंत्रियों से से बात कर रहे थे। स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों से लगातार विचार-विमर्श करके निर्णय ले रहे थे। जिसके कारण 2009 के स्वाइन फ्लू के इस भीषण वायरस जो सुअरों से फैला था। यह बीमारी भी एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य में फैली थी। इसने कई देशों में तबाही मचाई थी। भारत ने बिना किसी बड़े जान माल के नुकसान हुए, उसे बेहतर ढंग से कंट्रोल कर लिया गया।

कोरोना वायरस के संक्रमण सं संबंधित सारे निर्णय प्रधानमंत्री कार्यालय से हो रहे हैं वर्तमान स्वास्थ्य मंत्री डॉक्टर हर्षवर्धन डॉक्टर होते हुए भी रोजाना ब्रीफिंग नहीं कर रहे हैं। उनके स्थान पर प्रधानमंत्री कार्यालय के चहेते अधिकारी लव अग्रवाल ब्रीफिंग करते हैं। मुख्यमंत्रियों के साथ भी वीडियो कांफ्रेंसिंग प्रधानमंत्री स्वयं करते हैं। इतने बड़े कोरोनावायरस के संकट में स्वास्थ्य मंत्री की भूमिका एक तरह से ना के बराबर है। भारत में कोरोनावायरस से संक्रमित मरीजों की संख्या 17137 पर पहुंच गई है। 556 मौतें हो चुकी हैं। रोजाना कोरोना वायरस संक्रमण के मरीज देशभर के अधिकांश राज्यों से सामने आ रहे हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के काम करने का तरीका बिल्कुल अलग है। वह स्वयं निर्णय लेते हैं, और निर्णय के अनुसार उसका क्रियान्वयन कराने के लिए उसमें अपनी टीम झोंक देते हैं। भारत में जब एक दिन और 21 दिन का संपूर्ण लाकडाउन घोषित किया गया। तब इसकी सूचना राज्यों के मुख्यमंत्रियों को भी नहीं थी। घोषणा होने के बाद सारे राज्यों को इसकी जानकारी लगी। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री ने इस बात पर अपनी आपत्ति जताते हुए कहा था, कि यदि प्रधानमंत्री इस निर्णय के पूर्व मुख्यमंत्रियों से उनकी राय जान लेते, तो लाक डाउन को और बेहतर तरीके से क्रियान्वयन किया जा सकता था।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कार्यशैली पूर्व के प्रधानमंत्रियों की तुलना में बिल्कुल अलग है। 2016 में जब उन्होंने नोटबंदी की घोषणा की तब भी केंद्रीय

मंत्रिमंडल के सदस्यों यहां तक कि वित्त मंत्री को भी इसकी सूचना नहीं थी। कुछ इसी तरह की स्थिति सर्जिकल स्ट्राइक को लेकर थी सर्जिकल स्ट्राइक जब पूरी हो गई। तब इसकी सूचना केंद्रीय मंत्रिमंडल के सदस्यों और राष्ट्र को प्राप्त हुई। जीएसटी को लेकर भी जिस तरह प्रधानमंत्री सचिवालय ने ताबड़तोड़ फैसले कर उसे लागू कराया। उस समय भी आर्थिक विशेषज्ञ और कारोबारियों से कोई विचार-विमर्श नहीं किया गया। परिणाम स्वरूप जीएसटी कानून देश का पहला ऐसा कानून है। जिसमें 2 साल के अंदर 600 से ज्यादा बार नियमों को संशोधित करना पड़ा। इसके पहले किसी कानून को लागू कराने में इतने ज्यादा संशोधन नहीं हुए हैं कोरोना वायरस के संक्रमण को देखते हुए लाक डाउन अवधि के नुकसान या फायदे के संबंध में कोई दूरदर्शिता नहीं होने के कारण, इसके जो परिणाम मिलने चाहिए थे। उसको लेकर अब प्रश्नचिन्ह लगने शुरू हो गए हैं। देश की अर्थव्यवस्था बुरी तरह से प्रभावित हुई है। जिसके कारण पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को याद किया जाने लगा है।

1991 में जब देश की अर्थव्यवस्था बहुत खराब थी। सोना गिरवी रखकर पेट्रोलियम का आयात करना पड़ा था। उस समय वित्त मंत्री के रूप में मनमोहन सिंह ने अर्थव्यवस्था को डूबने से बचाया था। इसी समय पर पूर्व प्रधानमंत्री नरसिंहा राव ने वित्त मंत्री मनमोहन सिंह की सलाह पर काम करते हुए, आर्थिक सुधार की जो नई शुरुआत की थी। उसके कारण भारत की अर्थव्यवस्था में व्यापक सुधार देखने को मिला। उसके बाद से 2014 तक विभिन्न परिस्थितियों में भी देश की आर्थिक स्थिति हर साल बेहतर होती रही। 2004 में मनमोहन सिंह ने नेशनल सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल की स्थापना की थी। जो पिछले 16 वर्षों में अपनी उपयोगिता समय-समय पर साबित करती रही है। कोरोनावायरस के समय भी

सनत कुमार जैन, लेखक

यही संस्था आपदा से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। मनमोहन सरकार ने 2005 में आपदा प्रबंधन अधिनियम लागू किया था। मोदी सरकार को भी कोरोना वायरस के संक्रमण से निपटने के लिए इस कानून का बहुत बड़ा सहारा मिला है। राष्ट्रीय बीमा योजना की शुरुआत 2008 में मनमोहन सिंह ने की थी। वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आयुष्मान भारत योजना के रूप में इसका आकार बढ़ाने का काम किया है।

आर्थिक मोर्चे पर मोदी सरकार बुरी तरह से विफल साबित हो रही है। विशेषज्ञों की माने तो वर्तमान प्रधानमंत्री जिस तरह से साहसी बनकर निर्णय करते हैं। बड़ी तेजी के साथ उन्हें लागू करने का प्रयास करते हैं। इसके कारण सबसे ज्यादा गड़बड़ियां उत्पन्न हुई है। आर्थिक व्यवस्था में आर्थिक विशेषज्ञों की राय लेकर उसके बारे में व्यापक जानकारी लेते हुए यदि वास्तविकता को ध्यान में रखते हुए निर्णय किए जाते तो भारतीय अर्थव्यवस्था आज दुनिया में सबसे बेहतर अर्थ व्यवस्था होती। लाक डाउन का जो निर्णय मात्र 3 घंटे की समयावधि में लागू कराया गया। यदि उसे 4 दिन का समय देकर लागू कराया जाता तो आज देश के आर्थिक हालात कुछ और होते लाक डाउन लागू कराने में की गई जल्दबाजी के कारण देश में जिस तरीके की अफरा-तफरी मची है। उसके कारण देश की अर्थव्यवस्था बद से बदतर हालत में पहुंच गई हैं। इसी तरह केंद्र सरकार द्वारा जो राहत पैकेज घोषित किए जा रहे हैं। उससे कोई राहत अर्थव्यवस्था को सुधारने में मिलेगी इसमें संदेह है। उल्टे जो उद्योग और व्यापार चल रहे हैं, उन्हें बहुत नुकसान उठाना पड़ेगा। वर्तमान केंद्र सरकार बड़े सतही अंदाज में जिस तरह बैंकर्स अपनी पूंजी को सुरक्षित रखने के लिए निर्णय करते हैं। लगभग वही सोच केंद्र सरकार ने बना रखी है। उद्योगों और कामगारों के लिए केंद्र सरकार द्वारा जो राहत पैकेज दिए जा रहे है। यदि वह 0 फीसदी ब्याज पर दिए जाते तो सरकार को ब्याज के रूप में जो राशि खर्च करनी पड़ती वह बहुत कम होती। इससे अर्थव्यवस्था को सुधारने में मदद मिलती। आर्थिक विशेषज्ञों के अनुसार जिस घबराहट और जल्दबाजी में निर्णय किए जा रहे हैं। उससे एक बार फिर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के बीच अर्थव्यवस्था को लेकर ना केवल भारत में वरन, सारी दुनिया में दोनों का कार्यकाल को लेकर चर्चा हो रही है। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने यह सरकार सलाह भी नहीं ले रही है। इसे सारी दुनिया आश्चर्य के रूप में देख रही है।

मुसलमानों से साफ-साफ बात क्यों नहीं की जा रही है?

श्रवण गर्ग, लेखक

हिंदी की एक प्रतिष्ठित वेब साइट (सत्यहिंदी.काम) में मुरादाबाद में हुए उस पागलपन को लेकर आलेख प्रकाशित हुआ है जिसमें वहां के एक मोहल्ले में इंदौर की टाटपट्टी बाखल की तरह ही स्वास्थ्य और पुलिसकर्मियों पर हमला कर दिया गया।लेखक इकबाल रिजवी ने तकलीफजाहिर की है कि इस समय मुसलमानों को 'सॉफ्ट टारगेट' बनाकर पागलों की तरह व्यवहार करने पर मजबूर किया जा रहा है ! लेखक ने आरोप लगाया है कि जमात' की आड़ में मुसलमानों का बुरा हाल किया जा रहा है और इससे प्रशासन के प्रति जो अविश्वास भाव उनमें बढ़ रहा है उसने यह हालात कर दिए हैं कि मुरादाबाद जैसा पागलपन सामने आ रहा है।आलेख में यह भी कहा गया है कि एक सुनियोजित झूठ को इतनी बार पूछा जा रहा है कि मुसलमान 'बैकफुट' पर आ गए हैं।' मुसलमानों की देश के प्रति निष्ठा को लेकर इस समय जो कुछ भी चल रहा है उससे कई नए सवाल खड़े होते है : पहला तो यह कि आजादी के बाद के तमाम सालों में (साम्प्रदायिक दंगों की घटनाओं और कश्मीर को छोड़कर) इस तरह का आचरण या पागलपन मुस्लिम बस्तियों की ओर से क्या पहली बार प्रकट हो रहा है या पहले के भी ऐसे कोई उदाहरण हैं जिन पर कि राष्ट्रीय स्तर की बहसें भी हो चुकीं हैं?

मुसलमान बच्चों को पोलियो की दवा पिलाने या मलेरिया की दवा का छिड़काव करने या शहर को 'नम्बर वन' बनाने के लिए इन्हीं इलाक़ों में 'अगर' स्वास्थ्य या सफाईकर्मी पहले भी गए हैं तो क्या तब भी ऐसी ही घटनाएं हुई हैं? अगर हुई हैं तो उनका पैटर्न क्या था? अगर ऐसा पहली बार हो रहा है तो क्या उसके कारणों में जाने की जानबूझकर कोशिश नहीं की गई? दूसरा सवाल यह है कि हमलों को लेकर चल रही तमाम बहसों में मुसलमान समाज के उन्हीं लोगों की ज्यादा भागीदारी क्यों हो रही है जो दूध को दूध और पानी को पानी कहने से हकलाते हैं? तीसरा सवाल यह है कि जो कैमरे स्टूडियो के अंदर लगे हैं वे हमलावरों के घरों के अंदर पहुँचकर उनसे उनके पागलपन का असली कारण क्यों नहीं पूछ रहे हैं? इंदौर की टाटपट्टी बाखल के मुसलमानों के पश्चाताप से भी दुनिया को रूबरू करवाना चाहिए था। और अंत में यह कि देश का समूचा हिंदू समाज अगर विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल नहीं है तो समूची मुसलमान कौम कैसे तबलीगी जमात, टाटपट्टी बाखल और मुरादाबाद हो सकती है? हम क्या ऐसा मानने को तैयार हो सकते हैं कि कोरोना की महामारी का आक्रमण अगर साल-छह महीने के बाद तब होता जब नागरिकता कानून और एनसीआर को लेकर मुस्लिमों की शंकाओं के घाव भर गए होते तो इस तरह की घटनाएं बिलकुल नहीं होती? शाहीनबाग चल रहा था तभी कोरोना हो गया और तभी तबलीगी जमात का जमावड़ा भी हो गया। क्या कुछ अजीब सा नहीं लगता? हुआ यह है कि जो एक और अवसर मुसलमानों को देश की मुख्यधारा के साथ एकाकार करने का मिला था उसे उन्होंने अपनी ही क़ौम के कुछ कट्टरपंथी सिरफिरों के कारण गंवा दिया।और फिर उसे बहुसंख्यक समाज के कुछ अनुदारवादियों ने लपक कर हथिया लिया और मीडिया के एक वर्ग ने भी उसे अपने एजेंडे का हथियार बना लिया। एक जो अंतिम सवाल 'थर्ड पार्टी' की तरफ से भी पूछने का बनता है वह यह है कि इतनी बड़ी आबादी की नीयत और राष्ट्रीयता पर अगर देश के अधिकांश लोगों का ही यक़ीन गड़बड़ा रहा है तो फिर यह भी बताया जाना चाहिए कि उसका क्या इलाज किया जाए? साफ-साफ क्यों नहीं बताया जा रहा है कि मुसलमानों से क्या करने को या कहाँ जाने को कहा जाए? और यह आदेश देश के संविधान की तरफसे कौन देगा? और अगर मुसलमान फिर भी यही कहते हैं कि हिंद की जमीन ही उनका खुदा है तो उसके बाद किस तरह के दस्तावेजों की उनसे मांग की जानी चाहिए? अगर इन सभी सवालों के जवाब उपलब्ध हैं तो उन्हें बिना किसी विलम्ब के सार्वजनिक किया जाना चाहिए कम से उस बड़ी जनसंख्या और उनके बच्चों का ख़याल करके जो दोनों तरफ की उत्तेजक भीड़ के बीच मौन और निःशस्त्र खड़ी हुई है।

न्यूज़ ब्रीफ

अब 5 मई तक बंदियों से नहीं कोई कर सकेगा मुलाकात

माही की गूंज, खरगोन। कोरोना वायरस के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए वर्तमान में लॉकडाउन चल रहा है। इस संक्रमण से बचाव की दृष्टि से जेलों पर बंदियों को उनके परिजनों, निकट संबंधियों एवं मित्रों से दी जाने वाली मुलाकात सुविधा 25 अप्रैल तक प्रतिबंधित की गई थी। इस संबंध में महानिदेशकल जेल एवं सुधारात्मक सेवाएं संजय चौधरी ने समस्त जेल अधीक्षकों को पत्र जारी किया है। उन्होंने कहा कि इस प्रतिबंधित अवधि को 5 मई तक बढ़ाया जाता है। शेष निर्देश पूर्ववत रहेंगे।

अशासकीय स्कूलों को मान्यता नवीनीकरण के लिए एक वर्ष की छूट

माही की गूंज, खरगोन। राज्य शासन द्वारा कोविड-19 के संक्रमण के चलते अशासकीय स्कूलों की मान्यता नवीनीकरण के लिए एक वर्ष की छूट प्रदान की गई है। यह अवधि पूर्व में दो बार बढ़ाई जा चुकी है। लॉकडाउन अवधि 3 मई तक बढ़ाए जाने पर संस्थाओं को होने वाली कठिनाईयों और छात्रहित को ध्यान में रखते हुए 31 मार्च 2021 तक के लिए अशासकीय स्कूलों की मान्यता को यथावत मान्य किया गया है। मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा मंडल से संबंध ऐसे समस्त अशासकीय हाईस्कूल एवं हायर सेकंडरी स्कूल, जिनकी मान्यता 31 मार्च 2020 को समाप्त हो गई है, उन्हें मप्र माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शालाओं के मान्यता नियम 2017 (यथा संशोधित दिनांक 3 मार्च 2020) के नियम 6 अनुसार मान्यता नवीनीकरण के लिए इस वर्ष आवेदन प्रक्रिया से छूट दी गई है। ऐसे विद्यालयों की मान्यता 31 मार्च 2021 तक की अवधि के लिए यथावत मान्य होगी। ऐसे सभी विद्यालयों को मान्यता नियमों में वर्णित मापदंडों एवं शर्तों का पालन किया जाना अनिवार्य होगा। इन सभी विद्यालयों को शैक्षणिक सत्र 2020-21 के लिए मान्यता नवीनीकरण के लिए निर्धारित शुल्क आगामी सत्र तक के लिए स्थगित किया गया है। भविष्य में मान्यता नवीनीकरण के लिए आवेदन किए जाते समय यह शुल्क जमा करना होगा। शैक्षणिक सत्र 2020-21 में नवीन मान्यता के लिए एमपी ऑनलाईन के मान्यता पोर्टल पर आवेदन अपलोड करने की समय सीमा 30 अप्रैल से बढ़ाकर 30 मई 2020 कर दी गई है।

आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और सहायिका भी मुख्यमंत्री कोविड-19 योद्धा योजना में शामिल

माही की गूंज, खरगोन। प्रदेश की लगभग एक लाख आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और सहायिका को मुख्यमंत्री कोविड-19 योद्धा कल्याण योजना का लाभ मिलेगा। भारत सरकार द्वारा कोविड-19 महामारी की रोकथाम के लिए कार्य कर रहे स्वास्थ्यकर्मियों के लिए प्रधानमंत्री गरीब कल्याण पैकेज के अंतर्गत विशेष बीमा योजना प्रारंभ की गई है। इसी के अंतर्गत प्रदेश में भी राज्य के कोविड-19 प्रभावित रोगियोंध्नागरिकों को अपनी सेवा प्रदान कर रहे कोरोना योद्धाओं के कल्याण के लिए यह योजना लागू की गई है। इसके तहत लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, चिकित्सा शिक्षा एवं आयुष विभाग के सभी सफाई कर्मचारी, वार्डबॉय, आशा कार्यकर्ता, पैरामेडिकल स्टॉफ तकनीशियन, डॉक्टर्स, विशेषज्ञ तथा अन्य स्वास्थ्य कार्यकर्ता, नगरीय प्रशासन के सभी सफाई कर्मचारियों को शामिल किया गया है। महिला एवं बाल विकास विभाग के प्रमुख सचिव अनुपम राजन ने कहा है कि आंगनवाड़ी कार्यकर्ता जोखिम उठाकर हर जिले में घर-घर जाकर सर्वे कर रही हैं। साथ ही बच्चों को पोषण आहार उपलब्ध कराने में भी घर-घर का दौरा कर रही हैं। ऐसे में उनका कई लोगों से संपर्क होता है, जिससे कोरोना संक्रमण का खतरा बना रहता है। इसलिए उन्हें इस बीमा योजना का लाभ दिया जाना चाहिए। प्रमुख सचिव श्री राजन ने सभी जिलों के कलेक्टर से कहा है कि कोविड-19 में एक्सपोजर और सक्रिय भूमिका को देखते हुए आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और सहायिका को मुख्यमंत्री कोविड-19 योद्धा कल्याण योजना में पात्र घोषित करें

शहर संक्रमित है गांव नहीं, किसानों को गांव में ही मिले कृषि आदान

माही की गूंज, खरगोन।

स्वामी विवेकानंद सभागृह में जिले के किसान संगठन थोक कृषि आदान विक्रेता और कृषि व उद्यानिकी विभाग के अधिकारियों की समन्वय बैठक आयोजित हुई। बैठक में विधायक श्री रवि जोशी ने कहा कि इन दिनों शहर संक्रमित है और गांव सुरक्षित है। हम नहीं चाहते है कि किसान शहर में आकर कृषि आदान खरीदें और यहां आकर हमारे गांव भी संक्रमित हो जाएं। इसलिए ऐसी व्यवस्था की जाए, जिससे किसानों को आगामी फसल में आवश्यक सामग्री उनके घर गांव तक पहुंचाई जाएं। यह व्यवस्था किसान, थोक विक्रेता और कृषि से संबंधित अधिकारी व अमला मिलकर करें। बैठक में थोक कृषि आदान व्यापारियों और किसान संगठनों के प्रतिनिधियों से आवश्यक सुझाव लिए गए। थोक विक्रेताओं से कहा गया कि वे छोटे नगरों और गांवों में स्थित उनके सब सेलर को निर्धारित दर अनुसार ही बीज प्रदाय करें। किराणा थोक विक्रेताओं ने भी एक रूट प्लॉन कर गांवों में किराणा सामग्री प्रदाय की व्यवस्था बनाई गई है और सफलता भी हुई है। उसी अनुरूप कृषि आदान थोक विक्रेता पालन करें। किसानों को उन स्थानों तक आने तक कोई समस्या नहीं होगी, क्योंकि कई किसान व्यापारियों से संपर्क में है। वहीं कृषि व उद्यानिकी विभाग का अमला इस कार्य में निगरानी रखेगा। आवश्यक होने पर अन्य व्यवस्थाएं जैसे-डिलेवरी करने के लिए अनुमतियां प्रदान कर सकेंगे। बैठक में जिला पंचायत सीईओ श्री डीएस रणदा, एसडीएम श्री अभिषेक गेहलोत, कृषि उप संचालक एमएल चौहान, उद्यानिकी उप संचालक, केके गिरवाल, सहायक संचालक प्रकाश ठाकुर, उद्योगपति कल्याण अग्रवाल, समाजिक कार्यकर्ता ओम पाटीदार, थोक विक्रेता अमित महाजन व किसान संगठनों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

किसानों के लिए कंट्रोल रूम होगा स्थापित

बैठक में कलेक्टर श्री गोपालचंद्र डाड ने कृषि विभाग को निर्देश दिए कि किसानों के लिए कंट्रोल रूम स्थापित करें और गांवों में कृषि विस्तार अधिकारियों को योजना अनुरूप तैनात करें। साथ ही कृषि विभाग से जुड़े सभी किसानों को एसएमएस करें कि उनके लिए किस तरह की व्यवस्था की गई है। किसी भी प्रकार की बीज की कमी नहीं आने दी जाएगी। निर्धारित दर से अधिक राशि लेने वाले पर निश्चित कार्यवाही की जाएगी। इसके लिए भी ग्रामीण विस्तार अधिकारियों को निर्देश दिए जाएं। इसके अलावा जिन गांवों में डीलर नहीं है, वहां लाईसेंस प्राप्त डीलर दुकान खोल सकेंगे। कृषि उप संचालक इसके लिए लाईसेंस व वाहन की अनुमति देंगे। थोक विक्रेता व डीलरों को निर्देश दिए कि किसानों को पक्का बिल ही दिया जाए। किसानों के प्रतिनिधियों ने किसानों के घर पड़ी मिर्च की बिक्री के बारे में भी बताया गया। साथ ही निर्देश दिए गए कि किसानों की उपज खरीदने व बेचने पर कोई पाबंदी नहीं है। व्यापारी गांव में आकर या व्यापारियों से सौदा पत्र तैयार कर अपनी उपज बेच सकते है। सिर्फमंडी बंद है।

लॉकडाउन के बीच समर्थन मूल्य पर गेहूं उपार्जन से किसानों को राहत

बिस्टान सोसायटी ने खरीदे दो हजार क्विंटल गेहूं

माही की गूंज, खरगोन।

प्रदेश सरकार द्वारा लॉकडाउन के दौरान समर्थन मूल्य पर गेहूं उपार्जन किए जाने से क्षेत्र के किसानों को बड़ी राहत मिली है। आदिम जाति सेवा सहकारी संस्था मर्यादित बिस्टान में वर्ष 2020-21 अंतर्गत 792 किसानों ने गेहूं विक्रय के लिए पंजीयन करवाया है। संस्था के इकोग्रीन जी-3 वेयर हाउस नागझिरी स्थित खरीदी केंद्र 1 व 2 पर किसान अपनी उपज का विक्रय करने पहुंच रहे हैं। संस्था ने अब तक दो हजार क्विंटल गेहूं उपार्जन किया है। संस्था को करीब 30 हजार क्विंटल गेहूं उपार्जन की उम्मीद है। कृषक राजेश मालवीया ने बताया कोरोना संक्रमण के चलते जारी लॉकडाउन के बीच समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीदी होने से राहत मिली है। संस्था प्रबंधक कैलाश पाटिल, केंद्र प्रभारी माणक पाटिल, ग्रामसेवक राजेंद्र ठक्कर, सर्वेयर अनिल डावर, ऑपरेटर अशोक कुकलोरिया सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। संस्था प्रबंधक श्री पाटिल ने बताया कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव के लिए दिशा-निर्देशानुसार अभी कर्मचारियों, हम्मालों व कृषकों के बीच सोशल डिस्टेंसिंग का पालन किया जा रहा है। सभी के लिए मुंह पर मॉस्क लगाना व सेनेटाइजर से हाथ साफ करना अनिवार्य है। इस वेयर हाउस पर नागझिरी, टेमा बेहरामपुर व देवलगांव सोसायटी के खरीदी केंद्र भी संचालित हो रहे हैं।

कोरोना वायरस के योद्धा डॉ. मोहरानी निभा रहे है अपनी नैतिक जिम्मेदारी भी

माही की गूंज, बड़वानी। कोरोना वायरस से जारी संग्राम में निःसंदेह विजय हमारी होगी, क्योंकि हर नागरिक अपना नैतिक दायित्व निभा रहा है, वही इस कार्य में शासकीय कर्मी भी पीछे नही है। अगर डॉक्टर अपनी 6 घण्टे की ड्यूटी पूर्ण करने के पश्चात् अपना नैतिक दायित्व निभाने ग्राम में पहुंचकर 6 घण्टे ओपीडी संचालित कर लोगो को स्वास्थ्य लाभ पहुंचाये तो इसे आप क्या कहेंगे ।

जिले के सबसे सुन्दर एवं प्रायवेट चिकित्सालय के समान दिखाई देने वाले भवती के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में पदस्थ डॉ. अरूण मोहरानी वर्तमान में जहॉ सुबह 6 से दोपहर 2 बजे तक, जिला कन्ट्रोल रूम में उपस्थित होकर आने वाले मोबाइल विडियो काल पर लोगो की स्वास्थ्य समस्या सुनकर एवं देखकर उनको उचित सलाह एवं उनके ग्राम, शहर में पदस्थ स्वास्थ्य विभाग के मैदानी अमले से सम्पर्क कर उन्हें दवा पहुंचवाने का अपना पदीन दायित्व निभाते है। वही दोपहर 2.30 बजे से अपने मूल पदस्थ स्थान भवती पहुंचकर आरोग्यम प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में बैठकर ओपीडी का संचालन कर ग्रामीणो का स्वास्थ्य परीक्षण कर उन्हें निःशुल्क दवाईयो का भी वितरण करवाते है। यह कार्य वे रात्रि 7 बजे तक या आने वाले रोगियो की स्थिति तक निरन्तर जारी रखते है।

डॉ. मोहरानी के इस जज्बे के कायल आज सभी है। उनकी एवं उनके केन्द्र में पदस्थ स्टाफकी इसी सेवाभाव के कारण उनके आरोग्यम केन्द्र को जिले में सर्वप्रथम कोरोना वायरस से जारी इस लड़ाई के लिये क्वारेंटाइन वार्ड बनाया गया था । किन्तु कार्य की सुविधा और रोगियो की संख्या के मद्देनजर अब क्वारेन्टाइन वार्ड जिला चिकित्सालय के ट्रामा सेंटर में बनाया गया है। जिसके कारण डॉ. मोहरानी की ड्यूटी '' जिला कन्ट्रोल रूम '' में लगाई गई है।

महाराष्ट्र की सीमा से आ रहे दूसरे राज्यों के मजदूरो को रोकने हेतु भेजा जाएगा पत्र

माही की गूंज, बड़वानी। देश में टोटल लॉक डाउन के नियम का पालन अनिवार्य रूप से करवाने हेतु महाराष्ट्र के सीमा प्रान्त के जिला प्रशासन को पत्र लिखा जाए, जिससे मध्यप्रदेश की सीमा में सत्त प्रवेश कर रहे दूसरे राज्य के मजदूरों को महाराष्ट्र में ही रूकवाया जा सके।

सांसद गजेन्द्रसिंह पटेल की अध्यक्षता में मंगलवार को सम्पन्न डिस्ट्रिक मैनेजमेंट ग्रुप की बैठक में उक्त निर्णय सर्वसहमति से लिया गया । ज्ञातव्य है कि महाराष्ट्र से उत्तरप्रदेश एवं राजस्थान जाने वाले मजदूर, बड़ी बिजासन से मध्यप्रदेश की सीमा में प्रवेश कर रहे है। जिसके कारण जिला प्रशासन को इन्हें सेंधवा एवं उसके आस-पास बनाये गये क्वारेंटाइन सेंटरो में रूकवाकर खाने - पीने की व्यवस्था कर रहा है। इसके पश्चात् भी यह मजदूर, अवसर मिलने पर अपने राज्य लौटने का प्रयास करते है, जिससे कई बार अप्रिय स्थितियो का सामना भी करना पड़ रहा है।

बैठक के दौरान तय किया गया कि राज्य शासन के निर्देशानुसार मध्यप्रदेश का रहवासी कोई भी व्यक्ति यदि जिले में रूका हुआ है तो उसे, उसके स्वयं वाहन से अपने गणतव्य तक जाने की अनुमति प्रदान की जाये। साथ ही मध्यप्रदेश के रहवासी ऐसे मजदूर जिनके पास स्वयं के वाहन नही है, उन्हें निःशुल्क वाहन सुविधा उपलब्ध करवॉकर उनके गणतव्य तक पहुचाया जाये ।

बैठक के दौरान तय किया गया कि जिस प्रकार जिला मुख्यालय पर थोक विक्रेतओं को कंटेनमेंट एरिया के अंदर स्थित बैंको से लेन - देन की सुविधा प्रदान की गई है, वैसी ही सुविधा सेंधवा के थोक व्यापारियों को भी उपलब्ध करवाई जाये, जिससे वहॉ पर भी पर्याप्त मात्रा में खाद्यान्न सामग्री की उपलब्धता बनी रहे। बैठक के दौरान तय किया गया कि मनरेगा सहित अन्य निर्माण कार्य स्वीकृत एवं प्रारंभ होने से सीमेंट, सरिया की दुकानो को भी सीमित अवधि के लिये खुलने की अनुमति प्रदान की जाये। बैठक में सांसद श्री गजेन्द्रसिंह पटेल, कलेक्टर श्री अमित तोमर, पुलिस अधीक्षक श्री डीआर तेनीवार सहित शासकीय एवं अशासकीय सदस्य उपस्थित थे ।

मकान की ऊपरी मंजिल में लगी आग, लॉकडाउन में उमड़ पडी भीड़

माही की गूंज, खरगोन। मंगलवार की शाम लगभग 6 बजे हैदर मस्तान चौक क्षैत्र में एक मकान की ऊपरी मंजिल मे आग गई।इस मकान से लगे अन्य मकानो के निवासियों मे हडकंप मच गया। मकान से आग और धुआँ निकलते देख लाकडाउन मे अपने घरो मे कैद लोगो की भीड उमड पडी।पास ही रहने वाले ने अपने मकान की छत पर जाकर जल रहे मकान पर पानी फेकना शुरू किया। बढती आग पर फेका जा रहा पानी बेअसर रहा।कुछ देर बाद पँहुची नगर पालिका की दमकल ने इस आग को फैलने से रोका ।लाकडाउन को भुल कर जमा हुँई भीड़ पुलिस के आते ही तितर बितर हो गई। दमकल ने आधा घंटे के दौरान आग पर काबू पा लिया।

कलेक्टर ने कन्टेन्मेंट क्षेत्र में नागरिकों से चर्चा की

माही की गूंज, खण्डवा।

खण्डवा शहर में कोरोना संक्रमण वाले मरीजों के घरों के आसपास के क्षेत्र को कन्टेन्मेंट क्षेत्र घोषित कर वहां कम्पलीट लॉकडाउन किया गया है। मंगलवार को कलेक्टर श्रीमती तन्वी सुन्द्रियाल ने पुलिस अधीक्षक डॉ. शिवदयाल सिंह के साथ खानशाहवली व खड़कपुरा के आसपास बनाए गए कन्टेन्मेंट क्षेत्र का दौरा किया तथा वहां के नागरिकों से चर्चा कर लॉकडाउन के कारण आ रही समस्याओं की जानकारी ली। इस दौरान स्थानीय नागरिकों ने बताया कि कोई समस्या नही है, सभी लोग कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए घरों में ही रह रहे है। भ्रमण के दौरान अपर कलेक्टर श्रीमती नंदा भलावे कुशरे, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्रीमती सीमा अलावा सहित विभिन्न अधिकारी मौजूद थे। कलेक्टर व पुलिस अधीक्षक ने अपने भ्रमण के दौरान वहां ड्यूटी पर तैनात पुलिसकर्मियों से भी चर्चा की तथा उनके भोजन पानी व अन्य व्यवस्थाओं के संबंध में जानकारी ली।

उचित मूल्य की दुकान, अनाज मण्डी व उपार्जन केन्द्र का भी किया निरीक्षण

भ्रमण के दौरान कलेक्टर श्रीमती सुन्द्रियाल ने कहलनगंज की उचित मूल्य की दुकान का भी निरीक्षण किया तथा दुकान संचालक से गरीबों को दिए जाने वाले राशन के वितरण की प्रगति की जानकारी ली। उन्होंने उचित मूल्य की दुकान पर आए उपभोक्ताओं से भी चर्चा की। कलेक्टर श्रीमती सुन्द्रियाल ने ग्राम रोशनाई में स्थित उपार्जन केन्द्र में व्यवस्थाओं का जायजा भी लिया। वहां उन्हें बताया गया कि इस उपार्जन केन्द्र से 457 किसान पंजीबद्ध है। उन्होंने वहां तैनात सर्वेयर से चर्चा कर गेहूं की गुणवत्ता व एफएक्यू के संबंध में पूछताछ की। उन्होंने उपार्जन केन्द्र पर नमी मापक यंत्र की उपलब्धता की भी जानकारी ली। इस अवसर पर कलेक्टर श्रीमती सुन्द्रियाल को बताया गया कि वहां कार्यरत सभी हम्मालों का स्वास्थ्य परीक्षण करा दिया गया है। उन्होंने नई कृषि उपज मण्डी जाकर वहां गेहूं खरीद व्यवस्था की जानकारी भी मण्डी सचिव श्री दिलीप नागर से चर्चा कर ली।

दिन में कोरोना का भय और रात में चोरों का

जिला पुलिस अधीक्षक ने कहा अफवाहों पर ध्यान न दें

माही की गूंज, कुक्षी।

नगर में शनिवार की रात्रि की तरह रविवार की रात्रि में भी चोरो के आने की दहशत से नगरवासी व आसपास के ग्रामों में दहशत का माहौल बना रहा। कुक्षी से लगे पास के ही गांव सुसारी में फायर होने की खबर से आमजन काफी भयभीत हैं। इसकी जानकारी थाना प्रभारी कमल सिंह पवांर को लगी। तत्काल थाना प्रभारी गांव सुसारी पहुंचे और मौका मुआयना किया। थाना प्रभारी ने बताया कि एक साथ कई जगहों से गोली चलने एवं चोर घुसने की सूचनाएं अलग-अलग स्थानों से एक ही समय में आ रही है। यह अफवाह है। पंवार ने कहा कि चोरों को लेकर हमें सतर्क रहने की अवश्यकता है। पुलिस द्वारा लगातार गश्त दी जा रही है। कोरोना वायरस की महामारी को लेकर पुलिस द्वारा चेकिंग पाइंट भी लगाए गए हैं। पुलिस प्रशासन चोरियों को रोकने के लिये भरसक प्रयास कर रही हैं, किन्तु पुलिसकर्मी अभी लोगो को लॉक डाउन का पालन करवाने में लगे हुए हैं। ऐसे में जनता भी पुलिस प्रशासन का सहयोग करें एवं अफवाह जैसी स्थिति को फैलने न दें।

रविवार रात्रि रात्रि के ९रू00 बजे अचानक ग्राम सुसारी में फायर होने की खबर आग की तरह फैलने के बाद अचानक नगरवासियों में दहशत का माहौल फैल गया। नगर के लोगों द्वारा अपनी सुरक्षा का जिम्मा स्वयं लेते हुए अपने गली मोहल्लों में गश्त करते दिखाई दिए। क्योंकि एक दिन पूर्व समीप के रामपुरा में भी चोर पकड़ाने की घटना हुई थी।

इसी बीच रात्रि के समय बड़ी तादाद मे चोरों के आने की अफवाह ने लोगों की रात की नींद हराम कर दी। सोशल मीडिया के माध्यम से फैली अफवाह ने घरों मे कैद नागरिक चौक चौराहे पर एकत्रित हो गये और मैसेज की सत्यता व घटनाक्रम की जानकारी जुटाने मे लगे रहे। इतना ही नही कई मोहल्ले के लोग सक्रिय होकर रात्रिकालीन गस्ती देते हुए रातभर जाग कर बिताई। इस संबंध में धार जिला पुलिस अधीक्षक आदित्य प्रताप सिंह से जब इस संवाददाता ने चर्चा की तो उन्होंने बताया कि इस प्रकार के जो मैसेज चल रहे हैं, वह मात्र अफवाह है। अफवाहों पर किसी प्रकार से ध्यान न दिया जाए। भ्रामक मैसेज फैलाने पर कार्यवाही की जाएगी। पुलिस लगातार रात्रि में पेट्रोलिंग का कार्य कर रही है। आपकी सुरक्षा करना हमारा कर्तव्य है। थाना प्रभारी कमल सिंह पंवार ने बताया कि पुलिस थाना कुक्षी के अंतर्गत लगातार चेकिंग पाइंट लगा कर पुलिस बल तैनात किया गया है। वही चोरों की बात को लेकर उन्होंने कहा पुलिस द्वारा लगातार पूरे क्षेत्र में सर्चिंग का कार्य किया है।

भोजन व्यवस्था का कलेक्टर ने किया अवलोकन

माही की गूंज, खरगोन। कलेक्टर गोपालचंद्र डाड ने जिला स्तरीय संकट प्रबंधन समुह की बैठक के पश्चात नगर पालिका द्वारा भोजन प्रदाय व्यवस्था का अवलोकन किया। इस दौरान वे वल्लभा गार्डन में बनाए गए रसोई घर पहुंचे। कलेक्टर श्री डाड ने सोशल डिस्टेंसिंग को अपनाते हुए खाद्य पदार्थ बनाने की इस व्यवस्था की सराहना की। इस दौरान विधायक श्री रवि जोशी, पुलिस अधीक्षक श्री सुनील पांडेय, नपा सीएमओ निशिकांत शुक्ला भी उपस्थित रहे। नपा स्वास्थ्य अधिकारी प्रकाश चित्ते ने बताया कि यहां प्रतिदिन 2700 व्यक्तियों का भोजन बनता है। 2500 पैकेट शहर में जरूरतमंदों को उपलब्ध कराया जाता है। जबकि 200 अन्य पैकेट कोरोनटाईन में रखे गए व्यक्तियों के लिए बनाए जाते है। इस कार्य में लगभग 70 से अधिक नगर पालिका का अमला लगा हुआ है। इस व्यवस्था के लिए कमल पटेल को नोडल अधिकारी बनाया गया है।

कोविड-19 सैम्पल कलेक्शन यूनिट का सांसद डामोर ने किया शुभारंभ

जिला केमिस्ट एसोसिएशन के तत्वावधान में जिला चिकित्सालय को मिली एक और सौगात

माही की गूंज, झाबुआ।

जिला चिकित्सालय में बुधवार को कोविड-19 सैम्पल कलेक्शन यूनिट का शुभारंभ किया गया। जिसमें कोरोना संदिग्ध मरीजों के सैम्पल लेने वाले टेक्निशियनों को इस यूनिट के अंदर रहकर सैम्पल कलेक्ट करना होगा। जिससे की उनका भी संक्रमण से बचाव हो सके। इस यूनिट का शुभारंभ क्षेत्रिय सांसद गुमानसिंह डामोर ने किया गया। इसके अलावा भाजपा जिलाध्यक्ष ओम शर्मा, डॉ विक्रांत भूरिया, ओपी राय, नरेन्द्र राठोरिया, अंकुर पाठक, जुवानसिंह गुंडिया भी उपस्थित थे।

कैमिस्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष मनोज बाबेल द्वारा सांसद श्री डामोर को कोविड- 19 सेम्पल कलेक्शन यूनिट के बारे में जानकारी देते हुये।

हितेश गणपत परमार को दो लॉख को चेक प्रदान करते हुये सांसद डामोर।

जिला केमिस्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष मनोज बाबेल ने बताया कि जिला झाबुआ केमिस्ट एवं ड्रगिस्ट एसोसिएशन द्वारा जिला झाबुआ सहित 6 ग्रामों में जिसमें पारा, थांदला, मेघनगर, राणापुर, पेटलावद में कोविड-19 सैम्पल कलेक्शन यूनिट उपलब्ध कराई जा रही हैं। जिसकी अनुमानित लागत करीब 2 लाख रूपए है। झाबुआ जिले के औषधि निरीक्षक कमल अहिराओ के मार्ग दर्शन एवं प्रेरणा से यह कार्य संभव हो पाया है। इस यूनिट की डिजाईनिंग सिविल सर्जन डॉ बी एस बघेल, आरएमओ डॉ सावनसिंह चौहान, एवं डॉ एम किराड द्वारा बताई गई। झाबुआ जिले के सभी कैमिस्ट का सहयोग कोविड-19 महामारी के चलते इसे सफल बनाया गया है। इसका उपयोग कोरोना संभावित मरिजो की जांच के लिये किया जायेगा। इसमें पेथॉलाजिस्ट एलपीई पूरी कीट से केवल 70 प्रतिशत संक्रमित होने से अपनी सुरक्षा कर पाता था। लेकिन अब इस यूनिट के माध्यम से इस यूनिट का उपयोग करने पर वह 99 प्रतिशत तक सुरक्षित रहेगा। साथ ही इसका उपयोग भविष्य में होने वाली किसी भी तरीके की जांच में किया जा सकेगा। इस अवसर पर केमिस्ट एसोसिएशन से महावीर जैन, बृजेश टवली, दीपक डुंगरवाल, विकास शाह, नगर केमिस्ट एसोसिएशन के हरिश अग्रवाल एवं कपिल गादिया भी उपस्थित थे।

लक्ष्मीबाई मार्ग मित्र मंडल ने कोरोना वारियर्स का पुष्प वर्षा कर किया स्वागत

देश में अब तक कोरोना से मृत हुए लोगों को दी श्रद्धांजलि

माही की गूंज, झाबुआ। शहर के वार्ड क्र. 5 स्थित लक्ष्मीबाई मार्ग में लक्ष्मीबाई मार्ग मित्र मंडल द्वारा कोरोना वायरस जैसी महामारी के बीच लगे संपूर्ण लॉकडाउन के बीच कोरोना योद्धाओं और कर्मवीरों के रूप में अपनी दिन-रात सेवाएं दे रहे सफाईकर्मियों, स्वास्थ्यकर्मियों और पुलिसकर्मियो का 20 अप्रैल, सोमवार शाम 5 बजे पुष्पमाला पहनाकर एवं पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। उनकी सेवाओं के लिए उन्हें सैल्यूट किया गया। साथ ही देश में अब तक कोरोना से संक्रमित सभी मृतकों को भी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

पार्षद नरेन्द्र संघवी एवं लक्ष्मीबाई मार्ग मित्र मंडल के गजेन्द्रसिंह शक्तावत, विशाल व्यास, संजय छाजेड़, राणाजी कटकानी, विजय चौहान, श्रीमती चेतना चौहान सहित लक्ष्मीबाई मार्ग के समस्त रहवासियों ने मिलकर सफाईकर्मियों, स्वास्थ्यकर्मियों, पुलिसकर्मियों को मुंह पर मास्क पहनाकर एवं सोशल डिस्टेनसिंग में खड़े कर उनका पुष्पमाला पहनाकर एवं उन पर पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। इस अवसर पर विशेष रूप से नगरपालिका झाबुआ के सुपर हीरो, कर्मवीर सेनेट्री प्रभारी कमलेश जायसवाल, जिनके नेतृत्व में शहरभर में सेनेटाइजेशन का कार्य धुआंधार तरीके से चल रहा है। साथ ही प्रतिदिन सड़कों की सफाई, नाले-नालियों की सफाई, कूड़ा-कचरे की सफाई का नियमित कार्य हो रहा है, ऐसे जायसवाल का पार्षद संघवी ने स्वागत कर उपस्थितजनों ने एक साथ कर्तल ध्वनि कर सम्मान किया।

बाद देश में अब तक कोरोना से संक्रमित मरीज, जिनकी मृत्यु हो चुकी है। उन्हें एवं विशेषकर इंदौर के थाना प्रभारी की कोरोना वायरस से मृत्यु होने पर सलामी देते हुए भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। वर्तमान में जो कोरोना से संक्रमित मरीज है, उनके जल्द स्वस्थ होने की भी कामना की।

वार्ड 3 में नहीं हो रही साफ-सफाई

माही की गूंज, झाबुआ। नगर में जहां एक ओर कोरोना वायरस को लेकर नगर में हर वार्डों में साफ सफाई को लेकर विशेष इंतजाम किये जा रहे है। इसी के साथ ही नगर को कई हिस्सो को सेनेटाईजर किया जा रहा हैं लेकिन इसके विपरित वार्ड क्रमांक 3 में साफ सफाई को लेकर कोई ध्यान देने वाला नही है। इस वार्ड में नाली टूट चुकी है वही नाली का गंदा पानी पुरे सडको पर आ चुका है। जिसके कारण वार्डवासियो को बदबू के कारण हाल बेहाल हो रहा है। वही वार्डवासियो के द्वारा यह कहा जा रहा है कि पार्षद के द्वारा भी इस ओर कोई ध्यान नही दिया जा रहा है। वार्ड वासियो में राम, अर्जून, कमलेश, दिलीप, जय पिन्टू आदि द्वारा बताया गया कि ऐसे मे अपनी समस्याये अगर बताये तो किसको बताये।

लॉक डाउन में बरवेट पंचायत में मुस्तैद प्रशासन

माही की गूंज , पेटलावद।

पेटलावद के निकट ग्राम पंचायत बरवेट कोरोना वायरस के चलते पूरी तरह से लॉकडाउन हैं। पेटलावद विधानसभा की बड़ी पंचायतों को छोड़ दिया जाए तो अधिकांश ग्राम पंचायतों में लॉक डाउन का इतना प्रभाव देखने को नही मिलता। लेकिन ग्राम पंचायत बरवेट के सचिव कैलाश भाभर और राजस्व के हल्का पटवारी रामसिंह डामर दोनों अपनी प्रशासनिक टीम के साथ मुस्तैद हैं। बरवेट में ग्राम पंचायत सचिव कैलाश भाभर, पटवारी रामसिंह डामर, उपयंत्री अहिरवार, रोजगार सहायक जवरसिंह सहित चार कोटवार की टीम पूरे दिन मुस्तैद रहती हैं। जिससे लॉक डाउन के नियमों का पालन कराने में सुविधा होती हैं। पुलिस बल नही होने के बाद भी बरवेट की व्यवस्था अन्य छोटी पंचायत मुकाबले अच्छी व्यवस्था है। जहां कई हलकों में किसानों को पटवारियों को खोजना पड़ रहा हैं। वही पटवारी रामसिंह डामर अपनी ड्यूटी के दौरान ही मोबाइल से कृषक सम्मान निधि से वंचित किसानों का ऑनलाइन जोड़ कर सहयोग कर अपना कार्य कर रहे है। ग्राम पंचायत बरवेट की व्यवस्था की तारीफप्रभारी तहसीलदार जितेंद्र अलावा और जिला सीइओ संदीप शर्मा भी कर चुके हैं।

आखिर खवासा क्षेत्र के मजदूर कहां गए?

माही की गूंज, भामल। सुनील सोलंकी

एक तरफजहां देश में कोरोना का कहर जारी हैं, तो वहीं कई मजदूर अन्य राज्यों में फंसे हुए हैं। इसको लाने के लिए प्रशासन हर संभव प्रयास कर रहा है, लेकिन कहीं ना कहीं मजदूरों को आज भी भूख और प्यास से पीड़ित होकर अपने गांव की ओर रुख करने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। तो वहीं राज्य की सभी सीमाएं सील करके इन मजदूरों को एक राज्य से दूसरे राज्य में आने में काफी परेशानी हो रही है। लेकिन फिर भी प्रशासन इनको लाने का प्रयास कर रहा है। कई बार यह मजदूर भूखे पेट सोने को भी मजबूर हो रहे हैं, तो वही इन मजदूरों को भी काफी परेशानी से गुजरना पड़ रहा है। कुछ ऐसा ही मामला थांदला-पेटलावद विधानसभा के संबंधित ग्राम पंचायत में दूसरे राज्यों में मजदूरी करने के लिए गए 7 बसों के माध्यम से लाया गया। इसमें पेटलावद की बामनिया पंचायत के अमरगढ़ तो वहीं खवासा की बरवाड़ा, खवासा कुकड़ा आदि पंचायतों में रात के समय में बसों के माध्यम से लाने का प्रयास सफल हुआ। तो वहीं संबंधित चौकी प्रभारी ने भी पूरी डिटेल लेकर बसों के चेक करके संबंधित पंचायत सचिव को इस मामले में अवगत करवाया।

परंतु आश्चर्य की बात तो यह है कि आज भी समाचार लिखे जाने तक संबंधित ग्राम पंचायत सचिव को यह नहीं पता कि वह मजदूर कहां पर है। सचिव का यह भी कहना है कि हम उनको तलाश कर रहे हैं। वही समाचार लिखे जाने तक आंगनवाड़ी कार्यकर्ता उन लोगों को ढूंढने का प्रयास कर रही हैं, लेकिन अभी तक मिल न तो मजदूर मिल पाए है और न ही उनकी स्क्रीनिंग हो पाई है। साथ ही ही उनके रहने खाने की व्यवस्था भी नहीं हो पाई है। सचिव का कहना है कि हम उनकी सभी व्यवस्था करेंगे। अब देखना यह है कि यह मजदूर कब और किसके माध्यम मिलते हैं। किसके द्वारा इनकी स्क्रीनिंग होती है। माही की गूंज के समाचार लिखने के बाद अभी तक इन मजदूरों की कोई भी सूची संबंधित ग्राम पंचायत को नहीं मिली थी। तो वहीं बामन परवाना के सचिव का कहना है कि हमारे पास सिर्फमौखिक चौकी प्रभारी के माध्यम से कहा गया था। लेकिन जिनके नाम हैं हम उनको ढूंढने का प्रयास कर रहे हैं।

नौगावां में 15 प्रवासी मजदूरों को 14 दिन के लिए किया क्वारंटाइन

माही की गूंज, थांदला रोड़। देश में फैल रही कोरोना बीमारी को रोकने के लिए प्रधानमंत्री ने देश में 3 मई तक लॉकडाउन किया है। जिसमें किसी को भी एक जिले से दूसरे जिले या एक राज्य से दूसरे राज्य में आने जाने की अनुमति नहीं है, फिर भी लोग इसका पालन नहीं कर रहे। जिसका एक उदाहरण पिटोल बॉर्डर पर मंगलवार शाम देखने को मिला। जहां पुलिस प्रशासन द्वारा 15 लोगों को मप्र सीमा में घुसते हुए रोका और उन्हें ग्राम नौगावां में बनाए गए क्वारंटाइन सेंटर शासकीय बालक छात्रावास में 14 दिन के लिए क्वारंटाइन किया। छात्रावास अधीक्षक लालजी देवल से बात करने पर बताया गया कि इन्हें पुलिस प्रशासन ने मंगलवार रात्रि 7 बजे के आसपास यहा छोड़ा है। ये दो परिवार है। एक परिवार के दो लोग है, जो गुजरात के गांधीनगर से आ रहे थे और मंदसौर के भानपुरा जा रहे थे। बाकी 13 लोग एक परिवार के है। जिनमे छोटे-छोटे बच्चे भी हैं. जो गुजरात के आणंद से आ रहे थे। जिन्हें उत्तर प्रदेश के हमीरपुर जाना था। इनकी जांच बार्डर पर हो चुकी है और मेघनगर स्वास्थ्य केंद्र बीएमओ डॉ सेलेक्सी वर्मा के निर्देश पर बसंत मोर्य, सुपरवाइजर नानालाल पाटीदार, धापू मंसारे व एएनएम शकुंतला भूरा ने आकर सभी 15 लोगों से स्वास्थ्य संबंधी पूछताछ की व चौकी प्रभारी रुकमणी अहिरवार व महावीरसिंह द्वारा भी सभी से जानकारी लो गई। सुरक्षा की दृष्टि से आरक्षक रूपेश मेहता व कोटवार को बालक छात्रावास पर तैनात किया। थांदला एसडीओपी मनोहर गवली द्वारा भी क्वारंटाइन केंद्र पर आकर सभी को सोशल डिस्टेंस का पालन करने की समझाइश दी गई।

सेन समाज ने सेनजी महाराज का जन्मोत्सव अपने घरों पर मनाया

पूजन-आरती कर लगाया नैवेद्य, शाम को घरों पर किए दीपक प्रज्जवलित

माही की गूंज, झाबुआ। सेन समाज झाबुआ द्वारा प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी सेनजी महाराज की जयंती 19 अप्रेल, रविवार को मनाई गई। इस बार कोरोना वायरस (कोविड-19) से रोकथाम हेतु शहर में लगे संपूर्ण लॉकडाउन के कारण समाजजनों ने घरों पर ही अपने धर्मगुरू की पूजन-आरती कर उन्हें नैवेद्य लगाया। शाम को घरों के दरवाजे और बालकनी में दीपक प्रज्जवलित किए।

जानकारी देते हुए समाज अध्यक्ष घनष्याम भाटी ने बताया कि कोरोना वायरस से रोकथाम हेतु शहर में लगे संपूर्ण लॉकडाउन के कारण शासन-प्रषासन के निर्देषों का पूर्णतः पालन करते हुए सेन समाज झाबुआ ने रविवार को प्रातःकाल अपने घरों पर सेनजी महाराज का चित्र विराजमान किया। जिन समाजजनों के घरों में धर्मगुरू का चित्र नहीं होने से उन्होंने मोबाईल पर इंटरनेट पर गूगल से सेनजी का महाराज का चित्र निकालकर मोबाईल के माध्यम से धर्मगुरू की पूजन-आरती कर उन्हें नैवेद्य आदि लगाया। बाद सभी को प्रसादी के रूप के रूप में यह वितरण किया।

सेनजी महाराज की पूजन-आरती कर लगाया नैवेद्य।

घरों पर की रोशनी

समाजजनों ने इस दिन संध्या को अपने घरों पर रोशनी करते हुए घरों के दरवाजे और बालकनी पर 5-5 एवं 11-11 दीपक प्रज्जवलित करते हुए सेनजी महाराज से प्रार्थना की कि आज देश जिन विषम पकरस्थितियों से गुजर रहा है। देष में कोरोना वायरस जैसी महामारी तेजी से फैल रहीं है, उससे जल्द ही देषवासियों का निजात मिले। देष में सुख और शांति बनी रहे। ज्ञातव्य रहे है कि 19 अप्रेल को प्रषासन के निर्देष पर ही समाजजनों ने इस दिन निकाले जाने वाली शोभायात्रा, महाकालिका माता मंदिर पर की जाने वाली महाआरती और महाप्रसादी के कार्यक्रम को पूरी तरह निरस्त किया।

पुलिस विभाग की सख्ती से दिखा लॉक डाउन का असर

नहीं दिखी बैंको के बाहर ग्रामीणो की भीड़

माही की गूंज, झाबुआ। नगर में लॉक डाउन के तहत सोमवार को बैंकों के बाहर दिखी भीड के कारण नगर में एक अलग सा वातावरण होने के साथ साथ लोगो में डर का माहौल निर्मित हुआ था। वही कई लोगो ने इसका विरोध भी किया था कि इतनी संख्या में ग्रामीणो को नगर में प्रवेश आखिर क्यो दिया गया जबकि आसपास के क्षेत्रो में ग्रमीण मजदूर के लिये अन्य राज्य गुजरात एवं राजस्थान के साथ महाराष्ट्र भी जाते है। जहा पर कोरोना वायरस का प्रभाव तेजी से बढ रहा हैं।

मंगलवार को पुलिस विभाग की टीम ओर थाना प्रभारी सुरेन्द्र सिंह द्वारा मंगलवार को पूर्णतः सख्ती से पालन करवाकर ग्रामीणो की किसी भी बैंको में भीड नही होने दी। वही लॉक डाउन का सख्ती से पालन करवाकर सोशल डिस्टेसिंग का पालन भी करवाया गया। वही नगर में हर चौराहा पर पुलिस विभाग के जवानो के द्वारा लॉक डाउन का सख्ती से भी पालन करवाया गया।

जिला सीईओ ने की ग्राम पंचायत में सचिव की नियुक्ति

माही की गूंज, बामनिया। लम्बे समय से ग्राम पंचायत में रिक्त पड़े सचिव की नियुक्ति के आदेश जिला सीइओ संदीप शर्मा ने जारी किये हैं। जिसके अनुसार मोईचारणी के सचिव लक्ष्मण मुनिया को बामियान पंचायत सचिव का अतिरिक्त प्रभाव दिया है। ग्राम पंचायत बामनिया लंबे समय से सहायक सचिव के भरोसे थी और आवश्यक कार्य सही शासकीय योजनाओं का लाभ आम जनता को नहीं मिल पा रहा था और जनप्रतिनिधियों द्वारा भी लगातार सचिव को पदस्थ करने की मांग की जा रही थी। जिसके बाद जिला सीईओ द्वारा लक्ष्मण मुनिया को पदस्थ करने के आदेश जारी किया हैं।

सब इंजीनियरिंग को भी हटाया

बामनिया सेक्टर उपयंत्री नीरज पांचाल को कार्य में लापरवाही करने चलते बामनिया सेक्टर से हटा कर झाबुआ अटैच कर दिया है। साथ ही सारंगी सेक्टर के उपयंत्री राकेश पटेरिया को बामनिया सेक्टर का अतिरिक्त प्रभार दिया है। जिला सीईओ संदीप शर्मा ने बताया कि जल्द कार्य में लापरवाही करने वाले सचिव, सहायक सचिव और उपयंत्री पर कार्यवाही की जाएगी।

ट्रेन की चपेट में आने से बालक की मौत

माही की गूंज, बामनिया।

दिल्ली-मुंबई रेलवे मुख्य मार्ग पर बामनिया अमरगढ़ रेलवे स्टेशन के बीच समीपस्थ गांव मुल्थानिया रेलवे फाटक पर 4 वर्षीय मासूम करण पिता कैलाश बिलवाल की मालगाड़ी की टक्कर से मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस से प्राप्त जानकारी अनुसार मासूम बालक का मकान रेल पटरी से कुछ दूरी पर ही है। बालक खेलते खेलते पटरी पर आ गया और अचानक मालगाड़ी आने से उसकी टक्कर से मौके पर ही मौत हो गई। रेलवे स्टेशन मास्टर द्वारा बामनिया चौकी प्रभारी को सूचना दी गई। मौके पर बामनिया चौकी प्रभारी जीएस मावी, प्रधान आरक्षक सीपी सिंह एवं आरक्षक रवि पहुंचे। बालक के शव को बामनिया स्वास्थ्य केंद्र लाया गया। जहां पीएम के पश्चात बालक का शव परिजनों को सुपुर्द कर दिया गया। मासूम की दर्दनाक मौत से परिवार और गांव में मातम छा गया है।

राशन दुकान पर हो रहा सोशल डिस्टेंसिंग का पालन

माही की गूंज, जामली। कोरोना संक्रमण को देखते हुए पूरे देश में लोक डाउन है। ग्रामीण अंचल में भी इसका पालन देखने को मिल रहा है। कई लोग मास्क और दूर-दूर खड़ा होकर सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए देखे जा रहे है। उचित मूल्य की दुकान पर अनाज का वितरण ग्राम पंचायत जामली की उचित मूल्य की दुकान पर सेल्समैन महेंद्र सिंह राठौर द्वारा ग्रामीणों को अनाज वितरण हेतु एक एक मीटर की दूरी के लिए गोल घेरे बनाए गए। जिसका पालन अनाज लेने आए ग्रामीण बे खूबी पालन करते दिखाई दे रहे हैं। वहीं सेल्समैन महेंद्र सिंह राठौर द्वारा बताया गया कि उनके द्वारा दो उचित मूल्य की दुकानों पर जामली एवम् बनी में अनाज का वितरण किया जाता है वहां पर भी इसी तरह लोगो को पालन करवाया जा रहा है।

कुए में गिरने से दो मासूमों की मौत

माही की गूंज,पेटलावद। थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम मोइवागेली निवासी नरसिंह निनामा व उसकी पत्नी रूपा निनामा मजदूरी करने बदनावर क्षेत्र के कंकराज गांव गए थे। लेकिन लॉकडाउन के चलते उनके माता-पिता दोनों काफी दिनों से कंकराज गांव में ही फंसे हुए हैं। इधर उनके दोनों छोटे-छोटे बच्चों की कुएं में गिरने से तड़प-तड़प कर मौत हो गई। बताया जा रहा है कि उनके माता-पिता ने दोनों बच्चों को उनके दादा-दादी के पास छोड़कर मजदूरी के लिए गए हुए थे। लॉक डाउन के चलते वह वहां ही फंसे रह गए और इधर दादा दादी के पास रह रहे दोनों बच्चे विनोद व अभिषेक खेलते खेलते कुएं के समीप चले गए और दोनों कुएं में गिर गए। परिजनों को पता चलता इतने दोनों बच्चे दम तोड़ चुके थे। भगवान ने इस परिवार पर दोहरी मार दी है। फिलहाल दोनों बच्चों को कुएं से निकाल लिया गया हैं। उनके मां बाप को सूचना दी गई है।

वरिष्ठ समाजसेवी बसेर का निधन

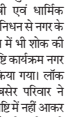

माही की गूंज, सारंगी। स्व. जयंतीलाल बसेर, अखिलेश बसेर, पोपटलाल बसेर, बाबू बसेर के पिता श्री शंभू लाल जी बसेर (94 वर्ष) का निधन हो गया है। वह कई दिनों से बीमार चल रहे थे। बसेर को नगर व ग्रामीण क्षेत्र में काका जी के नाम से पुकारा जाता था। वे समाजसेवी एवं धार्मिक प्रवृत्ति के थे। उनके निधन से नगर के अलावा ग्रामीण क्षेत्र में भी शोक की लहर छा गई। अंत्येष्टि कार्यक्रम नगर के मुक्तिधाम पर किया गया। लॉक डाउन के चलते बसेर परिवार ने समाजजनो से अंत्येष्टि में नहीं आकर घर से श्रद्धांजलि देने की अपील की है। उनकी पुत्री समेत कई करीबी रिश्तेदार लॉक डाउन की वजह से अंतिम दर्शन हेतु नहीं पहुंच सके।

सहकारी संस्था पर राशन का निशुल्क वितरण

माही की गूंज, थांदला। वार्ड 11 से 15 के 820 खाद्यान्न पात्रता पर्ची वाले हितग्राही परिवार के साथ 126 सत्यापित बीपीएल परिवार को विपणन सहकारी संस्था थांदला द्वारा प्रधानमंत्री खाद्यान्न योजनांतर्गत 5 किलो चावल प्रति सदस्य निशुल्क वितरित किया गया। संस्था प्रबन्धक बसंतीलाल पाटीदार ने बताया कि केंद्र सरकार की योजनांतर्गत सभी पात्र हितग्राही परिवार को शारीरिक दूरी का पालन कराते हुए राशन दिया जा रहा है। उन्होंने बताया कि इसके पूर्व प्रदेश सरकार की योजनांतर्गत पात्र सभी परिवारों को तीन-तीन माह का राशन पहले ही वितरित किया जा चुका है। मुख्यमंत्री किसान उपार्जन योजनांतर्गत 15 अप्रैल से जिले के 20 केंद्रों पर पंजीकृत किसानों की गेहूं-चना फसल का क्रय किया जा रहा है। संस्था प्रबन्धक बसंतीलाल पाटीदार ने बताया कि एसएमएस द्वारा 15 -15 किसानों को बुलाया जा रहा है। फिलहाल केवल दो किसान ही अपनी फसल विक्रय के लिये आये हैं। 150 मीट्रिक टन खाद का अग्रिम भंडारण भी हो गया है, जो किसानों के लिए उपलब्ध है।

लॉकडाउन को लेकर पुलिस ने निकाला फ्लैग मार्च

माही की गूंज, पेटलावद।

लोगों को 20 अप्रैल को निश्चित समय के लिए छूट मिलने की उम्मीद पर पानी फिर गया और लॉक डाउन को 03 मई तक जारी कर दिया गया। जिला आपदा प्रबन्धन समिति की बैठक में कलेक्टर प्रबल सिपाह द्वारा लॉकडाउन 2.0 को लेकर कई दिशा निर्देश जारी किए है। लोगों को इस बात का यकीन था कि जिले में पॉजिटिव मरीज नहीं मिलने से जिले में लॉकडाउन हट जाएगा, किन्तु प्रशासन ने साफ कर दिया है कि 3 मई तक जिले में लॉकडाउन यथावत रहेगा। गाइडलाइन के मुताबिक ही कार्य किये जायेंगे। कलेक्टर के आदेश के बाद पेटलावद में पुलिस ने फ्लैग मार्च निकाला। लोगों को समझाइश दी गई कि आप किसी अफवाह पर ध्यान न दे और अपने घरों में ही रहे और लॉकडाउन का पालन करें। पेटलावद पुलिस एसडीपीओ बबिता बामनिया एवं थाना प्रभारी संजय रावत के नेतृत्व में पेटलावद नगर में फ्लैग मार्च निकाला गया है। इस दौरान एसआई कमल मिंदल सहित कई पुलिसकर्मी मौजूद रहे। लॉकडाउन के दौरान बिगड़ती व्यवस्था को देखते हुए पुलिस की ओर से सख्ती की जाएगी। खास कर बेवजह घूमने वाले लोगों पर पुलिस की ओर से कड़ा एक्शन लिया जाएगा।

घरों में रहने की दी समझाइश

माही की गूंज, मेघनगर। भूपेंद्र जैन

कोरोना वायरस संक्रमण को लेकर जारी लाक डाउन के चलते 20 अप्रैल को प्रतिष्ठान खोलने को लेकर व्यापारियों के मन में संशय के चलते प्रशासन ने पूरे नगर में फ्लैग मार्च किया। साथ ही लॉक डाउन जारी रहने की सूचना नगर में जगह-जगह लाऊड स्पीकर के माध्यम से तहसीलदार शक्ति सिंह चौहान ने दी। प्रशासन ने सभी नगरवासियों की सराहना की और लोगों को घरों में ही रहने एवं कलेक्टर के अगले आदेश आने तक लॉकडाउन के नियमों का पालन करने की हिदायत दी गई। नगरवासियों ने फ्लैग मार्च का जगह-जगह अपने घरों के ऊपर से थाली बजाकर, ताली बजाकर, पुष्प वर्षा कर कर सभी कर्म वीरों का स्वागत किया गया। नगर वासियों का कहना था हमारा सौभाग्य है कि हमें ऐसे प्रशासक मिले इसी से हमारा क्षेत्र अभी तक कोरोना मुक्त बना हुआ है। हम भी ऐसे ही लॉकडाउन का पालन कर प्रशासन का भरपूर सहयोग करेंगे। उक्त फ्लैग मार्च में अनुविभागीय अधिकारी पराग जैन, तहसीलदार शक्ति सिंह, नायब तहसीलदार अजय चौहान, सीएमओ विकास डावर, थाना प्रभारी कौशल्या चौहान एवं समस्त स्टाफउपस्थित रहा।

महाराष्ट्र में भी सियासी ड्रामा शुरू

मुंबई, एजेंसी। महाराष्ट्र में भी कोरोना वायरस की आड़ में सियासी संघर्ष शुरू हो गया है। मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे यदि 6 माह के अंदर विधान परिषद के सदस्य नहीं बने, तो उन्हें मुख्यमंत्री पद छोड़ना पड़ सकता है। मंत्रिमंडल ने मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे को राज्यपाल के कोटे से विधान परिषद का सदस्य बनाने का प्रस्ताव राज्यपाल को भेजा है। किंतु यह प्रस्ताव भी राजभवन में अटका हुआ है। राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी ने अभी इस मामले में कोई कार्यवाही नहीं की है। उद्धव ठाकरे ने 28 नवंबर को मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी। उसके अनुसार अगले डेढ़ महीने में विधान परिषद अथवा विधायक का चुनाव जीतना जरूरी है। चुनाव आयोग यदि विधान परिषद के चुनाव की अधिसूचना जारी कर देता है, तो वह विधान परिषद के सदस्य बन सकते हैं। राज्यपाल यदि उन्हें मनोनीत कर देते हैं,तो भी वह विधान परिषद के सदस्य बन सकते हैं। मुख्यमंत्री किसी विधायक से इस्तीफा दिलाकर स्वयं उप चुनाव भी लड़ सकते थे। लेकिन चुनाव आयोग कोई भी चुनाव, कोरोना वायरस के संक्रमण को देखते हुए नहीं करा रहा है। कई राज्यों के राज्यसभा के चुनाव का मतदान भी चुनाव आयोग ने स्थगित कर दिया था। उसकी नई तारीख घोषित नहीं की है। जिसके कारण महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे बने रहेंगे, या उनको हटाने के लिए कोई सियासी चाल पर्दे के पीछे से चली जा रही है। इसको लेकर महाराष्ट्र की राजनीतिक में हलचल तेज हो गई है। हाल ही में दो सन्यासियों को भीड़ द्वारा महाराष्ट्र में मारने की जो घटना हुई है। उसके बाद भाजपा ने उद्धव ठाकरे के ऊपर हमले तेज कर दिए हैं। जिसके कारण यह माना जा रहा है, कि महाराष्ट्र में भी भारतीय जनता पार्टी ने उद्धव ठाकरे को हटाने का नया अभियान छेड़ दिया है।

डॉक्टरों की सुरक्षा में कोई कसर नहीं छोड़ेगी मोदी सरकारः शाह

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कोरोना महामारी से लड़ रहे डॉक्टरों पर हमलों की घटनाओं पर चिंता व्यक्त करते हुए बुधवार को डॉक्टरों को आश्वस्त किया कि मोदी सरकार उनकी सुरक्षा तथा कल्याण की दिशा में कोई कसर नहीं छोड़ेगी।

केंद्रीय स्वास्थ्य और कल्याण मंत्री हर्षवर्द्धन के साथ बुधवार को वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से डॉक्टरों और भारतीय चिकित्सा संघ के प्रतिनिधियों से बातचीत में शाह ने कहा कि कार्य स्थल पर डॉक्टरों की सुरक्षा तथा सम्मान के साथ किसी तरह का समझौता नहीं किया जा सकता ।

अपनी जान की परवाह किये बिना कोरोना महामारी के उपचार में जुटे डॉक्टरों पर देश भर में हो रहे हमलों के मद्देनजर चिकित्सा संघ और डॉक्टरों ने आज शाम सांकेतिक विरोध का आहवान किया था। इसे देखते हुए शाह ने आज डॉक्टरों से बात की।

उन्होंने कहा कि डॉक्टर संकट की इस घड़ी में असाधारण कार्य कर रहे हैं। इस स्थिति में वह हर भारतीय से अनुरोध करते हैं कि कोरोना के खिलाफइस जंग में वे डाक्टरों का सहयोग करें। डाक्टरों के योगदान की सराहना करते हुए उन्होंने उम्मीद जतायी कि वे इस महामारी के खिलाफपूरी प्रतिबद्धता के साथ काम करते रहेंगे। लोगों को सुरक्षित रखने के लिए डाक्टरों द्वारा किये जा रहे बलिदान की भी उन्होंने सराहना की। चिकित्सक समुदाय की सुरक्षा से संबंधित सभी चिंताओं को दूर करते हुए उन्होंने आश्वस्त किया कि मोदी सरकार उनके कल्याण और सुरक्षा की दिशा में कोई कसर नहीं छोड़ेगी। शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी डाक्टरों की चिंताओं से अवगत हैं और उनकी समस्याओं पर खुद नजर रख रहे हैं। डाक्टरों पर हमले की घटना दोबारा न हो इसके लिए सभी संभव कदम उठाये जायेंगे। गृह मंत्री ने कहा कि डाक्टरों को काम करने के लिए अनुकूल माहौल उपलब्ध कराना हम सब की सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि वे डाक्टरों से अपील करते हैं कि वे अपने सांकेतिक विरोध के निर्णय पर एक बार फिर विचार करें क्योंकि यह राष्ट्रीय हित में नहीं है। बैठक में केन्द्रीय स्वास्थ्य सचिव , गृह सचिव, वरिष्ठ चिकित्सकों और नीति आयोग के अधिकारियों ने भी हिस्सा लिया।

प्रभु की शैतानियां आई सामने, एक-एक हजार रूपए की जगह दिए पांच-पांच सौ रूपए

शिकायत होने पर की सांठगांठ

माही की गूंज, खवासा।

'हमें तो अपनों ने लूटा गैरों में कहां दम था, हमारी कश्ती डूबी जहां पानी कम था।' जी हां ! यह बात कियोस्क संचालक प्रभु मैडा ने चरितार्थ की। कोरोना रूपी संक्रमण के दलदल से बचने के लिए शासन-प्रशासन अथक प्रयास कर रहे हैं और जिले को पूर्णतः लॉकडाउन दूसरे चरण में भी कर दिया गया है। इस विकट स्थिति में मजदूरों को मजदूरी भी नहीं मिल पा रही है और सौ-सौ रुपए के लिए भी आर्थिक रूप से मोहताज होना पड़ रहा है।

कुछ गरीब परिवार ऐसे भी हैं जो इस विकट परेशानी में दिन में एक टाइम भोजन कर अपना गुजारा कर रहे हैं। पर यह विकट स्थिति वही समझ सकता है, जो अपने घर व परिवार का हो। शासन भले ही थोड़ी राशि व खाद्यान्न देकर इस स्थिति से निपटने का प्रयास कर रही है। परंतु अपने घर व परिवार के ही होकर ऐसी विकट स्थिति में अपनो को सेंध लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। ऐसी बात को सिद्ध कर रहा है मध्य प्रदेश ग्रामीण बैंक का कियोस्क संचालक प्रभु। इसकाका नाम तो प्रभु है, परंतु काम शैतानियत का कर अपने ही परिवार एवं समाज को इस बुरी स्थिति में भी, उनकी परेशानियों को समझने की बजाय खुद ही सेंध लगाकर उनकी कश्ती को डूबाने का प्रयास कर रहा है। गूंज की पहल से ही कियोस्क संचालक गांव-गांव व पंचायत स्तर पर जाकर राशि आहरण क्षेत्र में कर रहे हैं, परंतु प्रभु मैडा राशि आहरण में अपनी शैतानियत दिखाकर एक हजार रुपए आहरण कर पांच सौ रुपए ही हितग्राही को दे रहा है। तो वहीं अगर कोई खाते में राशि चेक करवाने जा रहा है, तो भी उसकी राशि अकाउंट से आहरण कर अपनी जेब में रखने का मामला क्षेत्र के रूखमणीपाड़ा व चरपोटीपाडा का सामने आया है।

यहां वृद्ध भूंडी मोतीलाल कटारा अपने खाते में राशि चेक करवाने 14 अप्रैल को गई। लेकिन खाता चेक कराने में ही 13 सौ रुपए की राशि प्रभु नाम रूपी शैतान ने आहरण कर अपने जेब में रख ली। जब भूंडी बामनिया में राशि आहरण करवाने गई तब पता चला 14 अप्रैल को 13 सौ रुपए उसके खाते से आहरण हो गए। वहीं कुछ हितग्राहियों के एक-एक हजार रूपए आहरण किए, परंतु हितग्राहियों को पांच-पांच सौ रुपए ही दिए गए। मध्य प्रदेश ग्रामीण बैंक के ही कियोस्क संचालक पिंटू सिंगाड मकोडिया व बापूसिंह नाथु कटारा भैरूगढ़ के विरुद्ध भी इस प्रकार का कृत्य करने की शिकायत की गई। शिकायत के पश्चात कांग्रेस में राजनीतिक रसूख रखने वाला रेत माफिया नाथू कटारा अपने पुत्र बापूसिंह व प्रभु को बचाने हेतु रात में प्रभु मेडा को साथ लेकर गया और गांव में जिन-जिन हितग्राहियों की राशि आहरण कर चोरी की गई। राशि को राजनीतिक दबाव व समझाइश के साथ, शिकायत वापसी लेने की शर्त व सांठ-गांठ के साथ वापस दी गई।

पीडित महिला जिनके खाते से राशि आहरण कर ली पर पैसा नही दिया।

जिसके पश्चात प्रभारी तहसीलदार टीम के साथ जांच करने पहुंची तो शिकायतकर्ताओं ने कह दिया कि, जो पैसे कियोस्क संचालक ने हमको नहीं दिए थे, सुबह आकर दे दिए हैं। हमारे पैसे आ गए, इसलिए हम कोई कार्यवाही करवाना नहीं चाहते हैं। प्रभारी तहसीलदार ललिता गडरिया ने बताया कि मौके पर शिकायत मिलने पर गए थे। जहां शिकायत-कर्ताओं को सुबह पैसे मिल गए। जिसके कारण उन्होंने कार्रवाई करने से मना कर दिया। बताते है प्रभारी तहसीलदार, मध्य प्रदेश ग्रामीण बैंक शाखा खवासा में मैनेजर को जाकर भी कहा कि उक्त शिकायतें आ रही है। तत्काल कियोस्क संचालकों के विरुद्ध कार्यवाही की जाए, इस संबंध में आदेश दिए है।

अपनो को ही लूटने वाले ने अपनी कारस्तानियों को छुपाने के लिए गूंज को दिया प्रलोभन

वहीं दूसरी ओर क्षेत्र में आम चर्चा चल रही है कि कांग्रेस का रसुखदार नाथू कटारा ने कियोस्क संचालक प्रभु एवं अपने पुत्र को बचाने के लिए अपने कियोस्क सेंटर से राशि आहरण करते समय रूपयों की चोरी कर 420 की। उनमें से जिन-जिन से सांठगांठ हुई उसी के पास प्रभारी तहसीलदार को जांच के लिए भेजा। वहीं उपरोक्त मामले में जब गूंज कार्यालय से बैक मैनेजर से जानकारी लेना चाही तो मोबाईल में नम्बर देख कर ही मैनेजर यह जान गया की उनके संरक्षण में कार्य कर रहे कियोस्क संचालक की कारस्तानियों की जानकारी के लिए फोन लगाया होगा। जिसका कोई जवाब नहीं होने के कारण फोन अटेन्ड नही किया। पर गूंज प्रतिनिधि का फोन आने की जानकारी गरीबों के रूपए खाने वाले उन रूपए चोर को फोन कर मैनेजर ने सूचना दे दी कि माही की गूंज कार्यालय से जानकारी हेतु फोन आया था, परन्तु मैंने फोन नहीं उठाया। जिसके बाद 420 कियोस्क संचालक प्रभु ने गूंज टीम के एक प्रतिनिधि को फोन लगाकर प्रलोभन देकर समाचार रूकवाने का प्रयास किया। जब बात यहां भी नही बनी तो रात की सवा नौ बजे 7987875389 से गूंज कार्यालय में फोन लगाया और कहने लगा 5-5 सौ रूपए वाले मामले को तो निपटा दिया है, उनके बयान तो पक्ष में हो जाएगें।

खाली 13 सौ रूपए वाला मामला अभी नहीं जमा है, वह भी जम जाएगा। पर आप के पास मामला आया है तो आप देख लेना, जो भी होगा देख लेंगे, यह कह कर प्रलोभन देकर गूंज में समाचार को रूकवाने का प्रयास किया। लेकिन इन महाशय को यह नहीं मालूम की माही की गूंज की इस कलम को खरीदने के लिए किसी के पास इतना धन ही नहीं है कि वह इसे खरीद सके। हमारी कलम इनके जैसे भ्रष्ट, 420 व माफियाओं के विरूद्ध बेबाकी के साथ सच के लिए चलती रही है और आगे भी चलती रहेगी। गूंज इन जैसे भ्रष्टों को यह कहना चाहती है कि, माही की गूंज को खरीदने के लिए कभी दरवाजा नहीं खटखटाए, आप जैसों की काली कमाई इन भ्रष्ट अधिकारियों एवं भ्रष्ट नेताओं को खरीद कर आमजन को गुमराह कर गलत को सही करवा सकते है। परन्तु गूंज की यह कलम अपने कर्तव्यों से कभी विमुख नहीं होगी।

पैसे निकालने में ग्रामीण हो रहे ठगी के शिकार

माही की गूंज, पेटलावद। राकेश गेहलोत

कोरोना महामारी के चलते लोगों को मुश्किल समय में अपना समय घरों में लॉकडाउन हो कर निकलना पड़ रहा है। शासन-प्रशासन और समाजसेवी अपने-अपने स्तर से इस विकट परिस्थिति में गरीब और जरूरत मंद तक पहुंचने का प्रयास कर सहयोग कर रहे हैं, लेकिन इस मुश्किल समय को कुछ लोगों ने अपनी बड़ी कमाई का जरिया बना लिया है। किराना के कुछ जरूरी सामान सहित बीड़ी ,सिगरेट, गुटखा समेत कई समान के दुगने-तिगुने भाव पर बेच कर कालाबाजारी कर रहे हैं। इसी प्रकार इस मुश्किल समय में सरकार द्वारा गरीबों के खाते में डाले गए पांच सौ रुपए, उज्ज्वला योजना में गैस टंकी की राशि सहित कृषक सम्मान निधि की राशि खाते में जमा की गई है। जिसको निकालने के लिए ग्रामीण बड़ी संख्या में बैंक, कियोस्क सहित अनाधिकृत रूप से आधार कार्ड के माध्यम से खातों से पैसा निकालने वालों के पास जा रहे हैं। कई लोग गांव में जाकर भी ग्रामीणों को राशि का भुगतान कर रहे हैं।

मिली जानकारी के अनुसार भुगतान करने वाली इन एजेंसियों द्वारा ग्रामीणों की राशि खाते से निकली जा रही है या खाते में आई राशि जांच करने के दौरान अधिक राशि का आहरण कर ग्रामीणों को कम राशि का भुगतान किया जा रहा है। बैंकों द्वारा अधिकृत कियोस्क सेंटर पर राशि निकालने वालों की जानकारी रखी जा रही है, लेकिन अनाधिकृत सेंटरों द्वारा निकली जा रही राशि का न तो हिसाब रखा जा रहा है न ही भुगतान की रशिद दी जा रही हैं। ग्रामीणों को इसकी जानकारी अपनी बैंक या अन्य कियोस्क सेंटर पर जांच करने पर खाते से भुगतान से अधिक निकली जाने की जानकारी मिल रही हैं। जिससे ग्रामीण ठगी का शिकार हो रहे हैं। जागरूक ग्रामीण ऐसे लोगों से विवाद कर अपना भुगतान वापस ले रहे हैं। वही गलत तरीके से भुगतान लेने वाले विवाद की स्थिति को देख भुगतान कर रहे हैं, लेकिन ग्रामीण इलाकों में जा कर भुगतान करने वालों की जानकारी ग्रामीणों को नहीं है। कई ग्रामीणों को तो इस बात की जानकारी तक नहीं है कि उनके खाते में से अधिक राशि निकाली गई है।

थांदला विकास खंड में इस तरह के मामले जग जाहिर हो चुके हैं, लेकिन पेटलावद विकास खंड में ऐसे मामले खुल कर सामने नहीं आए है। फिर भी करडावद, पेटलावद और रायपुरिया क्षेत्र से इस प्रकार की ठगी होने की जानकारी भी मिल रही है। इस ठगी से ग्रामीणों को बचाने के लिए बैंक को अनाधिकृत रूप से ऑनलाइन आईडी के माध्यम से भुगतान करने वालों को बंद करना होगा। वहीं ग्रामीणों को किए जा रहे भुगतान की रशीद देना आवश्यक करना होगी ताकि खाताधारकों को खाते से निकली गई राशि और भुगतान की राशि की सही जानकारी मिल सके।

राजस्थान के बीसी संचालक भी बैंक खाताधारक को लगा रहे सेंध

माही की गूंज, खवासा।

राजस्थान के बीसी सेन्टर से ठगे गए पीडित ग्रामीण गूंज को अपनी व्यथा बताते हुए

पूरा देश इस समय कोरोना वायरस के संक्रमण से जूझ रहा है। यह समय लोगों की मदद करने का है परंतु कुछ लोग इस महामारी के चलते अपना फायदा ढूंढ रहे हैं। कियोस्क सेंटर के संचालक, हितग्राहियों के खातों में से पैसे आहरण कर अपनी ही जेब में डाल रहे हैं। जब खाताधारक अपने रूपए निकालने के लिए कियोस्क सेंटर जाता है तो, कियोस्क संचालक उसे यह कहकर रवाना कर देता है कि अभी मेरे पास पैसे नहीं है बाद में निकाल लेना। परंतु वह कियोस्क संचालक खाताधारक के फिंगर प्रिंट लेकर खाते से रूपये निकाल कर अपने ही पास रख लेता है।

ऐसा मामला क्षेत्र में तो आया ही है, लेकिन क्षेत्र की सीमा से सटे राजस्थान के बांसवाड़ा जिले के बड़ी सरवा के बीओबी कियोस्क सेंटर जिसे राजस्थान में ब्लॉक कोर्डिनेटर (बीसी) सेंटर कहा जाता है। उक्त सेंटर पर क्षेत्र के गरीब एवं पीड़ित परिवारों की लाचारी का फायदा उठाकर राशि निकालकर बिना पैसे दिए रवाना कर रहे है। परवाड़ा के कुछ लोग गूंज प्रतिनिधि को आकर बताते हैं कि, हम पैसे निकालने हेतु कैलाश बलवंतसिंह चौहान के कियोस्क सेंटर (बीसी), बडी सरवा पर गए थे। वहां पर बीसी संचालक ने हमारे खाता नंबर और उंगलियों के निशान लिए और कहा कि, अभी मेरे पास पैसे नहीं है, तुम बाद में आकर ले जाना, पैसे तो तुम्हारे खाते में है। बडी सरवा में पैसे नहीं मिलने पर हम परवाडा कियोस्क सेंटर से पैसा निकालने गए तो उसने कहा, तुम्हारे खाते से पैसे निकल गए है। परवाडा निवासी कबुडी मुणिया के खाते से 500 रुपए, भीलू मुणिया के खाते से 2 हजार, लीला मुणिया के खाते से 1500 रुपए, गौडी मुणिया के खाते से 600 रूपए आदि कई लोगों के खाता चौक कर पैसा नहीं दिया। परवाडा में हम सब गए तो पता चला कि हमारे साथ बडी सरवा के कैलाश चौहान ने ठगी कर ली है। गांव के चौकीदार विरेश भुरिया सहित कई लोगों ने कहा कि, अगर कैलाश चौहान ने हमारे रूपए जो धोखाधडी से निकाल लिए है। वह अगर नहीं देगा तो, राजस्थान सीमा से मध्यप्रदेश सीमा में कभी हम घुसने नहीं देंगे।

देश में कोरोना संक्रमितों की संख्या 20 हजार के करीब, 640 की मौत

नई दिल्ली, एजेंसी। देश में पिछले 24 घंटों के दौरान कोरोना वायरस (कोविड-19) संक्रमण के 1336 नये मामले दर्ज किए जाने के साथ ही संक्रमितों की संख्या 20 हजार के करीब पहुंच गई तथा इस दौरान इस संक्रमण के कारण 50 लोगों की मौत होने से मृतकों का आंकड़ा 640 हो गया है।

देश के विभिन्न राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों में कोरोना के अब तक कुल 19,984 मामलों की पुष्टि हुई है, जिनमें 77 विदेशी मरीज शामिल हैं। कोरोना से संक्रमित लोगों के स्वस्थ होने की रफ्तार भी तेज हुई है और पिछले 24 घंटों में कोरोना से संक्रमित 618 लोगों के स्वस्थ होने के साथ ऐसे लोगों की संख्या 3,870 पर पहुंच गई है।

स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से बुधवार सुबह जारी किए गए आंकड़ों के मुताबिक कोरोना वायरस का प्रकोप देश के 33 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में फैल चुका है। कोरोना से सबसे गंभीर रूप से प्रभावित महाराष्ट्र में संक्रमितों की संख्या में एक दिन में 552 की वृद्धि दर्ज की गयी और कुल आंकड़े 5,218 पर पहुंच गये। पिछले 24 घंटों के दौरान राज्य में 19 और लोगों की मौत के बाद इस महामारी से मरने वालों की संख्या बढ़कर 251 हो गयी है। राज्य में 722 संक्रमित मरीज ठीक हो चुके हैं।

गुजरात पिछले 24 घंटे के दौरान 239 नये मामले सामने आने के साथ संक्रमितों की संख्या के मामले में दूसरे स्थान पर पहुंच गया है। गुजरात में संक्रमितों की कुल संख्या में 2,178 हो गयी है तथा 19 और लोगों की मौत के बाद मृतकों की संख्या 90 पर पहुंच गयी है।

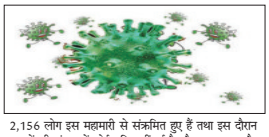

इसके बाद देश की राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली है जहां पिछले 24 घंटों में 76 नये मामले दर्ज किये जाने के कारण अब तक कुल 2,156 लोग इस महामारी से संक्रमित हुए हैं तथा इस दौरान मृतकों की संख्या में कोई वृद्धि नहीं हुई है और यह 47 पर है। राजधानी में कुल 611 मरीजों को उपचार के बाद अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है।

वहीं राजस्थान में पिछले 24 घंटों के दौरान 83 नये मामले सामने आये है और इनका आंकड़ा बढ़कर 1,659 हो गया। राज्य में संक्रमण से मरने वालों की संख्या 25 है।

तमिलनाडु में 76 नये संक्रमित सामने आये है और संक्रमित मरीजों की संख्या बढ़कर 1,596 हो गई तथा राज्य में संक्रमण से मरने वालों की संख्या एक बढ़कर 18 हो गयी है। मध्य प्रदेश में पिछले 24 घंटों में संक्रमण के 67 नये मामले सामने आये जिससे संक्रमितों की संख्या 1,552 हो गयी तथा मरने वालों की संख्या दो बढ़कर 76 हो गयी।

देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में संक्रमण के 110 नये मामले सामने आने के बाद कुल संक्रमितों की संख्या 1,294 हो गई है तथा इस दौरान दो लोगों की मौत के बाद मृतकों की संख्या 20 हो गयी है। तेलंगाना में इस दौरान 55 नये मामले सामने आये और संक्रमितों की कुल संख्या 928 हो गयी। राज्य में इस संक्रमण से मरने वालों की संख्या में पिछले 24 घंटों में कोई बदलाव नहीं हुआ है और यह संख्या 23 पर बनी हुई है। केरल में 427 लोग संक्रमित हुए हैं और तीन लोगों की मौत हुई है। दक्षिण भारतीय राज्य आंध्र प्रदेश में 757 और कर्नाटक में 418 लोग संक्रमित हैं तथा इन राज्यों में क्रमशरू 22 और 17 लोगों की मौत हुई है। केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में संक्रमितों की संख्या 380 है और पांच लोगों की मौत हुई है। इसके अलावा पंजाब में 16, पश्चिम बंगाल में 15, हरियाणा और झारखंड में तीन-तीन, बिहार में दो तथा मेघालय, ओडिशा, हिमाचल प्रदेश और असम में एक-एक व्यक्ति की मौत हुई है।

महाराष्ट्र, गुजरात और मध्य प्रदेश में कोरोना से सर्वाधिक मौतें

महाराष्ट्र, गुजरात और मध्य प्रदेश में कोरोना वायरस (कोविड-19) से मरने वालों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है और इन तीन राज्यों में मृतकों की कुल संख्या 417 हो गई है, जो देश में कोरोना वायरस के कारण हुई कुल मौतों का करीब 64 फीसदी है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की ओर से बुधवार सुबह जारी आंकड़ों के अनुसार महाराष्ट्र में पिछले 24 घंटों के दौरान 19 और लोगों की मौत के बाद इस महामारी से मरने वालों की संख्या बढ़कर 251 तथा गुजरात में यह संख्या 19 बढ़कर 90 हो गई। मध्य प्रदेश में दो और लोगों की मौत के बाद यह संख्या 76 पर पहुंच गई है। देश में संक्रमितों की संख्या बढ़कर 19984 हो गयी है तथा इस महामारी के कारण मरने वालों का आंकड़ा 640 तक पहुंच गया है। अब तक 3870 लोगों को स्वस्थ होने के बाद अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है।

कोविड-19 पैकेज के लिए 15,000 करोड़ रुपए मंजूर

नई दिल्ली, एजेंसी। केन्द्र सरकार ने 'भारत कोविड-19 आपात प्रतिक्रिया और स्वास्थ्य प्रणाली तैयारी पैकेज' के लिए 15,000 करोड़ रुपये के निवेश को स्वीकृति दे दी है। केन्द्रीय मंत्रिमंडल की आज हुई बैठक में यह निर्णय लिया गया और इस स्वीकृत धनराशि का तीन चरणों में उपयोग किया जाएगा।

अभी के लिए तत्काल कोविड-19 आपात प्रतिक्रिया (7,774 करोड़ रुपये की धनराशि) का प्रावधान किया गया है। बाकी धनराशि मध्यावधि सहयोग (1-4 वर्ष) के तौर पर मिशन मोड में उपलब्ध कराई जाएगी। पैकेज के मुख्य उद्देश्यों में डायग्नोस्टिक्स और कोविड समर्पित उपचार सुविधाओं का विकास, संक्रमित मरीजों के उपचार के लिए जरूरी चिकित्सा उपकरण और दवाओं की केन्द्रीय खरीद,भविष्य में महामारियों से बचाव और तैयारियों में सहयोग के लिए राष्ट्रीय तथा राज्य स्वास्थ्य प्रणालियों को मजबूती देना और विकसित करना है। इसमें प्रयोगशालाओं की स्थापना और निगरानी गतिविधियां बढ़ाना, जैव सुरक्षा तैयारियां, महामारी अनुसंधान और समुदायों को सक्रिय रूप से जोड़ना तथा जोखिम संचार गतिविधियों के माध्यम से भारत में कोविड-19 के प्रसार को धीमा और सीमित करने के लिए आपात प्रतिक्रिया बढ़ाना शामिल है। इन उपायों और पहलों को स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के तहत ही लागू किया जाएगा।

पहले चरण में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय अन्य संबंधित मंत्रालयों के सहयोग से पहले ही कई कदम उठा चुका है, जो इस प्रकार हैं : पैकेज के अंतर्गत मौजूदा स्वास्थ्य केन्द्रों को कोविड समर्पित अस्पतालों, समर्पित कोविड स्वास्थ्य केन्द्र और समर्पित कोविड देखभाल केन्द्रों के रूप में तैयार करने के लिए राज्य- संघ शासित क्षेत्रों के लिए 3,000 करोड़ रुपये का अतिरिक्त कोष जारी किया जा चुका है। क्वारंटीन, आइसोलेशन, परीक्षण, उपचार, बीमारी की रोकथाम, कीटाणुशोधन, सामाजिक दूरी और निगरानी के लिए विस्तृत दिशा-निर्देश, प्रोटोकॉल और परामर्श जारी किए जा चुके हैं। हॉटस्पॉट की पहचान की जा चुकी है और रोकथाम की रणनीतियों को लागू किया जा रहा है।

डायग्नोस्टिक्स प्रयोगशालाओं का विस्तार किया गया है और प्रतिदिन परीक्षण क्षमता बढ़ाई जा रही है। वास्तव में, राष्ट्रीय टीबी उन्मूलन कार्यक्रम के अंतर्गत मौजूदा बहु-बीमारी परीक्षण प्लेटफॉर्म किया जा रहा है। इस क्रम में कोविड-19 परीक्षण बढ़ाने के लिए 13 लाख डायग्नोस्टिक किट की खरीद का ऑर्डर जारी कर दिया गया है।

सामुदायिक स्वास्थ्य स्वयंसेवक (आशा) सहित सभी स्वास्थ्य कर्मचारियों को 'प्रधानमंत्री गरीब कल्याण पैकेज रू कोविड-19 के मद्देनजर स्वास्थ्य कर्मचारियों के लिए बीमा योजना' के अंतर्गत बीमा सुरक्षा दी गई है। व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (पीपीई), एन 95 मास्क और वेंटिलेटर, परीक्षण किट और उपचार में काम आने वाली दवाओं की केन्द्रीय स्तर पर खरीद की जा रही है।

इस व्यय के अधिकांश हिस्से को आपात प्रतिक्रिया, महामारी अनुसंधान और बहु-क्षेत्रीय राष्ट्रीय संस्थानों को सक्षम बनाकर राष्ट्रीय और राज्य स्वास्थ्य प्रणालियों को मजबूती देने, सामुदायिक जुड़ाव और जोखिम संबंधी संचार एवं क्रियान्वयन, प्रबंधन, क्षमता निर्माण, निगरानी और मूल्यांकन व्यवस्था को सक्षम बनाने में उपयोग किया जाएगा। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय को परिस्थितियों में बदलाव के आधार पर विभिन्न कार्यान्वयन एजेंसियों (राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, केन्द्रीय खरीद, रेलवे, स्वास्थ्य अनुसंधान विभागध् आईसीएमआर, राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केन्द्र) के बीच पैकेज से संबंधित संसाधनों के वितरण के लिए अधिकृत किया गया है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा, संपादक- धर्मेन्द्र पंचाल । मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422